जैनेन्द्र-स्मृति ग्रन्थ-माला—८

सर्वोदय यात्रा

विनोबा

★

सर्वापदामन्तकर निरन्त सर्वोदय-तीर्थमिदं तवैव।
—आचार्य समन्तभद्र

भारत जैन महामण्डल, वर्धा
१९५१

प्रकाशक :
रिषभदास रांका
कार्याध्यक्ष,
भारत जैन महामण्डल, वर्धा

पहला सस्करण ५५००

मूल्य : सवा रुपया

मुद्रक :
जमनालाल जैन
व्यवस्थापक
श्रीकृष्ण प्रि० वर्क्स, वर्धा

प्रकाशक की ओर से

तीसरे सर्वोदय सम्मेलन शिवरामपल्ली (हैदराबाद) में सम्मिलित होने के लिए जाते हुए पू० विनोबाजी ने रास्ते के मुकामों पर जो प्रार्थना-प्रवचन दिए हैं वे सब क्रमशः इस संकलन में दिए गए हैं।

सर्वोदय का आदर्श बहुत प्राचीन है। दो हजार वर्ष पूर्व जैनाचार्य समन्तभद्र ने 'सर्वोदय-तीर्थ' की भावना व्यक्त की थी। उन्होंने कहा था, 'सर्वोदय-तीर्थ सब की समस्त आपदाओं को दूर करनेवाला है।' आज के युग में बापू ने इसे व्यवहार में लाया और विनोबा तो अब उस के यात्री ही बन गए हैं।

महामण्डल की ओर से इन प्रवचनों को प्रकाशित करते हुए हमें विशेष आनन्द हो रहा है। हम पू० विनोबाजी और ग्राम सेवा मण्डल, नालवाडी के विशेष कृतज्ञ हैं, जिनकी कृपासे हमें यह सद्भाग्य प्राप्त हुआ। और जिन मित्रों की मेहनत और तत्परतासे यह संकलन शीघ्र निकाला जा सका, उन्हे भी नहीं भुलाया जा सकता। उनके हम आभारी हैं।

हमें आशा है यह पुस्तक नैतिक विकास, चरित्र निर्माण' तथा देश में सेवा भावना और समभाव बढ़ाने में मददगार साबित होगी।

राजेंद्र-स्मृति ग्रंथमाला का यह आठवां पुष्प है।

वर्धा,
६-६-५१

रिषभदास रांका
कार्याध्यक्ष, भारत जैन महामण्डल

अनुक्रमणिका

प्रास्ताविक

शिवरामपल्ली (हैदराबाद द.) में ता. ८ से ११ अप्रैल '५१ को होने वाले सर्वोदय-सम्मेलन में भाग लेने के लिए विनोबाजी परंधाम (पवनार) से ८ मार्च को सुबह पैदल निकले हैं। सारे देश में इससे आनंद की लहर फैल गयी है और साथ ही प्रेरणा की भी, क्योंकि जिस चीज की आज देश को जरूरत है, और जिसकी साधना के लिये कुछ काल के लिये ही क्यों न हो, परंधाम पर ही स्थिर रहने का तय करके विनोबाजी साम्ययोग के प्रयोग में जुटे हुये थे, वह साधना है—अर्थ की अनर्थकारी, परावलंबी और सुखाभासी बेड़ियो में से आम जनता को छुड़ा कर श्रम की श्रेयस्कारी, स्वावलंबी, सात्विक और सुखदायी जीवन-क्रम की प्रतिष्ठापना। उसको इस यात्रा से खूब चालना मिली है, मिल रही है, मिलने वाली है।

देश की पुकार प्रतिध्वनित हुई

देश के अन्य लोगों के समान ही विनोबाजी के निकट परिचितों के लिए भी यह यात्रा-निर्णय आनंददायी और अनपेक्षित है। खुद विनोबाजी के लिये भी यह अनपेक्षित है और इसीलिए उन्होंने इस निर्णय का वर्णन 'ईश्वर-प्रेरित' ऐसे शब्दों में किया है। ता० ६ मार्च को सर्व-सेवा-संघ की बैठक थी। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी की विनती से सातवें नयी-तालीम-संमेलन के निमित्त से ता० २७ फरवरी से ७ मार्च तक सेवाग्राम में रहना विनोबाजी ने तय किया और इसीलिए-सर्व-सेवा-संघ की ता० ६ मार्च की बैठक भी वहीं रखी गयी। बैठक के सामने शिवरामपल्ली-संमेलन का कार्यक्रम और विषय-सूची वगैरह तय करने का मुख्य कार्य था।

इसी सिलसिले में सर्वोदय-समाज और सर्व-सेवा-संघ में परस्पर संबंध क्या हैं, क्या हों, आदि चर्चा भी छिड़ी, क्योंकि इस बारे में बहुतेरों के खयाल साफ नहीं हैं—यद्यपि अंगुल संमेलन के बाद 'सर्वोदय' मासिक में विनोबाजी की लिखी हुई 'सर्वोदय-समाज और सर्व-सेवा-संघ' नाम की एक टिप्पणी को देखते हुए कोई ग़लतफ़हमी, दुविधा या असमंजसता का कारण नहीं रहना चाहिए। चर्चा के दौरान में एक भाई ने विनोबाजी से पूछा कि आप संमेलन में आने वाले हैं या नहीं? विनोबाजी ने कहा, "आने का विचार नहीं है।" निकट परिचितों के लिए यह उत्तर अनपेक्षित नहीं था, क्योंकि इस बारे में पहले भी बातें हो चुकी थीं। लेकिन प्रश्नकर्त्ता भाई के लिऐ यह उत्तर शायद अनपेक्षित और आज के कुल हालात को देखते हुए अप्रस्तुत भी था। उन्होंने बड़े दर्द के साथ, लेकिन उतनी ही दृढ़ता से और 'एक घाव-दो टूक' शब्दों में कहा कि "सर्वोदय-समाज और संमेलन आपकी ही प्रेरणा का फल है, अभी वह बाल्यावस्था में है। दूर-दूर से सेवक सत्संग के लिए आते हैं एवं खास नेतृत्व न मिलने से निराश-से लौटते हैं। ऐसी हालत में आप न आवें तो कैसे चलेगा? इसके बजाय तो संमेलन बंद कर देना बेहतर होगा।" विनोबाजी के न आने में क्या जिम्मेवारियाँ और दिक्कतें हैं, उनका भी फिर थोड़ा-सा जिक्र हुआ। फिर भी विनोबाजी जानते थे कि उस भाई की कही हुई बात ही हम सबके भी मन में है। क्षण-भर के लिए विनोबाजी स्तब्ध रहे। न मालूम उन्होंने उस क्षण में क्या-क्या विचार किया! किसे मालूम कि जिस "भूत मात्र में हरि भावना" का इन दिनों वे चिंतन, उच्चारण और आचरण तीव्रता से कर रहे हैं, करने को कह रहे हैं, उसी भावना से उन्होंने हम सबकी इच्छा की ओर देखा हो। नहीं आने की बात जितने शब्दों में और जिस तटस्थता से कही थी,

उतने ही शब्दों में और उतनी ही तटस्थता से उन्होंने कहा, "अच्छा, मैं आता हूँ।" जवाब का उच्चारण करने के पहले उन्होंने पूछ लिया कि संमेलन-स्थान यहाँसे कितनी दूर है। जवाब मिला—तीन सौ मील समझ लीजिये। विनोबाजी के आने की बात सुन कर सबको आनंद हुआ, लेकिन शायद ही किसी के खयाल में आया हो कि विनोबाजी संमेलन में पैदल आवेंगे।

अपवाद भी नहीं

बैठक के बाद तुरंत ही आश्रम की प्रार्थना थी। प्रार्थना के अंत में विनोबाजी ने संमेलन में जाने की बात का जिक्र किया और कहा कि "कल सुबह यहाँ से परंधाम जाने का पहले से तय ही है, वहांसे परसों याने ८ तारीख को संमेलन के लिए पैदल निकलूंगा। वाहन का उपयोग न करने का मैंने कोई व्रत नहीं लिया है और अर्थोच्छेद की मेरी कल्पना में, जो कि आज सुबह की प्रार्थना में मैंने कही है, रेल्वे आदि का परित्याग अनिवार्य है ऐसी भी बात नहीं है, फिर भी मैंने पैदल जाने का ही तय किया है। क्योंकि जो विचार पूरा विकसित नहीं हुआ है, जिसका सांगोपांग दर्शन हमें अबतक नहीं हुआ है, उस अविकसित दशा में अपवाद करने की मेरी मनोवृत्ति नहीं है। इसलिए पैदल के बजाय वाहन से जाने के लिए मुझे कायल करने में मित्र लोग अपनी बुद्धि-शक्ति न चला कर, पैदल यात्रा कैसे सुखकर-शुभकर होगी इसका खयाल करें।"

सेवाग्राम-आश्रम का श्रम-जीवन-संकल्प

प्रार्थना के बाद निकटवर्ती लोगों का यही काम रहा कि नक्शे देख कर किस रास्ते से, किन मुकामों से जाना आदि विनोबाजी से तय करें। दूसरे लोग मिलने और एक तरह से बिदा लेने-देने के लिए आते-जाते थे। ता० ७ की सुबह की प्रार्थना में महादेवी ताई ने "जेथे जातों

तेथें तूं माझा सांगाती ''–' जहाँ जाता हूँ वहाँ तू मेरा साथी है।'' यह तुकाराम का अभंग गा कर मानों प्रस्थान का आरंभ कर दिया। प्रार्थना के अंत में बोलते हुए विनोबाजी ने एक तरह से आश्रमवासियों से विदा ली। कहा कि ' आश्रमवासी और अन्य संबंधितों की परसों की बैठक में यह तय हुआ है कि १ जनवरी, १९५२ से आश्रम पैसे में से मुक्त हो जायगा। आश्रमवासियों द्वारा खेती आदि में किये हुए परिश्रम और लोगों से मिलने वाले श्रमदानपर ही आश्रम चलेगा। यह एक शुभ निर्णय है और यही शोभा देता है, क्योंकि बापू के बाद आश्रम यहाँ चलता है, तो वह आखिरी आदर्श के अनुरूप चलाने की कोशिश हो, वरना वह बंद रहे, यह अच्छा है। आश्रम यहाँ न चलता हो तो भी लोगों को इस स्थान से स्फूर्ति तो मिलती ही रहेगी। पैसे के दान पर आश्रम चला कर भी एक तरह की सेवा होगी। लेकिन वैसे देखें तो कौन सेवा नहीं कर रहा है? एक किसान भी सेवा करता है, लेकिन आज जरूरत है लोगों के दिलों में क्रांति करने की। वह बिना परिश्रम के, बिना प्रचलित अर्थ-व्यवस्था को तोड़े नहीं होगी।''

देखि रे मैंने निर्बल के बल राम'

निकलने के नियत समय के कुछ पहले तालीमी संघ का सारा कुटुंब सुबह की प्रार्थना के लिए विनोबा के निवासस्थान के पास आ पहुंचा। विनोबा के साथ सबने खड़े-खड़े प्रार्थना की, 'सुने री मैंने निर्बल के बल राम' यह भजन गाया गया। आखिर में विनोबाजी ने दो शब्द कहे: "आप नयी तालीम का महान् काम कर रहे हैं। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी ने अपने को इसमें खपा दिया है। उन दोनों का प्रेम मुझे हमेशा मिलता रहा है। आपने यहाँ आ कर प्रार्थना कर के मेरी पैदल यात्रा के लिए खूब बल दिया है। अभी तक के सब संतों का अनु-

भव है–'निर्बल के बल राम।' मेरे जीवन का भी यही अनुभव है। हां, मैं लिखने बैठूं तो "सुने री" के बदले लिखूंगा कि 'देखि रे मैंने निर्बल के बल राम।"

आत्मानुभूति का साक्षात्कार

सेवाग्राम से सीधे पवनार जायेंगे ऐसा अंदाज था, लेकिन विनोबा जी ने कहा, मैं बजाज-वाड़ी में किशोरलाल भाई से मिल कर वहां से पवनार आऊंगा। किसीने हिसाब किया, कुल ९ मील चलना पड़ेगा। विनोबाजी ने कहा, हररोज १०-१२ मील चलना ही है न? आज ९ मील से शुरू कर दें। फिर वे महिलाश्रम में लड़कियों से विदा लेते हुए बजाजवाड़ी पहुंचे। किशोरलालभाई आदि से मिल कर गोपुरी हो कर पवनार करीब ११ बजे पहुंचे होंगे। पवनार के ग्रामवासी विशेष संख्या में शाम की प्रार्थना में हाजिर थे। वे विनोबाजी के दो शब्द सुनने को आये थे। आज भी हमेशा के मुताबिक विनोबाजी ने ही प्रार्थना चलायी। प्रार्थना में स्वतः गाये हुए भजनों के द्वारा मानों वे विदा ले रहे थे। ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ आदि के भजनों में से प्यारे भजनों के सिवा "हसतां रमतां प्रगट हरि देखुं रे, मारुं जीव्युं सफळ तंव लेखुं रे, नित्यानंदनो नाथ विहारी रे, ओधा जीवनदोरी अमारी रे," ये चरण खास रूप से उन्होंने गाये। कृष्ण के मथुरा-गमन के बाद गोपी-जन को सांत्वना देने के लिये उद्धव गये थे, उस प्रसंग का यह वचन है। प्रार्थना के बाद जो प्रवचन हुआ वह आगे प्रवचनों में दिया है।

'भरत राम' से विदाई

सुबह की प्रार्थना के बाद यथा-समय यात्रा आरंभ हुई। वैसे, सबसे तो पहले दिन ही विदाई ले ली गयी थी, लेकिन 'भरत-राम' से विदा लिये बिना विनोबाजी परंधाम से कैसे जा सकते थे? और वह विदाई पेशगी में थोड़े ही ली जा सकती है! विनोबाजी अपने कमरे

से निकल कर ' भरत-राम-मंदिर ' में गये । 'भरत-राम-मंदिर' परधाम में प्रवेश करते ही सामने दिखाई देता है । उसका बाहरी आकार प्रचलित मंदिर का-सा नहीं है । एक सादी-सी झोंपड़ी है और उसमें वनवास से आने के बाद रामचंद्रजी की भरत से जो भेंट हुई, उस प्रसंग को अंकित करने वाली मूर्ति रखी हुई है, जो परंधाम के खेत में मिली है और जिसके लिये विनोबाजी को विशेष भाव है । विनोबाजी ने अपने हाथों उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की है । वहाँ जा कर वे भजनादि भी यथा-समय करते हैं । लोगों को इसका आश्चर्य होता है और वे विनोबाजी को पूछते हैं कि "आपके आश्रम में भी मूर्ति है और आप भी मूर्ति-पूजा करते हैं ?" तब विनोबाजी कहते कि "मूर्ति-पूजा का मैं आग्रही नहीं हूँ, लेकिन भगवान खुद होकर मेरे यहाँ आ जाय तो उसे निकाल दूँ, ऐसा अभक्त भी नहीं हूँ।" इस मूर्ति के बारे में ' भगवान् खुद होकर आ जाय, यह अक्षरशः सत्य है । इतना ही नहीं, यहाँ तो भक्त की एक पावन कल्पना पूरी करने के लिये ही वह आया है, ऐसा मुझे लगता है । करीब उन्नीस साल पहले, ८-५-३२ को धूलिया जेल में गीता के बारहवें अध्याय पर प्रवचन देते हुए सगुण और निर्गुण भक्ति समझाने के लिये अनुक्रम से लक्ष्मण और भरत का उदाहरण दे कर आखिर में विनोबाजी ने कहा है कि " ऐसा चित्र यदि कोई निकाले, जिसमें दोनों की मुखाकृति समान हो, किंचित उम्र का फरक, चेहरे पर तपस्या वही और राम कौनसा व भरत कौनसा यह पहचाना नहीं जा सकता, तो वह चित्र बड़ा पावन होगा। " भक्त की यह अभिलाषा पूरी करने के लिये ही मानों १९३७ के बाद जब विनोबाजी परंधाम पर रहने गये और शरीर श्रम के तौर पर कुछ-न-कुछ खोदते थे, तब १९४०-'४१ में एक दिन उनकी कुदाली किसी पत्थर पर टकरायी । यहाँ मूर्तियाँ निकलती हैं, यह खयाल होने से उस पत्थर को हिफाजत से निकाला गया तो पाया गया कि औंधी रखी हुई

'भरत-राम-भेंट' की वह मूर्ति थी ! "धर्म जागो निवृत्तीचा" ('निवृत्ति' का धर्म जागृत रहे) इस ज्ञानदेव के अभंग के द्वारा भरत-राम की विदा माँग कर वे निकले। रास्ते में दादा धर्माधिकारी से नयी तालीम को लेकर काफी बातें होती रहीं।

लक्ष्मीनारायण-देवस्थान (वर्धा) में वर्धावासियों से बिदा लेने को ठहरना था। यह देवस्थान हिन्दुस्थान का शायद सबसे पहला भव्य मंदिर है, जो हरिजनों के लिये खोला गया था। बजाज-कुल की देशभक्ति का वह बाह्य चिह्न है। वर्धा का वह एक दर्शनीय स्थान है। योगिराज भनसाळी को १९४२-४३ की चिमूर-पद-यात्रा में यहीं से बिदा दी गयी थी। वह सारा प्रसंग नजर के सामने आ रहा था। महिलाश्रम की बहनों ने 'वैष्णव जन' और 'प्रेम मुदित मन से कहो राम-राम-राम' ये मधुर भजन गाये। माता जानकीदेवी बजाज ने वर्धा-वासियों की ओर से दो शब्द कहे। यहां पर विनोबाजी ने भी वर्धा-वासियों से बिदा लेते समय कुछ शब्द कहे थे। उनका यह भाषण आगे प्रवचनों में दिया गया है।

और बाद में वे वायगांव के लिये रवाना हुए।

इस तरह पदयात्रा का आरंभ हुई है। पदयात्रा की पावन-शक्ति से हिंदुस्तान सदियों से परिचित है। जीवन-काल के आखिरी हिस्से में हिंदू-संस्कृति ने मनुष्य से अपेक्षा रखी है 'परिव्राजकता' की। परिव्राजक याने चारों ओर घूमने वाला। गीता के 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, सब धर्मों को छोड़ कर मुझको ही शरण आ,' इस आदेश को पालन करने वाला आदेश देते हुए गीता ने मानों उसका मर्म भी बता दिया। भगवान बुद्ध और महावीर के विहार से सारे प्रांत को ही 'विहार' नाम मिला। साधु-संतों के परिभ्रमण ने खंड-प्राय हिंदुस्तान को "अखण्ड" बनाया। बापू की दांडी-यात्रा और नोआखाली-यात्रा का चमत्कार तो हमारी आंखों के सामने ही हुआ है।

सर्वोदयी ' पद-यात्रा

आखिर में ज्ञानदेव के अद्रोह के विवरण के शब्दों में कहूँगा कि क्या अद्रोह का ही भावरूप शब्द सर्वोदय नहीं है ! जिस तरह गंगा दुनिया के पाप-ताप दूर करती हुई और किनारे के वृक्षों को पोषण देती हुई समुद्र तक पहुँचती है, या दुनिया का अंधापा दूर करता हुआ और शोभा के मंदिरों को प्रकट करता हुआ सूर्य जैसे प्रदक्षिणा को निकलता है, वैसे बद्धों को छुड़ाती हुई, डूबे हुओं को और दबे हुओं को ऊपर उठाती हुई एवं आर्त्तों के दुःख दूर करती हुई यह सर्वोदय-पद-यात्रा संपन्न हो।

—वल्लभस्वामी

: १ :

संकल्प

आज यह तय हुआ है कि आगामी सर्वोदय संमेलन के लिये मुझे हैद्राबाद जाना है। बहुत लोग मुझे अब तक आग्रह पूर्वक कहते रहे हैं कि मुझे संमेलन में जाना ही चाहिये। लेकिन मैंने न जाने का तय कर रखा था। न जाने के मेरे जो कारण थे वे भी बहुत महत्त्व के थे। अुनको देखते हुए मैं जाना नहीं चाहता था। लेकिन आज मित्रों ने आग्रह किया और आग्रहवश मुझे जाने का निश्चय करना ही पड़ा।

कल सवेरे यहाँ से पवनार जाऊंगा। परसों पवनार से हैद्राबाद के लिये पैदल निकलूंगा। रोज करीब पन्द्रह मील चलने की कल्पना है।

यह सब मैं जब प्रार्थना में जाहिर कर रहा हूं तो अपनी जिम्मेवारी महसूस करता हूं। वाहन में न बैठने का व्रत मैंने नहीं लिया है। क्योंकि व्रत तो सत्य-अहिंसा आदि का लिया जाता है। वित्त-विच्छेद की बात मैं कर रहा हूं तो उसका यह अर्थ भी नहीं है कि मुझे प्रवास छोड़ देना है। पैसे के छेद के कई पहलू मुझे दीख पड़ते हैं। उन पहलूओं के अनुकूल समाज हमें बनाना है। परमेश्वर चाहेगा तो इस काम में हमें जरूर यश देगा।

मित्रों से मेरी प्रार्थना है कि मेरे इस संकल्प को तोड़ने की बात वे न सोचें। संकल्प में शुरू से कुछ अपवाद भी नहीं रखना चाहिये। उससे मनुष्य की न संकल्पशक्ति बढ़ती है और न प्रतिभा। पैदल यात्रा की योजना बनाने में जो मदद देना चाहें वे जरूर दे सकते हैं।

सेवाग्राम आश्रम
६-३-५१

: २ :

परंधाम आश्रम से विदा

आप लोगों को अब पता चल ही गया है कि कल से मैं पैदल चलकर हैदराबाद के सर्वोदय समेलन के लिये जा रहा हूं। वहाँ जाने का पहले विचार नहीं था। लेकिन लोगों का आग्रह रहा और जाना तय भी हो गया। अचानक ही यह तय हुआ, और अब केवल तीस दिन ही बचे है। ज्यादा दिन ठहरने की अब गुजाअिश नहीं रही है, अिसलिये मैं कल ही कूच कर रहा हू।

चित्त-शुद्धि का कार्य

अपने यहाँ जो काम चल रहा है उस संबंध में मै कअी बार आपके सामने बोल चुका हू। यह काम यदि ठीक ढग से रूप पकड लेगा तो उससे हम सबकी चित्त-शुद्धि होगी और समाज को भी कुछ शुद्धि प्राप्त होगी। अिस तरह दोनों का काम बनेगा। अिसलिये अिच्छा थी कि अिस काम का कुछ रूप आने तक यहीं रहें। वैसे मेरी तबियत भी बहुत अच्छी हुअी है अैसा नहीं कह सकते। लेकिन वह चीज गौण है। मुख्यतया यहां के काम का कुछ आकार आनेके बाद ही जरूरत पडी तो बाहर जा सकते हैं हो सकता है शायद बाद में बाहर जाने की जरूरत भी न पड़े— अैसी कल्पना थी। लेकिन बीच में जाने का तय हुआ है तो वह

भी परमेश्वर की इच्छा से ही प्रेरित हुआ है, अैसा मैं देख रहा हूं। क्योंकि यह सारा अनपेक्षित-सा हो गया और जिस खबर से सब को आनंद भी हुआ है।

पैदल-यात्रा क्यों ?

सर्वोदय संमेलन में सब लोग जिस तरीके से जा सकते है उस तरीके से जाना ही अच्छा है। जो अिस तरह नहीं जा सकते है वे रेलगाड़ी से आयेंगे तो भी उसमें दोष नहीं है। लेकिन हो सके तो पैदल ही जाना अच्छा है। उससे देश का दर्शन होता है। जनता के साथ संपर्क आता है और उसे सर्वोदय का संदेश पहुंचा सकते हैं। वह संदेश सुनने और उसमे से सांत्वना प्राप्त करने के लिये लोग बहुत उत्सुक हैं। लोगों को इस समय सात्वना की सख्त जरूरत है। किसी का मन अगर त्रस्त हुआ है और उसमें से मुक्त होने का कुछ रास्ता उसे मिल जाता है तो उसको शांति मिलती है। यही हाल आज जनता का हुआ है। इसमें किसी एक का दोष है ऐसी बात नहीं है। सबका मिलकर दोष है। लेकिन दोषो की चर्चा भी किस काम की है? जरूरत है दोष-निवारण की। और उसका मार्ग सीधा सादा, सब को करने योग्य और असरकारक भी है जो हमने यहा परंधाम में प्रयोग किया है। यद्यपि अभी तक जैसा हम चाहते हैं वैसा रूप नहीं मिला है, फिर भी शुभ भावना से तपस्या हो रही है। और अुतनी भी व्यथित मन को संतोष दे सकती है।

यात्रा का ढांचा नहीं बनाया है

अिस प्रवास मैं अपनी कुछ भी कल्पना ले कर नहीं जा रहा हूं। सहजता से जो होगा वह होने दूंगा। फलाने ढंगसे

सफर करनी है, फलाना काम करवा लेना है, ऐसा कुछ भी मेरे मन में नहीं है। जगह जगह जो भी भले लोग मिलेंगे उनसे मिलना और लोगों की जो कठिनाइयाँ होंगी उनको हल करने का कुछ रास्ता बना सकू तो बनाऊँ इतना ही मन मे है। अब समय कम रहा है। इसलिए निश्चित रास्ते से ही जाना पडेगा। इधर उधर हो आने की गुजाइश नहीं है। वापिस आते समय ऐसी कोई पाबदी न होने के कारण अपनी इच्छा के मुताबिक घूम सकेंगे। लेकिन आगे का विचार अभी नहीं किया है। वह हैद्राबाद पहुचने के बाद तय होगा।

मेरा मन यहीं है

जो लोग यहा अिस काम में लगे हुए हैं उनके साथ मेरा शरीर यद्यपि नहीं दिखाई देगा तो भी मेरा मन यहीं है ऐसा अनुभव आपको आएगा। शरीर से यहा रहते हुए जितनी तीव्रता से मेरा मन यहाँ था उसमे कम तीव्रता से वह नहीं रहेगा। शायद अधिक तीव्रता से ही रहेगा। मुझे उम्मीद है कि जिन नवयुवकों ने यह काम पूरा करने की शपथ ली है वे यदि यह काम ईश्वर का है अिस भावना से उसे निरहकार पूर्वक करते रहेंगे तो उन्हें यहां की मेरी गैरहाजरी उत्साह देनेवाली ही साबित होगी।

परधाम, पवनार

७-३-५१

: ३ :

वर्धावासियों से बिदा

बापू के प्रयाण के बाद मुझे हिंदुस्तान भर घूमना पड़ा। थोड़ा व्यापक रूप से देखने का मौका भी मिला। अनुभव से मेरे ध्यान में आया कि प्रवास का यह ढंग अुस काम के लिये अनुकूल नहीं है जो हमें करना है। आज कल राज-काजवाले तो हवा में घूमते हैं। समाज-सेवक भी अुसी ढंग से घूमने लग जायं तो वे भी राज-काजवालों के समान हो जायेंगे। यह हमारे लिये ठीक नहीं होगा।

स्वास्थ्य के कारण जब मुझे घूमना बंद करना पड़ा तब यह सब सोचने का मौका मुझे मिला। अिसी बीच परंधाम में वित्त-छेदन का प्रयोग शुरू हुआ। अुस काम के कुछ स्वरूप आने पर, जरूरत पड़ी तो फिर घूमने की मेरी कल्पना थी। लेकिन अितने में यह यात्रा का कार्यक्रम बन गया और बहुत ही सहज मे बना। जो वस्तु सहज उपलब्ध होती है अुसे अीश्वर की अिच्छा समझ कर स्वीकारना चाहिये। अिसी खयाल से मै निकल पड़ा हू। संभव है, हैद्राबाद पहुंचने के बाद आगे भी बढूं। अुस हालत मे वापिस कब आअूंगा कह नहीं सकता। अिसलिये आज आपसे बिदा ले रहा हूं।

वर्धावासियों की जिम्मेवारी :

वर्धावालों से मेरा अिकतीस वर्षों से संबंध रहा है। हम लोगों ने तालीम की अेक पद्धति बनाअी और अुसे हमने ' सेवाग्राम-

पद्धति' कहा। लेकिन लोगोंने वह नाम नहीं अुठाया। 'वर्धा-शिक्षण-पद्धति' नाम चला। बापू के अनन्यभक्त जमनालालजी का नाम भी वर्धा से जुड़ा हुआ है। अितने पावन नामों का बल जब हमारे पास है, तो मेरा विश्वास है, वर्धा में बहुत कुछ काम हो सकता है। लेकिन यहां पर हमारी अितनी संस्थाअें होने पर भी वर्धा शहर में हम खास काम नहीं कर पाए हैं यह कबूल करना चाहिये। मैं अुसके कारणों में अभी नहीं जाअूंगा। संभव है अपने-अपने कामों में सभी अितने मशगूल रहे हों कि समय न निकाल सके हों।

बीच में हमने वर्धा शहर का सर्वे किया था। सैकड़ों लोगों ने अपने दस्तखत दिये और कुछ न कुछ सार्वजनिक काम करने की अिच्छा प्रकट की। यह छोटी बात नहीं है। लेकिन अुन लोगों से काम नहीं लिया गया। वैसे यहां काफी कार्यकर्ता हैं और रचनात्मक काम के लिये वातावरण भी अनुकूल है।

अनिंदावृत्ति की आवश्यकता

लेकिन जहां कार्यकर्ता अधिक होते हैं वहां अेक बात खास ध्यान में रखनी चाहिये। आज अभी वैष्णवगीत गाया गया जिसमें नरसी मेहता ने आदर्श भक्त के गुण बताए हैं। उनमें से अेक गुण की तरफ मेरा ध्यान इन दिनों विशेष रूप से जा रहा है। वह गुण है 'अनिंदा'। अेक जमाना था जब मैं कहता था कि अपने तो दोष देखने चाहिये और दूसरों के गुण। लेकिन अेक दिन सूझा कि हमें अपने भी गुण ही देखने चाहिये। क्योंकि आखिर

हम कौन हैं ? वही शुद्ध चेतन आत्मस्वरूप हम हैं। तो फिर दोष किसके देखें ? दोषों का भान हम जरूर रखें। लेकिन चिंतन तो गुणों का ही करना चाहिये। दोष तो सिर्फ गुणों की छायारूप होते हैं। बिना छाया के तसवीर नहीं खींची जा सकती। वैसे बिना दोषों के गुण भी अव्यक्त ही रह जाते हैं। दोषों को हम जानेंगे जरूर, लेकिन उनको दूर करने के लिये। और गुणों को बाहर आने का मौका देते रहेंगे। अिस तरह अगर हम हर जगह गुण-दर्शन ही करते जाएंगे तो तेजी से आगे बढ़ेंगे

महिलाश्रमवालों से

यहां महिलाश्रम की अितनी लड़कियां आई हैं। आरंभ से ही उस संस्था से मेरा संबंध रहा है। आज ऊपर से ऐसा दीखता है मानों मेरा महिलाश्रम से कोई संबंध नहीं है। लेकिन दर-असल मैं अपने को महिलाश्रम के काम से अलग नहीं समझता हूं। अिस वक्त सेवाग्राम में तालिमी संघ के संमेलन में मैंने महिलाश्रम का जिक्र बुनियादी तालीम का प्रयोग करनेवाली संस्था के तौर पर किया। आपको अपना अलग अभ्यासक्रम बनाने का अधिकार है। लेकिन यह बात ध्यान में रखें कि हिंदुस्तानभर की लड़कियों को यहां जो संस्कार मिलेंगे उनके द्वारा उनमें तेज तथा वैराग्य प्रकट होना चाहिये।

लक्ष्मीनारायण मंदिर, वर्धा
प्रातःकाल ८-३-५१

पहला दिन--

: ४ :

देहात के मजदूरों का प्रश्न

परंधाम का हमारा काम

आपके गांव में पहले मैं कब आया था मुझे याद नहीं है। लेकिन आपके पड़ोस में ही मैं रहता हूं। यहां से तेरह मील पर पवनार में परंधाम आश्रम है। वहां मैं रहता हूं और आप सब की चिंता करता हूं। किसान कैसे बचेगा, देहात कैसे सुधरेंगे, लोगों को सुख कैसे मिलेगा, दैन्य, दारिद्र्य और दुःख कैसे मिटेगा, प्रेम कैसे रहेगा अिस विषय में मैं सोचता हूं। परंधाम में मैं और मेरे साथ पढ़े-लिखे लोग भी कुदाली से खोदते हैं, रहट हाथ से चलाकर कुएँ से पानी निकालते हैं, सूत कातते हैं, कपड़ा बुनते हैं, बढ़ई का काम करते हैं। ये सारे उद्योग कैसे पनपेंगे इसका विचार करते हैं।

मेरी पैदल यात्रा

आज मैं आपके गांव में आया हूं और यहां से घूमते घूमते तीन सौ मीलपर हैद्राबाद है, वहां जाऊंगा। वहां सज्जन लोगों का एक संमेलन है। वहां मैं पैदल जा रहा हूं। आप कहेंगे यह क्या पागलपन अिसको सूझा ? अिन दिनों तो लोग हवाई जहाज में जाते हैं। कल ही अेक बालक कह रहा था कि रेलगाड़ी से सफर

करने में बहुत समय लगता है। अब तेजीसे पहुंचाने वाले हवाई जहाज निकले हैं तो अैसे जमाने में पैदल सफर करने का यह पागलपन कैसे? लेकिन यह पागलपन आपसे मिलने के लिये है। आप देहात की जनता नारायण स्वरूप हैं। आपसे संपर्क बढ़े, अिस खयाल से मैं आया हूं। कल मैं रालेगांव जाऊंगा। सुबह पांच बजे चल देंगे। दोपहर को ग्यारह बजे वहां पहुंचेंगे। फिर भोजन आदि होगा। कुछ लिखने का काम चलता है वह करेंगे, फिर शाम को पांच बजे लोगों से बातचीत करेंगे। रात को प्रार्थना करेंगे, सब मिलकर भगवान का नाम लेंगे और सब को सिखायेंगे। फिर रात को भगवान की गोद में सो जाएंगे। परसों सुबह उठ कर फिर से कूच करेंगे। ऐसा हमारा कार्यक्रम है।

देहात की चिंता देहात ही करे

आज भी यहां के लोगों से पांच बजे काफी चर्चा हुई। उन्होंने किसानों की दिक्कतों का जिक्र किया। गांव के मजदूरों को आगे शायद खाने के लिये ज्वार न मिले ऐसी हालत पैदा होने की आशंका उन्होंने प्रकट की। मैंने उनसे कहा, तुकाराम महाराज ने हमें सिखाया है कि

"तुझे आहे तुजपाशीं परि तूं जागा चुकलासी"

—तेरा तेरे पास ही है, लेकिन तू जगह भूल गया है और इधर उधर भटक रहा है। तुझे लगता है कि सरकार, डी. सी. या मंत्री मेरे लिये कुछ करेंगे। लेकिन तेरे लिये तू ही करेगा। तुझे थकान आयेगी तो तू ही सोयेगा, दूसरा तेरे लिये नहीं सोयेगा। तुझे भूख लगेगी तो तू ही खायेगा, दूसरा तेरे लिये नहीं खायेगा। तू आया

था तब अकेला ही आया था, और जायगा तब अकेला ही जायगा। इसलिये तेरी जिम्मेवारी तुझे ही उठानी है, और वह तू ही उठा सकता है। भगवान ने कैसी योजना बनाई है यह तू नहीं देखता है? उसने हरेक को दो कान, दो आंख, दो हाथ, दो पांव दिये हैं और बुद्धि भी दी है। ऐसा क्यों दिया है? इसलिये कि हरएक अपने पांव पर खडा रहे और फिर एक दूसरे की मदद करे। वैसे देहातों को भी अपने सवाल खुद ही हल करने होंगे। और वे हो भी सकते हैं। हिन्दुस्तान में पांच लाख देहात हैं। उनके सवाल दिल्ली की सरकार, चाहे वह कितनी भी कुशल क्यों न हो, अकेली हल नहीं कर सकती। सवाल हल करने का इलाज आपके हाथ में है। वह कौनसा? पैसे के दर नीचे ऊपर होते हैं। एक रुपये में कभी चार पायली ज्वार तो कभी दो पायली। वह भी कभी मिलती है कभी नहीं। मैंने सुझाया कि सालदारों की तरह आप मजदूरों को भी कुछ निश्चित प्रमाण में ज्वार क्यों नहीं देते? यह प्रमाण मैंने रोज की पचास तोला ज्वार सुझाया। स्त्री हो चाहे पुरुष, ज्वार में फरक न किया जाय। मजदूरी में जो भी फरक करना है, वह पैसे में किया जाय। ५० तोला ज्वार दे देने के बाद ऊपर से जो भी पैसे देने हैं उसमें चाहें तो फरक कर सकते हैं। अिस तरह मजदूरों को उनकी रोजी में कम से कम ५० तोला ज्वार और बाकी के पैसे देंगे तो आपके मजदूर भूखे नहीं रह सकेंगे। इस पर काफी चर्चा हुई। आखिर यह सुझाव उन लोगों को जंच गया। फिर मैंने कहा कि मेरे सामने आपने तय किया है तो वैसा प्रस्ताव अभी मेरी हाजिरी में ही कर लीजिये। न मालूम फिर

मैं कब आपके गांव में आऊंगा । बातचीत में गांव के बड़े बड़े लोग हाजिर थे । उन्होंने प्रस्ताव किया । वह आपको बाद में सुनाया जायगा । अिस प्रस्ताव के अनुसार अगर आप लोग चलेंगे तो गांव में कोई भी भूखा नहीं रहेगा । फिर आपके गांव का उदाहरण देखकर दूसरे लोग भी अुसका अनुकरण करेंगे और अिस तरह देहात का यह जटिल प्रश्न हल हो सकेगा ।

पांच अंगुलियों की तरह रहो

और अेक बात । हम सब हाथ की पांच अंगुलियों की तरह रहें । हमारे हाथ की एक अंगुली छोटी है तो दूसरी बड़ी है । सब अंगुलियां समान नहीं हैं । फिर भी जो काम करना होता है वह सब मिल कर ही करती हैं । लोटा उठाना हो तो अंगूठा और अंगुलियां मिलकर उठाती हैं । वे अगर आपस में झगड़ा करने लगेंगी और परस्पर सहकार नहीं करेंगी तो कुछ भी काम नहीं हो पाएगा । तो हमें भी उनकी तरह प्रेम के साथ रहना चाहिये । कोई छोटा और कोई बड़ा यह तो दुनिया में रहेगा ही । लेकिन सबके दिल एक होने चाहिये । अपनी अंगुलियों से यह सबक हम सीखेंगे तो हमारा भला होगा ।

भगवान का स्मरण कीजिये

एक आखिर की बात और है । मुझे आपका अधिक समय नहीं लेना है । लेकिन मैं जो कहता हूं उसपर अमल कीजिये । रामदास स्वामी ने कहा है—"समजले आणि वर्तले तेचि भाग्यपुरुष

झाले, येर ते बोल्त चि राहिले करटे जन"। जो भाग्यहीन होते हैं वे केवल बोलते ही रहते हैं और सुनते ही रहते हैं । लेकिन भाग्यवान वे ही होते है जो किसी विचार को समझने के बाद उसपर अमल करते है। इसलिये आप मेरी बात पर सोचें और वह जच जाय तो उसपर अमल करें। मैं यह कहना चाहता हू कि आप लोग सब अेक साथ बैठकर हर रोज नियमित रूपसे भगवान की प्रार्थना करे । मैंने सुना है कि यहा रोज प्रार्थना होती है। लेकिन उसमे हाजिरी पन्द्रह बीस लोगों की ही होती है और उसमें ज्यादातर छोटे लडके ही होते हैं। ऐसा न करें। आप सब प्रार्थना में हिस्सा लीजिये। आखिर इस मनुष्य देह मे आकर क्या करना है? मानव देह में असलिये आते है कि हम एक दूसरे की मदद करें, एक दूसरे पर प्रम करें और सब मिल कर परमेश्वर का ध्यान करें। उसीने हमे वाणी दी है। असलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि जितने अधिक लोग जमा हो सकते ह उतने जमा होकर परमेश्वर का स्मरण कीजिये।

वायगाव (वर्धा)
सायकाल
८-३-५१

दूसरा दिन—

: ५ :

जन-सेवा ही परमेश्वर की पूजा

प्रार्थना में निम्न पंक्तियाँ लोगों को गा कर समझाई गई :

" नारायण असे विश्वी, त्याची पूजा करीत जावी
या कारणें तोषवावी, कोणी तरी काया "

—सारे विश्व मे नारायण भरा है, उसकी पूजा हर रोज करें। उसके लिये किसी न किसी की सेवा करके उसे संतोष देना चाहिये।

मेरी माँ ने बचपन में हमें अेक पहेली सुनाई थी : " भाऊ भाऊ शेजारी भेट नाहीं संसारीं।" भाई भाई पडोस में रहते हैं लेकिन जिंदगी-भर में अेक दूसरे की मुलाकात ही नहीं होती। कौन हैं ये दो भाई ? उसका जवाब है आँखें। दोनों आँखें बिलकुल अडोस-पड़ोस मे हैं। लेकिन अेक आँख दूसरी को नहीं देख सकती। अैसा ही हाल आप का और मेरा हुआ है। मैं आप-के गांव से पचीस-तीस मील की दूरी पर ही रहता हूं। और वहां तीस साल से रहता हूं। लेकिन आज तक आपकी मुलाकात नहीं हो पाई थी। भगवान ने आज वह दिन ला दिया है।

सर्वोदय संमेलन का पूर्वेतिहास

अभी सर्वोदय संमेलन हैद्राबाद में है। गांधीजी के जाने के बाद सब लोगों ने मिल कर तय किया कि सर्वोदय-समाज कायम करें। सर्वोदय-समाज याने क्या? जिस समाज में न कोई ऊंचा है न कोअी नीचा है। जिस समाज में सब अेक दूसरे पर प्रेम करते हैं उसका नाम है सर्वोदय-समाज। फिर हर साल जगह जगह मेले लगाये जायं। उन मेलों में सब लोग इकट्ठे हो कर भगवान का भजन करें, एक दूसरे से परिचय कर लें, और गांधीजी का स्मरण कर के देश के लिये अपने हाथ की कती सूत की अेक गुंडी समर्पण करें। तो अिसके अनुसार १२ फरवरी को हर प्रांत में मेले लगे। आप के प्रांत में पवनार में मेला लगा था। आप में से कुछ लोग शायद वहां पर आये होंगे लेकिन सब को आना चाहिये। और अपने साथ अेक अेक गुंडी ला कर भगवान के चरणों में समर्पण करनी चाहिये। यह अगले साल कीजिये। अिसके अलावा यह भी तय हुआ कि हिंदुस्तान भर के कार्यकर्ता सालभर में अेक दफा अिकट्ठे हो कर अगले साल के काम के बारे में सोचें।

नारायण के दर्शन के हेतु पैदल यात्रा

अिस साल सर्वोदय-समाज के सेवकों का संमेलन हैद्राबाद में होनेवाला है। वहां अगर मुझे जाना चाहिये तो मैं पैदल चलते चलते ही क्यों न जाऊं, अैसा मैंने सोचा है। अुससे आप जो लोग नारायण स्वरूप हैं अुनके दर्शन मैं कर सकूंगा। नदी समुद्र में

मिलने के लिये निकलती है। लेकिन जाते जाते रास्ते में कहीं अिस गांव को पानी दिया, कहीं अुस खेत को पानी दिया अैसा करते करते और सबकी सेवा करते करते समुद्र तक पहुंचती है। अुसी तरह मैंने भी सोचा कि हैद्राबाद जाना है तो रास्ते में लोगों से मिलते मिलते और लोगोंकी कुछ सेवा करते करते जाअूं। तो आज आप के गांव में आया हूं।

दुखियों की सेवा ही परमेश्वरकी पूजा है :

आप और हम सब यहां प्रार्थना में अिकट्ठे हुअे हैं। अिससे मुझे बहुत आनंद हुआ है। आज प्रार्थना में हमने अेक बात सीखी। सारी दुनिया में जो परमेश्वर भरा है अुसकी कुछ सेवा हमारे हाथ से होनी चाहिये। और परमेश्वर की पूजा याने दुखियों की सेवा। तो आप लोग हर रोज सोने के पहले अपने दिल से पूछें कि अपनी देहके लिये तो मैने सब कुछ किया लेकिन दूसरे के लिये क्या किया? गांव के लिये क्या किया? कोअी बीमार था तो उसको दवा दी है? कहीं गंदगी पड़ी थी अुसको साफ किया है? मेरा देह और मेरा घर छोड़ कर गांव के लिये मैंने अगर कुछ नहीं किया है तो समझना चाहिये कि मेरा आज का दिन बरबाद हुआ। मैं व्यर्थ जिया। अिस तरह तो पशु, पक्षी सभी जीते हैं। भगवान ने हरेक को प्राण दिया है तो सब खाते हैं और जीते हैं। लेकिन दूसरे के लिये जीना, दूसरे की कुछ सेवा करना अिसमें जो समाधान मानव को प्रतीत होता है वह दूसरी किसी चीजमें नहीं होता। यह कल्पना की बात नहीं है। कोअी भी अिसका अनुभव ले सकता है।

दूसरे को खिलाने का आनंद चखो

बचपन की बात है। हमारे गांव में हमारा खुदका अेक कटहल का पेड़ था। जब फल निकलता था तब अुसे काट कर दो दो बीज हरेक घर में दे आने के लिये माँ हम से कहती थी। हमारा गांव पचास-साठ घरों का था। सब घरों में मैं बीज पहुंचा आता था। मैं उस समय सात साल का बच्चा था। बच्चों को तो खाने में बड़ा मजा आता है। लेकिन हमको उस फलके बीज पहले नहीं मिलते थे। मुझे अब भी याद आता है कि वे बीज दूसरों को बाँटने में मुझे कितना आनंद होता था। वह एक अजीब प्रकार का आनंद था। खुद खाने में जो आनंद आता है अुसका अनुभव तो हरेक को है। जानवरों को भी वह अनुभव आता है। लेकिन दूसरे को खिलाने में कैसा आनंद आता है यह अनुभव करके ही देखना चाहिये। जैसे शक्कर मुंह में डालते ही उसकी मधुरता का हरेक को अनुभव होता है, वैसे दूसरे को मदद देने में मधुरता है या नहीं, यह अनुभव करके ही देखना चाहिये। अगर वैसा अनुभव न आये तो आप आ कर मुझे जरूर कहें। इतनी अनुभव सिद्ध यह बात है।

दूसरे को सुख देने में ही मनुष्य-जन्म कृतार्थ होता है

आज की प्रार्थना में हम यह सबक सीखे हैं कि नारायण की कुछ सेवा अपने हाथ से हो। वह पूजा तुलसी, बेल या फूल से नहीं होगी। कुछ सेवा ही होनी चाहिये। किसी-न-किसी तरह भगवान को संतोष पहुंचाना ही होगा। रामदासस्वामी समझाते हैं कि

इस तरह संतोष पहुंचायेंगे तो ही नारायण की पूजा होगी। वही सिखावन आज मैंने प्रार्थना में आपके सामने रखी। आज पहले ही मैं आप के गांव में आया हूं। हम सब ने मिल कर प्रार्थना की, बहुत आनंद आया। फिर कब मिलेंगे कह नहीं सकते। इसलिये इतनी बात याद रखिये कि एक फकीर आया था और सुनाकर चला गया कि मनुष्य देह की कृतार्थता भोग भोगने में नहीं है बल्कि दूसरे को थोड़ा भी क्यों न हो, सुख देने में है।

मजदूरों को मजदूरी में कुछ ज्वार दीजिये

आज आप के गांववालों से चर्चा चल रही थी। मैंने सुझाया कि मजदूरों को हर रोज की मजदूरी में कुछ ज्वार देते जाइये। आधी पायली ज्वार (५० तोला) और फिर ऊपर से जो भी कम ज्यादह पैसा देना हो वह दें। अगर यह बात आप को जंचे तो दस्तखत करके प्रतिज्ञा कर लो। मुझे तीन दस्तखत मिले हैं। मुझे खुशी हुई। तीन कुछ कम नहीं है। अरे भाई, एक के हृदय में भी अगर भगवान जग गया तो सारी दुनिया बदल सकती है। ऐसे लोग हमने देखे हैं। बड़े लोग बड़े कैसे बनते हैं? गांधीजी हमारे सामने हो गये। वे किस कारण बड़े हुए? उनको क्या भगवान ने हमसे अधिक इन्द्रियां दी थीं? उनके पास क्या अधिक था? उनके हृदय में भगवान जग गया था और दूसरों की सेवा करने की लगन उन्हें थी। इसके सिवाय उनके पास क्या था? वैसी अगर हममें से एक को भी लगन लगी तो वह छोटी बात नहीं है।

तीन लोगों ने दस्तखत दिये, मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे उम्मीद है कि वे उसके अनुसार व्यवहार करेंगे।

मनुष्य के हृदय पर भरोसा रखो

लेकिन एक भाई ने मुझे सावधान किया। उसने कहा "आप दस्तखत लेनेकी झंझट में न पड़ें। उसमें कोई सार नहीं है। हमारा गांव इतना लोभी है कि वचन भले ही दे देंगे लेकिन उसको निभायेंगे नहीं।" मैंने कहा "भाई, भरोसा करना मेरा धर्म है। मेरे हाथ में दंड-शक्ति नहीं है और न मैं चाहता हूं। यहां आकर एक बात मैंने कही और जिनको वह जंची उन्होंने उसके अनुसार चलने का वादा किया, तो मैं उनपर विश्वास ही रखूंगा। मनुष्य के हृदय पर भरोसा रखना ही चाहिये। अगर न रखें तो हम मनुष्यता गंवायेंगे। आपने मुझे सावधान किया, अच्छा हुआ। उससे वे लोग भी चेत जायेंगे। वचन अगर दिया है तो "प्राण जाइ बरु वचन न जाई।" लेकिन याद रखो कि मनुष्य के हृदय में परमेश्वर जागता है। कब जागेगा उसकी कल्पना नहीं कर सकते। किस निमित्त से जागेगा यह कह नहीं सकते। मैं एक फटा-टूटा आदमी आप के पास आया और ऐसा कहने की भगवान ने मुझे हिम्मत दी कि "अपने लिये तो हम जीते ही हैं, लेकिन दूसरे के लिये जीना सीखो" तुकाराम महाराज ने यही सिखाया। "तुका म्हणे फार थोडा करी परउपकार" —थोड़ा भी क्यों न हो परोपकार करो। यह देह दूसरों के लिये घिसने दो। अगर देह वैसी घिसेगी तो चंदन घिसने पर

जैसी सुगंध फैलती है वैसी देह घिसने पर सुगंध फैलेगी। वैसी सुगंध फैलने दो यह सिखावन हमारे सब संतों ने हमें दी और वही मैंने आज आप के सामने रखी।

मेरे मित्रो, मेरा भाषण समाप्त होता है। आपको मेरे प्रणाम हैं।

राळेगांव, (जि. यवतमाळ)
९-३-५१

तीसरा दिन—

: ६ :

हाथ-चक्की और हरि-नाम

यह एक छोटासा गांव है। छोटे गांव में सब के हृदय एक होते है। एक दूसरे की अच्छी पहचान होती है। किसी को कुछ तकलीफ हो तो उसका जल्दी पता चलता है और आप मदद के लिये दौड़ जाते है। यह सब अच्छा है। फिर आप का गांव रेलगाड़ी से और मोटर से बहुत दूर है जिस से आप बड़े सुख में है। लेकिन आगे-पीछे मोटर यहां तक पहुंच जायगी। तब भी आप अपना सादा जीवन और प्रेम न छोड़ें।

हाथ-चक्की का महत्त्व

आपके गांव में अभी हाथ-चक्की पर पीसा जाता है। यह अच्छा है। लेकिन मोटर नजदीक आ जायगी तो आटे की चक्की निकलेगी और आप अपना आटा वहां से पिसवा लेंगे। अगर ऐसा हुआ तो आप की बड़ी हानि होगी।

मैं बचपन में कोंकण में रहता था। आप के जैसा ही वह छोटा गांव था। सुबह चार बजे घर की स्त्रियां उठती थीं और सब से पहले जो कुछ पीसने का होता था, पीस लेती थीं। बाद में झाड़ू आदि लगा कर आंगन में पानी छिड़कती थीं। और फिर

प्रेम से भगवान का नाम लेती थीं। हर गांव में इस तरह चक्की चलती थी।

देश आधा घंटा देरी से उठने लगा

लेकिन तीस साल के बाद अब देहातों में से चक्की लुप्त होती जा रही है। मैं तो देख रहा हूं कि पहले से लोग देरी से उठने लगे हैं। यानी सारे देश का प्रातःकाल का अमूल्य आधा घंटा बरबाद हो रहा है। सुबह के दो-तीन प्रहर बहुत मूल्यवान होते हैं। उस समय नामस्मरण कर सकते हैं और गहरा अभ्यास आदि कर सकते हैं। इसलिये सुबह के प्रहर में आधा घंटा देरी से अठने के कारण सारे देश का उतना नुकसान हो रहा है। तो आप लोग सुबह जल्दी उठते जाइये और रात में जल्दी सोते जाइये।

पुरुष भी चक्की चलायें

और पसिने का काम केवल स्त्रियां ही क्यों करें? बहुत सारा तो वे पीसती हैं। लेकिन आप को भी थोड़ा पीसना चाहिये। हम जेल में पीसते थे। जेल में पुरुष पीसते हैं, यह तो सब जानते हैं। लेकिन हम परंधाम के हमारे आश्रम में हर रो पीसते हैं। पुरुष और स्त्रियां दोनों पीसती हैं। हर रोज ताजा आटा मिलता है। हाथ के ताजे आटे में जो ताकत है वह मिल के आटे में नहीं है। आपके गांव में अभी तक तो चक्की चल रही है। लेकिन मोटर आने पर भी आप यह नियम न छोड़ें। आलस्य को छोड़ दें। और परमेश्वर का नाम लेते लेते चक्की चलाते जाइये। कबीर

एक कविता में लिखते हैं कि लोग मंदिरों में पत्थर रखकर उसकी पूजा करते हैं; लेकिन "घर की चक्की कोई न पूजे, जा पर पीसा खाय।" जिस चक्की पर हम अपना आटा पीसते हैं और हमारी रोज की रोटी खाते हैं अुस चक्की की पूजा क्यों नहीं करते ? वह भी परमेश्वर ही है। चक्की की पूजा बेल-फूल चढ़ाकर नहीं होती। उसको हर रोज साफ कर के उसमें तेल दे करके आटा पीसना यही उस चक्की की पूजा है।

व्यसन छोड़िये

इस तरह अगर हम आलस्य छोड़ेंगे, उद्योग करेंगे, तो छोटा गाँव होने पर भी हम सुखी रह सकते हैं। गांव में किसी प्रकार का व्यसन नहीं होना चाहिये। किसी को चिलम का व्यसन, किसी को बीड़ी का व्यसन, किसी को गांजा-अफीम का व्यसन, और आज कल तो चोरी से शराब का व्यसन भी शुरू हो गया है। आप ही सोचिये कि इन चीजों का न देह को उपयोग है न आत्मा को। इन व्यसनों के कारण तो मनुष्य गुलाम बन जाता है। मनुष्य देह में हम आये हैं तो गुलाम बनने के लिये थोड़े ही आये हैं ? हम तो इस देह में मुक्ति का अभ्यास करने के लिये आये हैं। इसलिये गांव में किसी प्रकार के भी व्यसन न रहने दो।

हरि-नाम मत विसारो

यह छोटा गांव होते हुए भी करीब आधे गांव के लोग आये हैं। मैं जो बात अब कहूंगा वह ध्यान में रखो। हर रोज गांव के १५-२० लोग अेक जगह जमा हो कर प्रेम से प्रभु का भजन

करते जाइये। १५-१६ साल पहले मैं मेरे बचपन के देहात में गया था। उस गांव में स्कूल नहीं है। न कोई खास लिखना पढ़ना भी जानता है। दो दिन ही मैं वहां रहा। लेकिन एक दिन रात को दो बजे मेरी नींद खुली तो मुझे भजन की आवाज सुनाई दी। बुधवार का रोज था। मैं बिस्तर से उठा और जहां भजन चल रहा था वहां जाकर बैठ गया। घंटा-आधा घंटा उन लोगों ने भजन गाया। मुझे बहुत आनंद हुआ। मैं सोचने लगा जिस गांव में स्कूल नहीं है और लिखना-पढ़ना भी कोई नहीं जानता वहां इतना ज्ञान भी इन लोगों को किसने दिया? तुकाराम के चार अभंग ये लोग भक्तिपूर्वक गाते हैं तो उतनी अकल गांव में बची है; वरना कब स्कूलें निकलती और कब इनको ज्ञान मिलता? लेकिन भजन करने की आदत देहातों को रही तो चार अच्छे शब्द इनको कंठ हो गये हैं। इसलिये मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आप एकत्र हो कर प्रार्थना करते जाइये। जिनको पढ़ना आता है वे कुछ अच्छी किताब पढ़ कर सुनायें। जो गाना जानते हैं वे भजन सुनायें। आज मैंने जिस तरह आपको भजन करना और ताल पर ताली बजाना सिखाया वैसे आप छोटे बड़े एक साथ भजन कीजिये। पीठ सीधी रख कर बैठना चाहिये और थोड़ी देर मौन रह कर ईश्वर का ध्यान करना चाहिये। ऐसा आप करेंगे तो स्कूलों से बढ़ कर शिक्षण आप को इस प्रार्थना में से मिलेगा। स्कूल तो देहात में होने

ही चाहिये और आगे चल कर होंगे भी। लेकिन भक्तिपूर्वक की गई प्रार्थना से जो संस्कार और तालीम आपको मिलेगी वह तालीम स्कूल की तालीम से बढ़ कर होगी।

सखी–कृष्णपुर
१०-३-५१

खास स्त्रियों के लिए—

: ७ :

स्त्रियों की जिम्मेवारी

स्त्रियों को भी भजन करना चाहिये

अपने लोगों में आम तौर से केवल पुरुष लोग ही भजन करते दिखाई देते है। लेकिन क्या स्त्रियों के लिये कोई भगवान ही नहीं है? गांव की स्त्रियों को एक जगह जमा होकर प्रेम के साथ थोड़ी देर तो भजन करना चाहिये। गृहस्थी की गाडी के दो पहिये है। एक स्त्री और दूसरा पुरुष। जैसे पुरुषों को धर्म होता है वैसे स्त्रियों को भी होता है। पुरुष को आत्मा होती है वैसे स्त्री को भी होती है। भगवान के सामने स्त्री और पुरुष समान हैं।

धर्म की रक्षा स्त्रियों ने ही की है

आप देखेंगी कि हिंदुस्तान में स्त्रियों ने ही धर्म की रक्षा अधिक की है। पुरुषों मे जितने व्यक्ति व्यसनी मिलते हैं उससे बहुत कम स्त्रियों में मिलेंगे। स्त्रियों ने दुनिया में सदाचार जिंदा रखा है। इसीलिये उनके बालकों की जिम्मेवारी होती है। बच्चों में अच्छी आदतें डालना और उनको साफ-सुथरा रखना स्त्रियों के हाथ में है। आप अपने बच्चों को सच्चरित्र बनायेंगी तो देश को अच्छे नागरिक मिलेंगे। बच्चे तो आप की बड़ी इस्टेट हैं। इनसे बढ़ कर कौन

सा धन है ? कौसल्या की कोख में से भगवान रामचंद्रजी निकले और देवकी की कोख से भगवान श्रीकृष्ण। जितने भी सत्पुरुष हुए हैं उनकी मातायें धर्मपरायण थीं। जिस घर की स्त्रियां भगवान का स्मरण करती हैं, सत्य का पालन करती हैं, प्रेमभाव से रहती हैं उस घर में अच्छे पुरुष पैदा होते हैं यह बात दुनियाभर में प्रसिद्ध है। अिसलिये आपके हाथ में बड़ी शक्ति है यह बात ध्यान में रखिये।

पुरुष को सन्मार्ग पर लाना भी स्त्रियों का काम है

पुरुष झगड़ा करते हैं, शराब पीते हैं, लेकिन उनकी स्त्रियां चुपचाप सहन कर लेती हैं। उनका काम है कि वे अपने पतिसे इन आदतों को छोड़ देने को कहें। और अगर उनका कहना पुरुष न माने तो कहना चाहिये कि जब तक ऐसी आदतें आप नहीं छोड़ेंगे तब तक हम भोजन नहीं करेंगी। यह सारा काम स्त्रियों का है।

आप सब बहनें प्रेम से यहां आयीं मुझे बहुत अच्छा लगा। आप अपने पुरुषों को अच्छे रास्तेपर रखिये, बच्चों को सदाचारी बनाइये और एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार कीजिये। यह सब आप करेंगी तो आपके गांव में स्वर्ग उतरेगा। *

सखी—कृष्णपुर
१०-३-५१

* प्रार्थना के बाद गांव की बहुत-सी स्त्रियाँ विनोबाजी का प्रवचन सुनने को आईं। उनके लिए उन्होंने जो चार शब्द कहे थे, उसका सारांश यहां दिया गया है।

चौथा दिन—

: ८ :

श्रम और प्रेम से स्वराज्य का उदय

भगवान की देन

हम जो देहात के लोग हैं उनके पास धन संपत्ति नहीं है, लेकिन कुछ और चीज है या नहीं ? क्या भगवान ने हम को बिलकुल खाली ही रख छोड़ा है ? पटाके में बारूद भरी होती है इसलिये उसको बत्ती लगाते ही धमाका होता है। लेकिन बारूद न होती तो कैसे आवाज आ सकती थी ? तो देहात के लोगों में भगवान ने कुछ मसाला भरा है या नहीं ? मेरा कहना है कि भगवान ने हमें दो अहम चीजें दी हैं : काम करने के लिये दो हाथ, और हृदय में प्रेम।

हिम्मत रखनी चाहिए

अपने हाथ की ताकत से हम गंदगी साफ कर सकते हैं। आप देखते हैं कि घर घर में देवियां हैं इसलिये घरों के आंगन साफ रहते हैं। तो भगवान ने दो हाथों से काम करने की शक्ति हमें दी। और दूसरी चीज दी है प्रेम। तो देहात के लोगों के पास कुछ नहीं है, वे दीन हैं, दरिद्र हैं, दुबले हैं, लाचार हैं ऐसी अभद्र वाणी मुंह से मत निकालो। बल्कि यूं कहो कि हम भगवान के बड़े लाडले हैं। उसने हमें प्रेम दिया और काम करने के लिये हाथ दिये। कोई भी बाप अपने लड़के को कुछ न कुछ दिये बिना नहीं रहता। परमेश्वर हमारा पिता है, उसकी हम पर प्रीति है और उसने हमें बहुत बड़ी देन दी है। हम श्रीमान् हैं। दुनिया के सामने भीख मांगने की हमें क्या जरूरत है। इस तरह हिम्मत रखनी चाहिये।

बिना श्रम के खाना पाप समझें

वैसे देहात के लोग काम तो करते हैं। वे खेती करते हैं। लेकिन प्रेम और अभिमान के साथ नहीं करते। लाचारी से करते हैं। लगना यूं चाहिये कि बिना श्रम किये खाना पाप है इसलिये मैं श्रम करके ही जीऊंगा। अब देखिये आप सब लोगों के बदन पर कपड़ा है। लेकिन यह सारा आप खरीद कर लाते हैं। कपास आप के खेत में पैदा होती है वह आप बेच डालेंगे और बिनौले मोल लेते हैं, कपड़ा मोल लेते हैं। तिलहन आप के खेत में होती है, उसको आप बेचेंगे और खल्ली और तेल मोल लेंगे। यह क्या चल रहा है? अगर देहात इस तरह आलसी बने तो वे कभी सुखी नहीं बन सकते। हमें भगवान ने पैसा नहीं दिया है लेकिन हाथों की ताकत दी है उसका उपयोग करना चाहिये।

आपसी अनबन

दूसरी बात प्रेम की। देहात छोटे से छोटा भी क्यों न हो लेकिन वहां पर तीन गुट, चार पार्टियां, और पांच पक्ष होते हैं। इसका उसके साथ बनता नहीं और उसका इसके साथ बनता नहीं। मैं एक देहात में गया था। रात के करीब नौ बजे मैंने आग लगी हुई देखी। मैंने पूछा "यह आग कैसे लगी?" तो लोगों ने कहा, "लगी नहीं, बल्कि लगाई गई है।" उस गांव में धनिये का बड़ा व्यापार चलता था। दो आदमियों का झगड़ा था तो एक ने दूसरे के धनिये को आग लगा दी। मुझे यह भी कहा गया कि यह बात आज की नहीं, बल्कि हमेशा चलती है।

स्वराज्य का उदय काम से ही होगा

इस तरह हम न हाथों से काम करते हैं और न एक दूसरे से प्रेम करते हैं। तो फिर स्वराज्य की गरमी कैसे महसूस

होगी। आप किसी भी देहात में चले जाइये। आप को पाँच पचास आदमी बेकार बैठे हुए दिखाई देंगे। अगर आपको सभा करनी है तो किसी भी समय पचास लोग सभा के लिये आप को मिल ही जायंगे। स्वराज्य आया कहते हैं। लेकिन वह है कहां? कपड़ा बाहर से खरीदते हैं, तेल, खल्ली, गुड बाहर से खरीदते हैं। इतना ही नहीं रस्सियाँ भी आप बाहर से मोल लेते हैं। तो फिर स्वराज्य काहेका? एक आदमी को प्यास लगी थी: अब पानी कहां से मिलेगा? उस से कहा गया कि पानी चालीस मील की दूरी पर पैनगंगा नदी में है। वह दुखी हुआ। एक दूसरा आदमी था जो पैनगंगा नदी से एक मील के फासले पर था। वह भी प्यासा था। चालीस मील दूर रहने वाले आदमी ने उससे कहा "अरे तू क्यों दुखी होता है। पानी तो तेरे नजदीक पड़ा है।" उसने जवाब दिया, "अरे भाई नजदीक हुआ तो क्या हुआ। पानी गले में उतरेगा तभी न प्यास बुझेगी।" इसी तरह स्वराज्य लंदन से दिल्ली आ गया, और दिल्ली से नागपुर या यवतमाल भी आ गया। लेकिन वह तुम्हारे क्या काम का। सूर्य जब तक आप के गाँव में नहीं ऊगेगा, तब तक आप सूर्योदय हुआ ऐसा मानने को तैयार नहीं होंगे। स्वराज्य हमारे हाथ में है। हम और आप काम करने लग जायेंगे तभी स्वराज्य का उदय होगा।

रूंझा, जि० यवतमाल

ता० ११-३-५१

पाँचवाँ दिन—

: ९ :

स्वराज्य-लक्ष्मी का आवाहन

स्वराज्य-सूर्य की गरमी महसूस नहीं होती

हमारे देश को स्वराज्य मिले अब तीन साल हो चुके; लेकिन स्वराज्य का असली दर्शन इस देश में अब तक नहीं हो रहा है। सब जगह स्वराज्य का उदय सूर्योदय के समान माना जाता है। सूर्योदय के बाद अंधकार नहीं रहता। स्वराज्य आने पर भी सारी जनता उत्साह से काम करने लगती है, जिम्मेवार बनती है, परस्पर सहयोग बढ़ता है, और हमारे देश की लक्ष्मी कैसे बढ़ेगी, हमारे देश का सौभाग्य कैसे प्रकट होगा इसकी चिंता सब लोग करते हैं। वैसा अनुभव इस देश में अब तक नहीं आ रहा है, यह बड़े दुःख की बात है!

देश का उत्पादन कैसे बढ़ेगा

आज कल जो भी उठता है, कहता है कि देश की पैदावार बढ़नी चाहिये, उद्योग बढ़ने चाहिये। लेकिन पैदावार और उद्योग सिर्फ बोलने से नहीं बढ़ते। खेती करनी पड़ती है और उद्योग भी करने पड़ते हैं। आज आपके गाँव में कताई मंडल की स्थापना की गई है। मैं वहाँ गया था। दो-चार लोग कात रहे थे। इस शहर

की आबादी करीब दस हजार की है। इन सब को कपड़ा लगता है। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सब कपड़ा पहनते हैं; लेकिन सारा कपड़ा ये लोग मिल का ही खरीदते हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि जिन मिलों में इतनी पूँजी और इतनी अक़ल खर्च हो रही है, वे हिंदुस्तान को कितना कम कपड़ा देती हैं। इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। पिछली लड़ाई के पहले हिंदुस्तान की मिलों में फी आदमी १७ गज़ कपड़ा तैयार होता था, अब लड़ाई के बाद याने दस साल बीत जाने पर फी आदमी १२ गज़ कपड़ा तैयार होता है। और इस साल कहा गया है कि हड़ताल आदि कारणों से कपड़ा और भी कम मिलेगा, करीब ११ गज़। १७ से १२ और १२ से ११। यह है मिलों का बारह साल का पराक्रम!

लोग दलील करते हैं, अब स्वराज्य आगया है तो मिलों को पूरा कपड़ा देना ही चाहिये। मैं बहस में नहीं उतरता। मैं पूछता हूं क्या आज मिलें पूरा कपड़ा दे सकती हैं? मामूली धोती जोड़ा भी काले बाज़ार में आज १५) २०) रुपये में मिलता है। काला बाजार क्यों होता है? कपड़ा थोड़ा है। श्रीमान लोग चाहे जितना दाम देने को तैयार होते हैं। इस लिये कपड़े की कीमत बढ़ती है और गरीब लोगों को पूरा कपड़ा नहीं मिलता।

इस हालत में लोग अगर खुद कातने लग जाँय और रोज का एक घंटा भी दें तो साल भर में फी आदमी १५ गज़ कपड़ा तैयार होगा। मैं कहता हूं आधा घंटा भी वे दें तो साढ़े सात गज

कपड़ा तैयार होगा। मिलों में बारह गज़ होता है उसमें यह साढ़े सात गज़ और बढ़ेगा तो देश को अधिक कपड़ा मिलेगा या नहीं? लेकिन यह सब बिना किये कैसे होगा? मैं विवाद में नहीं पड़ता। मिलों के जरिये अगर कपड़े का सवाल हल हो सकता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता तब तक आप घर में सूत कातेंगे तो देश की संपत्ति में वृद्धि होगी या नहीं?

आज की जरूरत

आपके एक गाँव ने अपना कपड़ा तैयार करने का संकल्प अगर किया तो बहुत बड़ा काम होगा। जो बात कपड़े पर लागू है वही दूसरी चीजों पर भी है। मैं उम्मीद करता हूं कि जिन लोगों ने यहाँ कताई मंडल कायम किया है वे हारेंगे नहीं। खुद कातते रहेंगे, अपने मित्रों को सिखायेंगे, और इस तरह अपना मंडल बढ़ाते जायेंगे।

लोग कहते हैं, इस ज़माने में अगर हम चरखे पर सूत कातेंगे तो पुराने ज़माने में चले जाते हैं।' मैं उनसे कहता हूं 'पुराना ज़माना और नया ज़माना' इस बहस में क्यों पड़ते हो? आज आपको कपड़ा चाहिये। मिलें कपड़ा देती हैं, वैसे चरखा भी देता है। फिर चरखे पर सूत कातकर कपड़ा बना लेने में क्या हर्ज़ है? मैंने सुना है पांढरकवड़े की आबादी पहले नौ हजार थी अब आठ हजार होगई है। यह एक हजार संख्या कैसे कम हो गई? तो कहा गया कि यहाँ मज़दूरी नहीं मिलती इसलिये

मज़दूर गाँव छोड़कर शहर में चले गये हैं। लेकिन वहाँ भी उनको क्या उद्योग मिलने वाला है ? देश में जब तक उद्योग नहीं बढ़ते हैं तब तक लोगों को मज़दूरी कैसे मिलेगी ? स्वराज्य मिलने पर भी हम अगर आलसी रहें तो हमारा स्वराज्य भी सुस्त ही रहेगा। हम उद्योगी बनेंगे तभी स्वराज्य में लक्ष्मी रहेगी। लक्ष्मी का ऐसा बाना है कि वह उद्योगी पुरुष के घर में ही रहेगी। स्वराज्य आया है इसका अर्थ इतना ही है कि हमारी रुकावटें दूर हो गयी हैं, और काम करने की उमंग बढ़ी है। लेकिन एक बात साफ है कि देश का हरेक मनुष्य जब तक उत्पादन में हाथ नहीं बटायेगा तब-तक हमारे देश को सुख के दिन नसीब नहीं होंगे।

पांढरकवडा, (जि० यवतमाळ)
१२-३-५१

छठा दिन—

: १० :

नाम जैसा ही काम

पैदल यात्रा क्यों ?

अभी सर्वोदय संमेलन हैद्राबाद के नजदीक शिवरामपल्ली में होने जा रहा है। अगर इन दिनों रेल्वे से जाते हैं तो वर्धा से हैद्राबाद एक रात का रास्ता है। लेकिन हमने तो सोची पैदल-यात्रा। और उसमें भी कोशिश यह करते हैं कि बने जहां तक छोटे छोटे गांवों में पहुंचें। अब लोग पूछ सकते हैं कि क्या आप रेल्वे या विमान आदि नहीं चाहते हैं ? मैं कहता हूं कि ऐसी बात नहीं है। उलटे मैं तो आज से भी अधिक गति वाले विमान चाहता हूं। अगर घंटे भर में हम दिल्ली जा सकें तो जरूर जायेंगे। लेकिन हर चीज का अपना स्थान होता है। ऐनक की चाहे जितनी भी महिमा गाई जाय तब भी आंख की महिमा से वह नहीं बढ़ सकती। ऐनक आंख की मददगार है। लेकिन आंख की स्वयंभू महिमा है। वैसे हम विमान और दूसरे भी गतिमान साधन चाहते हैं। हमें उनसे नफरत नहीं है। फिर भी पांव की जो प्रतिष्ठा है सो है। पैदल-यात्रा के जो लाभ हैं वे विमान से हरगिज नहीं मिल सकते।

भारतवर्ष एक कैसे बना

हमारे पूर्वजों ने यात्राओं की महिमा बहुत गायी है। काशी-वाले को कहा कि तुमको रामेश्वर के दर्शन करने चाहिये। वैसे

तो काशी में भी गंगाजी हैं, विश्वनाथजी हैं। लेकिन उनके बावजूद काशीवाले की इच्छा होती है कि जिंदगी-भरमें कभी रामेश्वर हो आऊँ तो अच्छा है, और गंगाजी का पानी रामेश्वर के मस्तक पर चढाऊँगा तो धन्य होऊँगा। तो इधर रामेश्वरवाले को क्या लगता है? उसको शास्त्रकारों ने सिखाया कि समुद्र का पानी उठा लो और काशी ले जा कर विश्वनाथजी के मस्तक पर चढ़ाओ। इस तरह काशीवाले को रामेश्वर की प्रेरणा और रामेश्वरवाले को काशी की प्रेरणा। दोनों के बीच पन्द्रह सौ मील का अंतर। रेलवे तो उन दिनों थी नहीं। तो पैदल-यात्रा की ऐसी प्रेरणा हमारे पूर्वजों ने दी थी, और हजारों लोग जिंदगी-भरमें प्राय: पैदल जाने की हवस रखते थे। उससे लोगों के दिल एक-दूसरे से एकरूप हो जाते थे। यह एक ऐसा तरीका उन्होंने निकाला कि सारा भारतवर्ष एक बन गया।

पैदल-यात्रा में पारमार्थिक बुद्धि

आज हम देखते हैं कि इतने साधन बढ़ जाने पर भी देश में जातीयता बढ़ रही है, प्रांतों प्रांतों में वाद बढ़ रहा है। यह सब किस लिये हो रहा है? इसीलिए हो रहा है कि लोग ज्यादा स्वार्थी बने हैं। वे दूर दूर जाते हैं तो मतलब के लिये जाते हैं। कोई बंबई जाता है तो कोई कलकत्ता जाता है। रोज गाड़ी भर भर कर जाती है। लेकिन टिकट घर पर जा कर देखो क्या तमाशा दीखता है। किसी को किसी की दरकार नहीं होती। हरेक अपनी अपनी टिकट कटाने की धुन में होता है। एक दूसरे की पूछ परख करने को फुरसत नहीं

और एक दूसरे की परवाह भी नहीं । रेल की मुसाफिरी तो बहुत बढ़ी है लेकिन उसके पीछे स्वार्थ है। अब पैदल अगर कोई मुसाफिरी के लिये निकलेगा तो क्या स्वार्थ ले कर जायगा । यहां तो काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है । और दिन भी बहुत जायेंगे। अगर पारमार्थिक बुद्धि है तो ही यह काम किया जायगा । और पारमार्थिक बुद्धि से होनेवाले लाभ स्वार्थी बुद्धि से कभी नहीं मिल सकते । कोई अगर विमान में बैठ कर काशी या रामेश्वर पहुंच जाय तो यात्रा का जो फल है, उससे चित्त-शुद्धि की, देशनिरीक्षण की और जनता से एकरूप होने की अपेक्षा कभी नहीं पूरी हो सकेगी । इसलिए हमने सोचा कि हम अपने देशवासियों से मिलते-जुलते, उनसे बातचीत करते करते सर्वोदय संमेलन के लिये जायंगे ।

नाम अच्छे हैं लेकिन काम अच्छे चाहिये

आप पूछेंगे भला यह सर्वोदय क्या चीज है ? अच्छे अच्छे नाम तो आज कल बहुत चल पड़े हैं । कोई अपने को समाजवादी कहते हैं । वे कहते हैं कि सारा समाज एक है और हम सारे समाज के सेवक हो जायेंगे । अपना अलग कोई व्यक्तित्व नहीं रखेंगे । निजी स्वार्थ जैसी कोई चीज नहीं । सारा समाज को समर्पण । इसका नाम है समाजवाद । कोई कहते हैं कि हम साम्यवादी हैं । सब के साथ समान व्यवहार होना चाहिये । न कोई ऊंच और न कोई नीच होना चाहिये । जाति का या अन्य कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिये। सारा साम्य होना चाहिये यह हमारा उद्देश्य है। बहुत अच्छा उद्देश्य

है। साम्यवाद शब्द भी अच्छा है, समाजवाद शब्द भी अच्छा है। अब यह नया शब्द निकला "सर्वोदय"। यह भी अच्छा है। अच्छे शब्द तो बहुत निकले हैं लेकिन हमें काम अच्छे करने चाहिये तभी ये शब्द काम देंगे। नहीं तो वे हवा में रह जायेंगे। हमें तो इनको जमीन पर लाना है। सर्वोदय का मतलब है 'हरेक का भला।' याने एक का स्वार्थ दूसरे के स्वार्थ के विरोध में, या दूसरे की परवाह किये बगैर अपना स्वार्थ साधना यह बात नहीं होनी चाहिये। हम सब एक हैं और हम सब का उदय। यह है सर्वोदय का अर्थ। तो सर्वोदय में सब से जो पिछड़े हुए होते हैं उनकी फिक्र करना पड़ता है। इसीलिये हमने सोचा है कि हम छोटे-छोटे गाँव में पहुंचें और हो सके तो वहां मुकाम करें।

भारत की सभ्यता देहातों में ही

आखिर यह हिंदुस्तान है कहां? हिंदुस्तान का प्रेम, भारत-माता का अभिमान, देशभक्ति आदि बातें हम सुनते हैं। लेकिन देशभक्ति याने क्या देश की जो मिट्टी होती है उसकी भक्ति? वह तो जो हमारे देश में है वैसी दूसरे देशों में भी पड़ी है। भारतमाता की भक्ति का यही मतलब है कि अपने जो लाखों भाई देहातों में पड़े हैं उनकी भक्ति, उनकी सेवा, उनपर प्रेम। इन छोटे देहातों के इतिहास कौन लिखेगा? बड़े शहरों के तो इतिहास लिखे जा चुके हैं। रोम एक बड़ी भारी नगरी हो गई। उसका इतिहास सुनो। लेकिन छोटे गांवों का इतिहास जब कोई लिखने बैठेगा तब उसको पता चलेगा कि ये गाँव दीखने में तो छोटे छोटे हैं लेकिन अति प्राचीन

काल से चले आ रहे हैं। ये देहात ही हिंदुस्तान की रगें हैं, असलियत हैं, आत्मा हैं। हिंदुस्तान की जो संस्कृति और सभ्यता है वह देहातों में देखने को मिलती है। आज भी हमारी पुरानी सभ्यता जितनी हम देहात में पाते हैं उतनी बड़े शहरों में नहीं पाते। एक मिसाल देता हूं। कल हमारी सभा एक शहर में हुई और आज की सभा देहात में हो रही है। कल की सभा में तो क्या शोर ही शोर मचा था। आज यहां भी छोटे बच्चे हैं लेकिन सारे शांति से सुन रहे हैं। ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यही है कि प्राचीन काल से हमारी जो सभ्यता चली आ रही है उसका अंश देहातों में मौजूद है। देहातों में आप देखेंगे कि वहां के लोग बहुत दीन बन गये हैं, खाने को भी उनको पूरा नहीं मिलता। लेकिन साथ साथ यह भी देखेंगे कि किसी के घर पर अगर भूखा आदमी पहुंच जाय तो किसी-न-किसी तरह उसको खिला ही देते हैं। उसका आदर करते हैं। गरीब से गरीब के घर में भी अतिथि का सत्कार पहले से आज तक होता आया है। इसका अर्थ यही है कि भारत की संस्कृति और भारत की आत्मा देहात में है। देहातों के काम करने के औजार भी करीब करीब पुराने जमाने के ही हैं। पुराने जमाने का ऋषि अगर आज देहात में आ जाय तो देहातियों की पोषाक में वह जरूर फरक देखेगा, लेकिन उसके जमाने की भावना का अंश वह आज देहातों में जरूर देखेगा, इसमें संदेह नहीं है।

देहात की करुण हालत

लेकिन आज इन देहातों में किसी को कुछ आकर्षण ही नहीं है। न यहां कोई मजा है, न यहां कोई सिनेमा है और न और कोई समाँ है। यहां कुछ है ही नहीं। शहर का आदमी यहां आता है तो कहता है यहां कुछ सूझता ही नहीं। देहातों में से भी बुद्धिमान लोग शहर में जा कर रहने लगे हैं। अगर कभी देहात में आते हैं तो उनकी जो कुछ इस्टेट यहां पड़ी होती है उसको देखने या यहां से कोई चीज उठा ले जाने के लिये आते हैं। लेकिन अपनी सारी अकल वह शहर को समर्पित कर देता है। अगर इस तरह देहात का धन, देहात की अकल शहर में चली जाय तो सारे देहात कंगाल हो जायेंगे और मिट जायेंगे। शहरों की आबादी बढ़ रही है। बीस साल पहले वर्धा शहर बीस हजार आबादी का था। अब कहते हैं कि चालीस हजार का हो गया है।

देहात का सर्वांगी विकास

इसलिये सर्वोदयवालों का काम है देहात की चिंता करना, उनकी देख-भाल करना। यह किस तरह होगा? देहातियों के जो उद्योग हैं वे उनके हाथ में रखने चाहिये। देहात के कुछ उद्योग ऐसे हैं जो उनके हक के हैं। वे अगर उनसे कोई छीन लेगा तो उसके खिलाफ बगावत करनी चाहिये और कहना चाहिये कि ये हमारे उद्योग हैं, हम नहीं छोड़ेंगे। जिन उद्योगों का कच्चा माल देहात में होता है उनका पक्का माल करने का उद्योग देहात में ही होना चाहिये। सिर्फ किसानी से याने

खेती से किसानों का कारोबार नहीं चलेगा। खेती के साथ गोसेवा का काम, कपड़ा बनाने का काम, कोल्हू चलाने का काम, गुड़ बनाने का काम, मकान बनाने का काम, यह सारा देहात में बनना चाहिये। ऐसा होगा तभी देहात ताजा-तवाना होंगे और दुनिया के सामने हिंदुस्तान हिम्मत के साथ खड़ा रहेगा।

देशकी की रक्षा देहाती ही कर सकेंगे

देहात अगर क्षीण होते गये तो अपने देश की रक्षा सिर्फ शहरवालों के भरोसे नहीं हो सकेगी। देश के लिये मर मिटने का प्रश्न आयेगा तब देहात के लोग ही मरने के लिये तैयार होंगे। क्योंकि अपने वतन का खेती का अभिमान और उसकी रक्षा करने की तीव्र वासना देहात को ही हो सकती है। क्योंकि देहातवाले जमीन से चिपके हुए हैं। हिंदुस्तान जैसा देश अपनी रक्षा के लिये अगर सिर्फ शहरवालों पर निर्भर रहा तो खतरे में रहेगा। इसकी रक्षा तो देहातियों से ही होगी। इसलिये सर्वोदय वालों ने यह संकल्प किया है कि हम देहातियों की सेवा करेंगे। और यही आप को कहने के लिये मैं आपके सामने उपस्थित हुआ हूं। भाइयो, सर्वोदय का विचार देहातियों की दृष्टि से थोड़े में मैंने आपके सामने रख दिया है।

पाटणबोरी, (जि० यवतमाळ)
१३-३-५१

सातवाँ दिन—

: ११ :

आत्म-जाग्रति से ही दुख मिटेगा

हरिनामसंकीर्तन का कार्यक्रम

आप लोग शायद जानते हैं कि हम लोग पैदल निकल पड़े हैं और हैद्राबाद में सर्वोदय संमेलन के लिये जा रहे हैं। जब मैंने पैदल चलने का सोचा तो एक भाई ने पूछा, "एक दिन के काम के लिये आप एक महीना लगा रहे हैं तो इस बीच आपका क्या कार्यक्रम रहेगा।" मैंने जवाब दिया, "मेरा कार्यक्रम तो यही रहेगा कि मैं हरिनाम लूं और सब को लेना सिखाऊं।" यह जवाब मैंने इसलिये दिया कि मैं अपने में सिवा राम-नाम लेने के और कोई ऐसी ताकत नहीं देखता हूं कि जिससे आपका काम बन सके।

अनेक धर्म, अनेक उपासनायें

आज हमारे देश के सामने बहुत बड़ी समस्यायें हैं। यह आश्चर्य की बात भी नहीं है। हमारा देश बहुत बड़ा है। फिर हमारी आजादी को भी अभी कितने साल हुए हैं? जिम्मेवारी एकाएक आ पड़ी इसलिये हमारे देश की नौका गहरे पानी में आ पड़ी। इन सबका हल एक राम-नाम के सिवा और किसी मानवी प्रयत्न में है, ऐसा मैं नहीं मानता हूं।

आखिर हरिनाम का क्या मतलब है ? जो हरिनाम लेगा वह और कोई नाम नहीं ले सकता । हमारे संतों ने हमें सिखाया है कि भाई, परमेश्वर की उपासना और पैसे की उपासना दोनों बातें साथ नहीं चल सकतीं । यदि आप अपने मन में परमेश्वर को स्थान देते हैं तो फिर दूसरी किसी चीज को आपके मन में स्थान नहीं हो सकता । हमारे यहां कई प्रकार के भेद पड़े हैं । इन्होंने हमारा रास्ता रोक रखा है । अगर ये मिटते हैं तो हमारा रास्ता साफ हो जाता है, और देश एक हो जाता है । हमारे देश में धर्म अनेक हैं यह बात दुख की नहीं है बल्कि सौभाग्य की है । जहां अनेक धर्मों की सम्मिलित उपासना होती है वहां धर्मों की यह विविधता देश के विकास में मददगार ही होती है । हिंदुस्तान के विकास में यहां के विविध धर्मों ने काफी मदद पहुंचाई है । भिन्न भिन्न धर्मों के जरिये एक परमेश्वर का नाम हम लें तो हजारों भेद मिट सकते हैं ।

हरिनाम में भेद मिटाने की शक्ति

एक दूसरे की भाषाओं का हमें अध्ययन करना चाहिये । हमारे विविध साहित्यों में अनेक खूबियां भरी हैं । लेकिन यहां तो एक दूसरे की भाषा का भी द्वेष शुरू हुआ है । कोई भी साहित्य द्वेष पर नहीं टिक सकता । इसी तरह प्रांत-भेद, प्रदेश-भेद, पक्ष-भेद भी हम में हैं । हिंदुस्तान में दुख तो सब तरफ पड़ा है । हमें जरूरत है सिर्फ सेवा में लग जाने की । पक्ष भेद आदि से सुरक्षित रहने की तरकीब अगर कोई है तो वह भगवान का नाम ही है । मैं लोगों को यह सुनाऊंगा कि हम सारे भगवान के पैदा किये हैं । वे

परमपिता हैं और हम सब उनके पुत्र हैं। हम अगर आपस में लड़ेंगे तो उनको बहुत दुख होगा। "अमृतस्य पुत्राः" सब के सब अमृत के पुत्र हैं। देह को क्या देखते हो? आखिर सब को खाक में ही मिलना है। फिर कौन सी खाक ब्राह्मण की है, कौनसी हरिजन की है या और किसी की है, यह पहचाना भी नहीं जायगा। आत्मा एक है, उसीका ध्यान रखो। हम देह में इसीलिये आये हैं कि अपने पड़ोसियों की, दीनों की और सबकी सेवा हम करें और परस्पर प्रेम करें। इसी में मानवदेह की सार्थकता है। और यही हरिनाम का अर्थ है।

और जो हरिनाम लेनेवाले हैं उनको सेवा में लग जाना है। पानी निकलता है समुद्र की ओर जाने के लिये; लेकिन रास्ते में जो कुछ सेवा वह कर सकता है करते हुए जाता है। समुद्र तक पहुंचने में अगर वह कामयाब रहा तो वहां तक पहुंच जाता है! अगर न पहुंच सका तो रास्ते में ही खतम हो जाता है। वैसे हमारी कोशिश यही होनी चाहिये कि हमारी जो भी ताकत है उससे हम दीन-दुखियों की सेवा करें।

दोनों हाथों का उपयोग करें

वैसे हिंदुस्तान में क्या कम है। जमीन पड़ी है, कितनी ही नदियां हैं, फिर भी हम भीख मांगते हैं। न खाने को अन्न है और न पहनने को कपड़ा। मेरी समझ में नहीं आता कि परमेश्वर ने हमें दो हाथ दिये हैं तो हमें हाथों से काम करने में क्या आपत्ति है? मानव की ही यह विशेषता है कि उसको भगवान ने दो हाथ

दिये हैं, जिससे कि वह कर्मयोग साध सके। स्वर्ग में देवता सुख ही सुख भोगते हैं, तो पृथ्वी पर जानवर दुख ही दुख भोगता है। जहां केवल भोग ही भोगना है वहां योग कैसे सधेगा? मनुष्य योनि में कर्मयोग की साधना हो सकती है इसीलिये देव योनि और पशु योनि से मानव योनि श्रेष्ठ समझी गयी है। तो भगवान ने हमें दो हाथ दिये यह उसकी बहुत बड़ी देन है। उनका हम उपयोग करेंगे तभी हमारे दुख मिटेंगे।

स्वराज्य के सही माने क्या हैं?

लोग कहते हैं स्वराज्य आ गया। क्या किसी पार्सल से आया है? स्वराज्य तो अपना निज का होता है। अपनी कमाई का होता है। स्वराज्य आया इसका अर्थ इतना ही है कि उजाला हो गया। अब काम करने में सहूलियत हो गई। लेकिन हम अगर काम ही न करें तो सिर्फ उजाले से क्या होनेवाला है? स्वराज्य नहीं था तब हम जिम्मेवारी अधिक महसूस करते थे। अब सभी कहने लगे हैं कि सब कुछ सरकार को ही करना चाहिये। मैं पूछता हूं कि सरकार आप से भिन्न है क्या? आप जिसे चाहते हैं उनको वोट दे कर चुन लेते हैं। आप अगर मजबूत बनेंगे तो आप-की सरकार मजबूत बनेगी। और आप दुर्बल रहे तो आप की सरकार भी दुर्बल ही रहेगी।

लोग कहते हैं कि अब तक हमने बहुत काम किया अब कुछ आराम करने दो। मैं कहता हूं आराम कैसा? क्या पौर्णिमा आ गई है? अभी तो अमावस्या खतम हुई है और चांद धीरे धीरे

बढ़ेगा। कुछ लोग कहते हैं अब तक हमें कांग्रेसवालों से आशा थी अब आप सर्वोदयवालों पर आशा रखी है। यह कितना बड़ा भ्रम है। सर्वोदय समाज कोई अमृत की पुड़िया तो नहीं है जिसे खा लिया और सर्वोदय अपने आप हो गया। हमको ऐसा व्रत लेना होगा कि हमारे जीवन के लिये हम दूसरे की सेवा नहीं लेंगे, बल्कि हो सकेगी उतनी दूसरे की सेवा करेंगे। ऐसा जो करते हैं वे सर्वोदय-समाज के सेवक बनेंगे। सर्वोदय-समाज सब का है। वह किसी प्रकार की शहादत नहीं मांगता। जो कहता है कि मुझे सर्वोदय समाज के उसूल मान्य हैं वह सर्वोदय समाज का सेवक है। कोई शराबी भी अगर सर्वोदय की बात मान कर शराब पीना कम कर देता है तो वह भी सर्वोदय-समाज का सेवक है।

आत्मा की पहचान ही सब दुख दूर करेगी

किसी ने मुझे बताया कि ढाई साल पहले यहां रजाकारों का बहुत जुल्म था। अब वह चला गया है फिर भी हमें दुख है। ऐसा होता ही है। जब तक मनुष्य की निज की आत्मा जाग्रत नहीं होती तबतक एक दुख मिटता है तो दूसरा शुरू होता है, पेशवाओं के राज में लोग दुखी थे। उनके बाद अंग्रेजों का राज आया। उनका पहला गवर्नर माउंट एलफिन्स्टन हुआ। उसकी व्यवस्था में हमारे लोगों ने सुख समझा। लोगों ने देखा कि सारे काम इनके जमाने में समय पर चलते हैं, व्यवस्था अच्छी है। राज कानून से चलता है। यह सब देख कर लोग बड़े खुश हुये, लेकिन थोड़े ही दिनों में लोग दुखी हो उठे। डाक्टरी इलाज का

ऐसा ही है । एक बीमारी के लिये दवा देते हैं, वह बीमारी अच्छी हुई ऐसा लगता है इतने में दूसरी बीमारी शुरू होती है । हिंसा में ऐसा ही होता है । रजाकारों से हमको किसने छुड़ाया । पुलिस ने और हथियारों ने । उससे हम तो पराधीन ही रहे । जीवन में कुछ परिवर्तन ही नहीं आया । इस तरह से जीवन सुखी नहीं होगा ।

सर्वोदय के कार्यक्रम में रस क्यों नहीं ?

लोग कहते हैं कि सर्वोदय के कार्यक्रम में रस नहीं आता । तो अब मैं क्या प्रोग्राम बताऊं ? पाकिस्तान से लड़ाई छेड़ने का प्रोग्राम दूं ? लड़ाई के नाम से लोगों में उत्साह आता है, लेकिन वे यह नहीं सोचते कि फौज पर देश का पचहत्तर फी सदी से अधिक खर्च होता है । तो फिर गरीबों की सेवा कैसे कर सकेंगे ?

सारे मानव-सेवक बनें

भाइयो, मुझे इतना ही कहना है कि आप सब भेद भूल जाँय । आड़े गंध और खड़े गंध, भस्मी और बिना भस्मी, सर्वोदय वाले और बिना सर्वोदयवाले ये सब भेद मिटा कर आप एक भाव रखिये कि मैं मानव हूं और मानव का सेवक हूं ।

आदिलाबाद (निजाम स्टेट)
१४-३-५१

आठवाँ दिन—

: १२ :

भगवान का ही काम और नाम

रास्ता छोड़ कर क्यों आया ?

मैं तो जा रहा था वर्धा से हैद्राबाद। लेकिन रास्ता छोड़ कर इधर आपके गाँव की तरफ आ गया। उसका कारण यह है कि इधर मांडवी में कस्तूरबा ग्रामसेवा केंद्र है। महात्मा गांधीजी की धर्मपत्नी कस्तूर बा का नाम तो आप सबने सुना ही है। उनके स्मरण में जगह जगह संस्थायें खोली गई हैं जो ग्रामीण स्त्रियों की सेवा कर रही हैं। मांडवी में जो बहन काम कर रही है उसने इच्छा प्रकट की कि मैं उसका काम देखने के लिये वहाँ जाऊं। इसलिये मैं वहाँ जा रहा हूं।

आपके कामों से प्रसन्नता

मुझे यहाँ इस बात की बहुत खुशी हुई कि आप लोगों ने भगवान के भजन सुनाये। इतने छोटे से गाँव में हरि-चर्चा रोज चलती है यह बहुत अच्छी बात है। हरि-चर्चा हर गाँव में चलनी चाहिये और रोज चलनी चाहिये।

दोपहर को मैं आपके गाँव में घूम आया। लोगों के घरों में भी हो आया। सौ साल की एक बूढ़ी स्त्री मिली। उसे बड़ी खुशी हुई।

आपने एक बड़ा अच्छा काम किया है। यहाँ का कुआँ और हनुमानजी का मंदिर सबके लिये, हरिजनों के लिये भी, खोल दिया है। यह काम मुझे बहुत अच्छा लगा। भगवान के सामने भेद-भाव रखना गलत बात है। हरिजनों के साथ छूत-छात रखना और उन्हें मंदिरों में आने से रोक-टोक करना अच्छी बात नहीं है। इसलिये आपने जो काम किया है वह बहुत अच्छा है।

फिर आप लोगों ने पानी आदि का छिड़काव देकर यह प्रार्थना की जगह साफ कर ली यह भी बहुत अच्छा किया। इससे आप लोगों को शिक्षण भी मिला।

पशु बलिदान गलत चीज

मैंने सुना कि यहाँ आप लोगों के दो देव हैं। एक हनुमानजी हैं और दूसरी है पोचम्मा देवी। यह देवी कौन है? उसे तो मुरगी चाहिये। बकरा भी चाहिये। क्या अपने बच्चों को खानेवाला भी कोई देव हो सकता है? इसलिये आप एक ही देवता की पूजा करें। और सब देव झूठे हैं। उसके नाम पर बकरे और मुरगी काटना धर्म नहीं हो सकता।

बुनकर क्यों नहीं?

मैंने और एक बात देखी। इस गाँव में बढ़ई, लुहार, चमार कुम्हार तो हैं। लेकिन बुनकर नहीं है। मैं परेशान रह गया। कपड़ा तो आप सबको चाहिये। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सबको। इतने पुरुष यहाँ बैठे हैं सब कपड़ा पहने हैं। लेकिन सारा कपड़ा खरीदा

जाता है यह शरम की बात है। गाँव का धन इस तरह बाहर भेजना ठीक नहीं है। मैंने यह भी सुना कि यहाँ स्त्रियाँ दोपहर में खेती पर नहीं जातीं। सिर्फ सबेरे ही खेत पर जाती हैं। याने उनके पास वक्त रहता है। उन्हें कातना सिखाया जाय तो वे कातेंगीं। भगवान ने मनुष्य को दो बड़ी भारी शक्तियाँ दी हैं। एक वाणी, दूसरी हाथ। वाणी से भगवान का नाम लेना चाहिये, हाथ से भगवान का काम करना चाहिये।

वैसा आप करेंगे तो आप जो भजन करते हैं वह कृतार्थ होगा। भगवान आप सबको ऐसी प्रेरणा दें, ऐसी प्रार्थना है।

कुचलापुर अर्थात् कौसल्यापुर
१५-३-५१

नौ वां दिन—

: १३ :

लघु-आरंभ का दीर्घ फल

ग्रामसेविका का प्रेमाग्रह

मैं आज यहां आदिलाबाद से आया हूं। वर्धा से हैद्राबाद जा रहा हूं। आप का गाँव रास्ते में तो नहीं था लेकिन आपके यहां की सेविका पार्वती का आग्रह रहा। उसने कहा, "हम यहां देहात में काम कर रहे हैं। आप अभी न आये तो फिर कब आयेंगे कह नहीं सकते। इसलिये अभी ही चलिये।" मैंने सोचा हमारी लाड़ली लड़की आग्रह कर रही है तो हो आऊं। इससे मुकाम पर पहुंचने में चार दिन देर हो जायगी।

यह काम एक बड़े वृक्ष का पौधा है

यहां की बालवाड़ी और आरोग्य केंद्र आज सुबह हम देख आये। यह केंद्र छोटा है लेकिन वह पौधा है। ज्ञानदेव कहते हैं, "इवलें से रोप लावियेलें द्वारी त्याचा वेल गेला गगनावरी" छोटा-सा पौधा लगाया था लेकिन उसकी बड़ी बेल बन कर सारे आकाश पर छा गई। वैसे ही छोटे पौधे की अगर आप लोग ठीक देखभाल करेंगे तो उसको आगे फूल और फल लगेंगे। बच्चा पैदा होता है तब छोटा होता है। लेकिन माँ जानती है कि वह

आगे चल कर बड़ा होनेवाला है और उसकी हिफाजत करती है, उसकी सेवा करती है। वैसे आप भी इस केंद्र की कीजिये।

कस्तूरबा की महत्ता

इस केंद्र का नाम है कस्तूरबा ग्रामसेविका केंद्र। कस्तूरबा गांधीजी की पत्नी थी यह तो आप जानते ही हैं। जैसे गांधीजी पढ़े लिखे थे वैसी कस्तूरबा नहीं थीं। लेकिन उनका भाग्य बड़ा था। गांधीजी और कस्तूरबा ये नाम आज जैसे सार्वभौम हो गये हैं वैसे ही वसिष्ठ और अरुंधती के नाम थे। आज भी विवाह-विधि में वधू और वर को उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके खड़ा करते हैं और अरुंधती की तरफ इशारा करते हैं। उत्तर दिशा में वसिष्ठ का तारा है और पास ही चार अंगुलियों के फासले पर अरुंधती का छोटा-सा तारा है। इन दो तारकाओं के दर्शन करके उनको नमस्कार कराने की विधि आज भी विवाह में चलती है। कौन वसिष्ठ और कौन अरुंधती ? लेकिन वसिष्ठ के साथ अरुंधती का नाम भी अमर हो गया है। देह के पास छाया होती है। लेकिन मनुष्य छाया की ओर ध्यान नहीं देता है। फिर भी छाया मनुष्य को छोड़ती नहीं है। अरुंधती का ऐसा ही था। उसका व्रत था कि पति के साथ रहना, सुख में या दुख में। वह संकट में पड़ेगा तो उसके पीछे संकट में पड़ना, और वह स्वर्ग में जाय तो उसके पीछे स्वर्ग में जाना। कहीं न ठहरते हुए जाना इसी व्रत के कारण तो उसका नाम "अरुंधती" पड़ा। ऐसा ही दूसरा नाम सीता का है। हम "राजा राम" के साथ साथ "सीता राम" भी कहते हैं।

रामचंद्रजी वनवास के लिये निकले तो वह भी उनके पीछे निकली। रामचंद्रजी ने कहा, "पिताजी ने तुझे तो वनवास नहीं कहा है।" सीता ने जवाब दिया, "आप सुखोपभोग के लिये कहीं निकलते तो शायद मैं न आती, लेकिन आप जंगल में जा रहे हैं इसलिये मैं आये बगैर नहीं रहूंगी।"

इन उदाहरणों के जैसे ही गांधीजी और कस्तूरबा थीं। जहां जहां गांधीजी गये वहां वे गयीं। और आखिर सरकार के साथ सत्याग्रह के युद्ध में लड़ते हुए गांधीजी के साथ जेल गयीं और वहीं गांधीजी की गोद में उन्होंने प्राण छोड़ दिये। कस्तूरबा के स्मरणार्थ यह काम शुरू हुआ है। तो आप लोग इस काम में सहयोग दें और इस केंद्र से लाभ उठायें ऐसी मेरी आप से प्रेमपूर्वक प्रार्थना है।

मांडवी, (जि. आदिलाबाद)
१६-३-५१

दसवां दिन—

: १४ :

सेवा ही तीर्थ-यात्रा है

गाँव की फिक्र गाँववाले ही करें

मैं आज आपका गाँव घूम आया। यहां काफी शक्ति है। दो-चार घरों में कातना चलता है। हर घर में क्यों नहीं चलता? आपके गाँव में कपास बहुत होती है। पहले हमारे यहां सब कातते थे और खेती भी करते थे। तब खेती ज्यादा थी और लोग कम थे। इसलिये खेती में ज्यादा समय जाता था। आज खेती कम है और लोग ज्यादा हैं। फिर कातने के लिये समय क्यों नहीं मिलेगा? मैं आप लोगों को दोष नहीं देना चाहता। यह स्थिति हर गाँव में है। इसे बदलने के लिये हर गाँव में कार्यकर्ता चाहिये। अब कार्यकर्ता हर गाँव में बाहर से कैसे आयेंगे? इसलिये गाँव में से ही कार्यकर्ता निर्माण होने चाहिये।

हम लोगों को एक आदत पड़ गई है कि हम अपने परिवार के बाहर नजर नहीं देते। घर का कचरा पड़ौसी के दरवाजे पर डालते हैं। घर के बरतन साफ रखेंगे लेकिन गाँव का कुआं साफ नहीं रखेंगे। सोचते हैं कि वह तो सब का है मैं क्यों फिक्र करूं? लेकिन चेचक एक को भी हो जाय तो सारे गाव में फैलती है। इसलिये सारा गाँव मेरा और सारे गाँव वाले मेरे इस तरह सोचेंगे तो

गांव वैकुंठ बन जायगा। लेकिन आज तो मैं इतना ही चाहता हूं कि हर गांव में कम-से-कम एक कार्यकर्ता निर्माण होना चाहिये। हिंदुस्तान में यह खूबी है कि जिस गांव में कोई अच्छा आदमी होता है उसके पीछे लोग चलते हैं। मांडवी में अभी मैं गया था। वहां एक अच्छे भाई हैं तो लोग उनके पीछे जा रहे हैं। आप से मेरी प्रार्थना है कि आप अपने गांव के बारे में आज से ही सोचना शुरू करें। जिस गांव में लोग सारे गांव का नहीं बल्कि सिर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं वह गांव नहीं बल्कि स्मशान है।

दुखियों की सेवा कीजिये

लोगों को एक ही स्थिति में समाधान नहीं होता। मन की शांति के लिये वे तीर्थ-यात्रा करते हैं। लेकिन हम अगर एक दूसरे की सेवा करेंगे और चिंता करेंगे तो तीर्थ-यात्रा की जरूरत नहीं रहेगी। खाने का आनंद तो पशु को भी होता है। लेकिन खिलाने का संतोष मनुष्य को ही होता है। आपके गाँव में एक भी दुखी आदमी नहीं रहना चाहिये। दुखी आदमी किस जाति का है यह भी नही देखना चाहिये। दुखी लोगों की अलग जाति नहीं होती। वह दुखी है यही उसकी जाति है। वैसे ही पुण्यवान लोगों की भी जाति नहीं होती। आप ने सुना है कि साधु संत सब जातियों में हो गये। हम महात्माओं की जाति नहीं देखते। सब महात्मा महात्मा हैं। वैसे सब पापी पापी ही हैं। मरने के बाद परमात्मा यह नहीं पूछेगा कि तुम ब्राह्मण हो या

रेड्डी। वह यही पूछेगा कि तुमने पाप किया है या पुण्य। यह जो ढबू पैसा आप कमा रहे हैं वह साथ नहीं जानेवाला है। इसलिये जिसके पास जो भी धन है वह लोगों की सेवा में लगा दे। तभी आप भगवान के सामने खड़े रह सकेंगे।

तलमगु (जि० आदिलाबाद)
ता० १७-३-५१

ग्यारहवाँ दिन—

: १५ :

ग्रामोद्योग न छोड़ें

पक्के रास्ते के खतरे

हम लोग वर्धा से हैद्राबाद पैदल जा रहे हैं। आप लोग भी यात्रा के लिये जाते हैं। यात्रा के लिये पैदल ही जाने का रिवाज है। हमारा रास्ता तो आदिलाबाद से इस गाँव से हो कर जाता है। लेकिन रास्ता छोड़ कर मैं मांडवी हो आया। आदिलाबाद जिले में जंगल ज्यादा हैं। देहातों के रास्ते भी अच्छे नहीं हैं। बहुत लोगों को लगता है कि अच्छे रास्ते न होना बड़े दुःख की बात है। शहर वाले सोचते हैं कि रास्ते अच्छे बनाना ही पहली सुधार की बात है। हमारे गाँव वाले भी भोले होते हैं। कहते हैं कि हां रास्ते बनने चाहिये। लेकिन मैं सोचता हूं कि देहातों में रास्ते बन जायेंगे तो उनका कल्याण होगा या अकल्याण? रास्ता अच्छा बन जाता है तो सुभीता हो जाता है सही। लेकिन किन लोगों का सुभीता होता है! सब से ज्यादा सुभीता शहरवालों को होता है। वे यहां आसानी से आ सकते हैं और देहातों को लूट सकते हैं। देहातों में रास्ते नहीं बनने चाहिये, यह मुझे नहीं कहना है। लेकिन रास्ते बनने पर क्या आपत्ति आती है यह मैं समझा रहा हूं। आप के नजदीक के एक गांव में मैं कल घूम आया था।

वहां मैंने देखा कि कई उद्योग चल रहे हैं। रंगारी का काम चल रहा था। वहां रास्ता अच्छा नहीं था इसलिये वह रंगारी का धंधा चल रहा है। लेकिन रास्ता पक्का बन जाने के बाद रंगारी का धंधा जिंदा नहीं रहेगा। कुछ देहातों में चरखे चलते हुए भी देखे। लेकिन मोटर-रोड हो जाने पर वे कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। कुछ घरों में हाथ की चक्की चलती हुई देखी। मैं बहुत खुश हो गया। लेकिन रास्ता बनने के बाद कोई पूंजीवाला यहां आ कर मिल की चक्की शुरू कर देगा और सारे देहात वाले अपनी चक्कियाँ छोड़ कर उस मिल के गुलाम बनेंगे।

पीसने का व्यायाम

एक गाँव की बात है। वहां एक मुसलमान रहता था। उसकी बीबी बीमार हो गई। उस आदमी की मुझ पर श्रद्धा थी। उसने मुझे बुला लिया और क्या इलाज करना चाहिये इसके संबंध में मेरी सलाह मांगी। मैंने देखा कि उस बहन को सिवा बदहजमी के और कोई बीमारी नहीं है। मैंने पूछा कि घरमें आटा कौनसा आता है? जवाब मिला कि मिल का आता है। फिर मैंने सलाह दी कि आप एक चक्की घर में लगा दीजिये और बड़ी फजर उठ कर थोड़ा पीसते जाइये। उस आटे की रोटी खाते जाइये। सारा रोग दूर हो जायगा और आज से दुगुनी भूख लगेगी। उसने वैसा ही किया। वह बहन धीरे धीरे चक्की पर पीसने लगी। पंद्रह-बीस दिनों के बाद मैं उस बहन को देखने गया और पूछा कि अब तबियत कैसी है? तो उसने जवाब दिया कि अच्छी है।

हाथ के आटे की रोटी जब से खाना शुरू किया तब से भूख बढ़ी। रोटी भी बहुत बढ़िया लगती है। पीसने का व्यायाम होता है तो तबियत भी अच्छी रहती है। लेकिन मोटर-रोड बनने पर मिल आते ही हम हाथ से पीसना बंद कर देते हैं। हम आलसी बनते हैं। कौन जल्दी उठेगा? फिर मिल सस्ता भी तो पीस देती है। लोग अब छः बजे उठने लगे हैं।

रास्ता होने पर भी उद्योग न छोड़ो

रास्ते आज नहीं कल होने ही वाले हैं। बिना रास्ते के यह जिला पिछड़ा हुआ माना जायगा। लेकिन रास्ते होने पर भी आप अपनी अकल कायम रखेंगे तो आपका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैं आपको एक हिसाब बताता हूं। आप सबके बदन पर कपड़ा है। यह सारा आप मोल लेते हैं। हर आदमी के पीछे रोज की आधा सेर ज्वार हम पकड़ें और एक कुटुंब में पांच आदमी पकड़ें तो साल भर में पांच खंडी ज्वार लगेगी। साठ रुपये खंडी का भाव पकड़ें तो तीन सौ रुपये हो गये। अब कपड़े का हिसाब करें। एक कुटुंब के लिये आज के भावसे, ब्लैक मार्केट के कारण सौ रुपये का कपड़ा साल भर में लगता है। याने ज्वार के बाद कपड़े का ही खर्च अधिक होता है। अब यह सारा कपड़ा अगर हम बाहर से खरीदेंगे तो हमारी गृहस्थी कैसे चलेगी और दारिद्र्य भी कैसे मिटेगा?

आप जरा सोचें कि हमने पहले क्या किया था? हिंदुस्तान की मिलों से योरप की मिलों का कपड़ा बहुत सस्ता बिकता था।

यहां की मिलों का कपड़ा पड़ा रहने लगा। तब हमने विलायत के कपड़े का सस्ता होते हुये भी बहिष्कार किया। तो अब हम भी मिल का कपडा, सस्ता होने पर भी, नहीं लेंगे ऐसा व्रत क्यों नहीं लेते ? ऐसा व्रत अगर नहीं लेंगे तो फिर देहात में कौनसा उद्योग रहेगा ? सारे देहात के उद्योग अगर शहरवाले छीन लेंगे, और हम भी नुल्य बन कर कहेंगे कि बहुत अच्छा हुआ सस्ता मिलने लगा, आप शहरवाले सेवा ही कर रहे हैं, तो फिर अनाज भी बाहर से लेने लगेंगे क्या ? कुछ लोग तो आज कह भी रहे हैं कि अनाज पैदा करने की अपेक्षा तंबाकू पैदा करना अधिक फायदेमंद है। लेकिन तंबाकू से यद्यपि पैसा मिलेगा फिर भी अन्न कैसे मिलेगा ? खाने के लिये अन्न चाहिये इसलिये वह गाँव में ही पैदा करना चाहिये। उसी तरह पहनने के लिये कपड़ा चाहिये तो वह भी गांव में ही तैयार करना चाहिये। घर में कपास होती है। उसको धुन कर पूनी बना लेनी चाहिये। घर में ही कातना चाहिये और बुनना भी घर में ही चाहिये। बुनना कोई कठिन काम नहीं है। ऐसा होगा तो किसान के घर में उद्योग दाखिल होगा और उसका घर सुखी होगा। फिर झगडे भी नहीं होंगे।

आज जहां देखो वहां झगड़े ही झगड़े हैं। खाने को पूरा नहीं मिलता इसके कारण ये सब झगड़े हैं। हमें जो चीजें हर रोज लगती हैं वे अगर हम घर पर ही तैयार कर लेंगे तो हमें कोई लूटेगा नहीं और हम भी किसी को लूटेंगे नहीं। लेकिन इसके लिये पराक्रम करना पड़ेगा।

हाथ-चक्की के चार फायदे

मेरी आप से प्रार्थना है कि रास्ते होने पर भी आप अपने घर के उद्योग मत छोड़िये। आटा घर पर ही पीसिये। मिल हो जाने पर भी वहां नहीं पिसायेंगे ऐसी शपथ लीजिये। आप कहेंगे दो ही पैसे में पिस कर मिलता है। लेकिन रोज के दो पैसे याने महीने में एक रुपया और साल-भर में बारह रुपये हो जाते हैं। आप का गांव ढाई सौ घरों का होगा तो साल भर में तीन हजार रुपये चले जायेंगे।

दूसरी बात यह होगी कि रोज का आपका व्यायाम चला जायगा। आज अपने देहात के लोग कमजोर हैं। और पीसने की आदत छूट जायगी तो बाद में वह काम बहुत कठिन मालूम होगा।

तीसरी बात यह कि मिल का आटा हम छः-छः दिनों तक खाते रहेंगे। ताजे आटे में और हाथ-चक्की पर पीसे हुए में जो ताकत है वह मिल के और बासे आटे में नहीं है।

चौथी बात यह कि हम आलसी बनेंगे, देर से उठेंगे। आज जो भगवान का नाम लेते हैं वह भी नहीं लेंगे। मुझे याद है कि मेरी मां सुबह जल्दी उठ कर करीब घंटा भर पीसती थी। और पीसते हुए भगवान का नाम लेती थी। हमारे संतों ने चक्की पीसते हुए गाने के लिये भजन और अभंग बनाये हैं। मेरी मां तुकाराम का अभंग गा कर पीसती थी। "पहिली माझी ओवी ओवीन जगत्र गाओीन पवित्र पांडुरंग"....(यह अभंग विनोबाजी ने पूरा गाकर सुनाया)।

तो अगर चर्खा बंद हुई तो ऐसे भजन भी बंद हो जायेंगे। इसलिये मुझे आप को सावधान करना है। आप की सेवा करने के बहाने बाहर से लोग आयेंगे और आप लूटे जायेंगे इसलिये आप अपने गाँव के धंधों को कभी भी मत छोड़िये यही मुझे कहना है।

गुडी हतनूर, (जि० आदिलाबाद)
१८-३-५१

बारहवां दिन—

: १६ :

व्यापार सेवा के लिए

हिंदुस्तान के बाजार का बिगड़ा रूप

आप इतने लोग दूर दूर के गावों से यहां इकट्ठे हुए हैं यह देख कर मुझे खुशी होती है। मुझे इस गांव की कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन जिन लोगोंने कार्यक्रम तय किया उन्होंने यहां का मुकाम रखा, और यह अच्छा ही हुआ। क्योंकि आज यहां का बाजार था। दुनिया भर में बाजार कैसे चलता है वह तो दुनिया जाने! लेकिन हिंदुस्तान में जहाँ बाजार भरता है वहां झूठ ही झूठ का बाजार होता है। आज ही का किस्सा है। एक दूकान पर एक आदमी पुस्तक खरीदने गया। दूकानदार ने उसको वह पुस्तक चौदह आने में दीं। फिर वह आदमी दूसरी दूकान पर पहुंचा। वहां उसको वही पुस्तक दिखाई दी तो उसने उसके दाम पूछे। दूकानदार ने छह आने बताये। तो फिर वह आदमी पहली दूकान पर वापिस आया और दूकानदार से पूछने लगा कि इस किताब के तुमने चौदह आने कैसे लिये जब कि यह दूसरी दूकान पर तो छह आने में मिलती है? दूकानदार ने जवाब दिया, भाई, मैं तो व्यापारी हूं। मुझे जो दाम लेने थे मैंने लिये। तुमको अगर यह पुस्तक दूसरी दूकान पर छह आने में मिलती थी तो आप वहीं से खरीदते।

याने दूसरी दूकान पर नहीं खरीदा, यह आपका ही दोष है। दूकानदार का कोई दोष ही नहीं है। ऐसा सब हो रहा था। इतने में हममें से एक साथी वहां पर पहुंचा। उसने पूछा क्या बात है? उस आदमी ने कहा कि यह पुस्तक इस दूकानदार ने चौदह आने में दी जब कि दूसरी दूकान पर छह आने में मिलती है। हमारे भाई ने पुस्तक खोल कर दाम देखे और कहा, इस पुस्तक के दाम न चौदह आने हैं और न छह आने हैं बल्कि तीन आने हैं। वह कीमत उस पुस्तक पर छपी थी। उस तीन आने में दूकानदार का कमीशन आदि सब आ गया। इसलिये दूकानदार को उससे अधिक कीमत लेने का कोई हक नहीं था। फिर दूकानदार का और पुस्तक खरीदने वाले का झगड़ा शुरू हुआ। मैं इस बात को आगे बढ़ाना नहीं चाहता। हमारे बाजार कैसे होते हैं यह समझ लो "झूट ही लेना झूठ ही देना झूठ चबेना।"

व्यापारियों का धर्म

होना तो यह चाहिये कि व्यापारी सेवा का भाव रखें। व्यापार एक धर्म है। हमें शास्त्रकारों ने बताया है कि वैश्यों को व्यापार के धर्म का आचरण करना चाहिये। धर्म का मतलब लूटना नहीं होना, बल्कि सेवा करना होता है। जो चीज एक जगह नहीं मिलती है उसको दूसरी जगह से लाकर लोगों को देना और उसमें अपनी जो मेहनत लगी हो उसको जोड़ कर ठीक भाव से बेचना। इसका अर्थ है व्यापार।

मालिक को जाग जाना चाहिये

वास्तव में किसान मालिक है और व्यापारी सेवक है। तो सेवक कभी स्वामी से बढ़कर नहीं होता। जब हिंदुस्तान में मालिक गरीब है तो सेवक भी गरीब ही होना चाहिये। लेकिन बात उलटी हो गई है। मालिक गरीब बन गया है और सेवक श्रीमान बन गया है। और वह श्रीमान कैसे बना? मालिक को लूट कर। आज अगर उन सेवकों को कोई उनका धर्म सिखादे तो वे नहीं सीखेंगे। इसलिये अब मालिक को ही जाग जाना चाहिये। मालिक के जागने का मतलब यह है कि वह अपना आधार बाजार पर न रखे। मेरा तो विश्वास है कि अगर गाँववाले अपनी जरूरत की चीजें गाँव में बना लेंगे तो हर गाँव बादशाह बन सकता है। यह किसान क्या खरीदने के लिये आता है? उसको भाजी चाहिये तो क्या वह अपने खेत में भाजी पैदा नहीं कर सकता? आंगन में भी भाजी बन सकती है। कोई कपड़ा खरीदने आते हैं। गाँव में कपड़ा क्यों नहीं बन सकता है? अगर कपड़ा नहीं बन सकता तो कल आप रोटी भी बाजार से ही खरीदने लगेंगे। अगर इस तरह बनी बनाई चीजें खरीदते रहोगे तो लूट में से आपको कौन बचायेगा?

भगवान की व्यवस्था से सबक सीखो

हमें गांधीजी ने चरखा चलाने को कहा, और यही कहते कहते वह बूढ़ा मर गया। उनका वह संदेश अब भी सुनने लायक है। लोग कहते हैं अब तो स्वराज्य हो गया अब कातने की क्या जरूरत है? सरकार का काम है कि वह कपड़ा हमें दे। मैं कहता

हूं कि आप कल कहेंगे स्वराज्य आया है तो अब हम हल नहीं चलायेंगे, सरकार को हमें अनाज देना चाहिये। लेकिन स्वराज्य का यह मतलब नहीं है कि हम सारे काम छोड़ दें। दिल्ली के लोग बड़े हैं और बुद्धिमान हैं इसमें शक नहीं है। लेकिन उनसे भी परमेश्वर अधिक बड़ा और बुद्धिमान है। वह किस तरह हमारा पालन करता है देखो। उसने हमको हाथ दिये, पांव दिये, नाक दिया, कान दिये, और बुद्धि दी। और कहा कि अपने हाथों से काम करो, तुम्हारा पेट भरेगा। उसने थोड़ी थोड़ी बुद्धि हरेक को दी। अगर वैसा वह नहीं करता और बुद्धि का सारा खजाना वैकुंठ में ही रखता तो हमारा पालन वह कैसे कर सकता था? उस दशा में भगवान को चैन से नींद भी नहीं आती। लेकिन भगवान तो कहते हैं कि शेषशायी है और योगनिद्रा में सो रहा है। वह इसलिये सो सकता है कि उसने सब को अकल दी और काम करने की जिम्मेवारी का ढंग बताया। हम हाथों से काम करते हैं फिर भी अगर काम नहीं बनता है तो परमेश्वर की प्रार्थना करते हैं, और वह हमें मदद देता है। हम अगर हाथों से काम नहीं करते हैं तो भगवान भी मदद नहीं करता इसी तरह हम अगर हाथों से काम नहीं करेंगे तो दिल्ली की सरकार भी हमको कुछ मदद नहीं दे सकेगी।

सरकार खास प्रसंग के लिये है

आप कहते हैं कि अब स्वराज्य आ गया है तो हमें कुछ कर्तव्य ही बाकी नहीं है। सब सरकार करेगी। हरेक काम के लिये अगर हम सरकार पर अवलंबित रहेंगे तो वह स्वराज्य होगा या

गुलामी। अपने गाँव में हम शांति नहीं रखेंगे और हर समय पुलिस को मदद के लिये बुलायेंगे तो वह होनेवाली बात नहीं है। विशेष मौके पर पुलिस की हम मदद मांगें तो सरकार दे सकती है। बाकी हमारी रोज की शांति, हमारा अनाज, हमारा कपड़ा, हमारी सफाई, हमारा शिक्षण, सारा गाँव में ही करना चाहिये।

लोग कहते हैं कि सरकार हर गांव में स्कूल खोले। लेकिन सरकार के पास उतना पैसा नहीं है। अधिक कर देने के लिये आप तैयार नहीं हैं। मैं कहता हूं कि आप आपस आपस में क्यों नहीं सिखाते? जो थोड़ा बहुत पढ़ा हुआ है वह अगर रोज एक घंटा दूसरे को पढ़ायेगा तो सारा गाँव शिक्षित हो सकता है। मान लीजिये कि हजार लोक-संख्या के गांव में दस लोग पढ़े हुए हैं। वे अगर हर साल दस लोगों को पढ़ा देंगे तो एक साल में सौ लोग पढ़े-लिखे बन जायेंगे। और इस तरह दस साल में सारा गाँव पढ़ा-लिखा बन जायगा, इतनी यह आसान बात है। यही बात दूसरे कामों के बारे में भी है।

उद्धरेत् आत्मनात्मानम्

हमारे सब काम हमें खुद करने चाहिये। भगवान ने गीता में कहा है, "उद्धरेदात्मनात्मानं" खुद का उद्धार खुद को ही करना चाहिये। दूसरों पर भरोसा रख कर मत बैठो। गाँव का राज्य गाँव वालों को स्थापित करना है। जो स्वराज्य दिल्ली में या आदिलाबाद में है वह आप को काम नहीं देगा। आप को वही स्वराज्य काम देगा जो आप के गांव में बनेगा। यहीं देखो न। बाहर से मनुष्य

के शरीर को वैद्य तब तक ही मदद दे सकता है जब तक शरीर में ताकत बची हुई होती है। अगर शरीर की ताकत खतम हो जाती है तो वैद्य कुछ नहीं कर सकता। इसलिये हमारा काम यह है कि शरीर का आरोग्य हम अच्छा रखें। उसके लिये हमें गांधीजी ने बताया है कि कुदरती इलाज पर आधार रखो। सूर्यप्रकाश, पानी, मिट्टी, आदि से रोग अच्छे करना सीख लेना चाहिये। आज कल तो लोग कहते हैं हर गाँव में एक दवाखाना हो। अभी तक वैसा नहीं हुआ है यह परमेश्वर की कृपा है। अगर ये लोग हर गाँव में दवाखाना खोल सकें तो गाँव का पैसा दवाखाने के निमित्त से बाहर जायगा और रोग दसगुना बढ़ेंगे....जरा कहीं कुछ हुआ तो हम दवाखाने में दौड़ेंगे। और यह समझ लो कि एक दफा वैद्य अगर घर में आता है तो फिर वह घर नहीं छोड़ता। कुछ लोग कहते हैं फलाना डॉक्टर हमारा फॅमिली डॉक्टर है। याने घर में जैसे माता-पिता होते हैं वैसे वह डॉक्टर भी घर का ही एक हिस्सा बन गया। इस तरह हर बात में अगर हम गुलाम बनते जायेंगे तो फिर स्वराज्य काहे का? सरकार का काम आप को बाहर से कपड़ा ला देने का नहीं है। वह आप को कातना बुनना आदि सिखा दगी। वैसे तो सरकार आप की खिदमत करने के लिये ही है। आप जैसा चाहेंगे वैसा वह करेगी। लेकिन आप को उसके लिये पैसा खर्च करने की तैयारी रखनी होगी। आप कहेंगे हम खेती नहीं करेंगे हमें बाहरसे गल्ला दो तो सरकार अमेरिका से गल्ला ला देगी। उसके लिये आप को पैसा देना पड़ेगा। सरकार तो सेवक है। सेवक

से कैसी सेवा लेनी चाहिये यह मैं आप को समझा रहा हूं। आप उसको कहें कि हमें तालीम दो, हम स्वावलंबी बनना चाहते हैं।

भगवान झूठे पर प्रसन्न नहीं होता

आप का बाजार देख कर मुझे जो बातें सूझी वह मैंने आप के सामने रखी। जब तक हिंदुस्तान के बाजारों में झूठ चलता है तब तक हिंदुस्तान सुखी नहीं होगा। हम परमेश्वर का भजन करते हैं। लेकिन परमेश्वर झूठे पर कभी प्रसन्न नहीं होता। एक दफा दुर्योधन गांधारी के पास आशीर्वाद मांगने गया था। युद्ध का अवसर था। दुर्योधन ने गांधारी से कहा कि मुझे विजय मिले ऐसा आशीर्वाद दो। गांधारी तो दुर्योधन की माता थी और उसका दुर्योधन पर बहुत प्यार था। लेकिन उसने अपने पुत्र से कहा, "जहां धर्म होगा वहीं विजय होगी यह मेरा आशीर्वाद है।" परमेश्वर का हमारे ऊपर बहुत प्यार है। वह हमें कहता है कि सचाई से बरतो तो तुम्हें मेरा आशीर्वाद है। अगर हम झूठे होंगे तो परमेश्वर हमें उसके लिये सजा देगा। उसमें भी उसकी दया ही होती है। परमेश्वर की दया अजीब होती है। पापी को शुद्ध करने के लिये वह उसको सजा देता है तो उसमें उसकी दया ही होती है। तो अगर हम परमेश्वर का आशीर्वाद चाहते हैं और जीवन सुखी हो ऐसी इच्छा रखते हैं तो सत्य को नहीं छोड़ना चाहिये।

इच्छोडा (जि० आदिलाबाद)
१९-३-५१

तेरहवाँ दिन—

: १७ :

देहात के काम

आप सावधान रहें

आप का यह गाँव बिलकुल ही छोटा है। लेकिन इस गाँव में मैंने जो काम देखा है उससे मुझे बहुत ही आनंद हुआ है। क्यों आनंद हुआ यह आप लोगों को नहीं मालूम हो सकता। बात ऐसी है कि आप के गाँव में मैंने बीस पचीस चरखे चलते हुए देखे। इस तरह चरखों का काम मैंने अपनी इस यात्रा में अभी तक कहीं नहीं देखा। और यह दृश्य देख कर मेरे हृदय को बड़ा संतोष हुआ। लेकिन आप लोगों को मैं जाग्रत कर देना चाहता हूं। यहां अभी तक बाहर के व्यापारियों का ज्यादा प्रवेश नहीं हुआ है। लेकिन आगे चल कर स्थिति ऐसी ही नहीं रहेगी। बाहर के व्यापारी यहां भी आयेंगे। मुझे आज कल व्यापारियों का सब से अधिक डर लगता है। वास्तव में व्यापारी तो होने चाहिये ग्रामों के सेवक। लेकिन इन दिनों ऐसा हुआ है कि व्यापारियों में दयाधर्म नहीं जैसा रह गया है। इसलिये वे जब कहीं जाते हैं तो गांवों की सेवा के बजाय अपने स्वार्थ को ही देखते हैं। आज तामीरातवाले एक भाई मुझसे मिलने आये थे। बातचीत में उन्होंने बताया कि यह जिला जो अभी बहुत पिछड़ा हुआ है पैनगंगा पर

पुल बनने के बाद आगे बढ़ जायगा। क्योंकि फिर बरार के साथ बहुत व्यापार चलेगा। लेकिन फिर यह जिला आगे बढ़ेगा इसका मतलब इतना ही है कि यहां व्यापारियों का जमघट बन जायगा। मतलब उसका इतना ही है कि फिर आपके गाँव में जो अच्छा दृश्य हमने देखा वह देखने को नहीं मिलेगा। बाहर के व्यापारी आपके गाँव में आयेंगे। कपड़ों के अच्छे अच्छे नमूने आपको बतायेंगे, आप लोभ में पड़कर उनसे कपड़ा खरीदने लग जायेंगे और गुलाम बन जायेंगे। आज भी मैं देखता हूं कि आपके गाँव में सूत कतता है। कुछ लोग हाथ का कपड़ा पहनते हैं; लेकिन मिल का कपड़ा भी बहुत चलता है। लेकिन जब वे व्यापारी आयेंगे तब सारा का सारा कपड़ा बाहर से आने लग जायगा। इसलिये मैं आज ही आपको सावधान करना चाहता हूं कि आप शपथ लीजिये कि बाहर का कपड़ा नहीं लेंगे। अगर आप ऐसा नहीं करते तो आप के देखते देखते सारा गाँव दरिद्र हो जायगा। आज मैं आपके गाँव में घूम आया। सारे घर देख आया। घर बहुत तो थे नहीं इसलिये समय भी ज्यादा नहीं लगा। छोटासा गाँव है। आज आप लोग संतोष से रहते हैं। लेकिन अगर आप आलस में पड़े और बाहर की चीजें खरीदने लगे तो आज का यह संतोष नहीं रहेगा।

खादी का व्रत

एक घर में, जो कुछ पड़ा था, लोगों ने बैठने के लिये कहा। मैं वहां बैठा। उन्होंने मेरा स्वागत किया। लेकिन उस घर में मैंने

देखा कि उस घर की लक्ष्मी सारे कपड़े मिल के पहने हुए थी। मैंने उन्हें प्रेम से समझाया कि इस घर में मैं आया हूं तो अब यहां बाहर का कपड़ा नहीं आना चाहिये। उन्होंने मेरी बात को मान लिया। अब मैं नहीं जानता कि वे कहां तक अपना वचन पालन करेंगे। भगवान से मेरी प्रार्थना है कि उन्होंने जो वचन दिया है उसका पालन करने की शक्ति वह उन्हें दे।

हिंदुस्तान की पहले की स्थिति

मैं अभी हैद्राबाद में होनेवाले सर्वोदय संमेलन के लिये जा रहा हूं। सर्वोदय का मतलब है सब की उन्नति। सर्वोदय में यह बात नहीं आती कि किसी एक का भला हो, दूसरे का न हो। इसलिये सर्वोदय का चिंतन करनेवाले मुझ जैसों के सामने यह बड़ी समस्या है कि शहरों के साथ देहातों का भला कैसे होगा? हम चाहते हैं कि भला शहरों का भी हो और गाँवों का भी। एक जमाने में हिंदुस्तान के सारे गाँव बहुत सुखी थे। परदेश से आनेवाले लोग उसकी गवाह देते थे। बीच में जब अंग्रेज यहां आये तो उन्होंने भी देखा कि यहां हर गाँव में कपड़ा बनता है और दूसरे भी बहुत से उद्योग चलते हैं। तो उन्होंने लिखा है कि गाँव गाँव में दूध बहुत मिलता है। लेकिन आज हम देखते हैं कि लोगों को मुश्किल से दूध मिलता है। दूध नहीं, तरकारी नहीं, कपड़ा नहीं, और आज तो गल्ला भी बाहर से आता है। यह हालत दो सौ साल के अंदर हुई है।

स्वराज्य का कार्यक्रम

अब स्वराज्य आया है। हम चाहते हैं कि हमारे गांव फिर से सुखी हों। लेकिन स्वराज्य आने पर भी अगर हम लोग देहात का रक्षण नहीं कर पायेंगे, देहात के उद्योग कायम नहीं रख सकेंगे तो हमारे गांव सुखी नहीं हो सकेंगे। स्वराज्य का अर्थ ही यह है कि आप लोगों को अपने गांव का कपड़ा पहनना चाहिये। अपने ही गांव की चीजें खरीदनी चाहिये। बाहर का पक्का माल आप को नहीं खरीदना चाहिये, बल्कि अपने गाँव में खुद कच्चे से पक्का माल बनाना चाहिये। आप के गांव में पक्का माल बनेगा तो शहरवाले खरीदेंगे और आप को लाभ होगा। लेकिन अगर आप कच्चा माल पैदा करके पक्का बाहर से खरीदेंगे तो आप को नुकसान होगा। अगर अपने ही गाँव में कच्चे माल से पक्का बनाते हैं तो मजदूरी आप को मिलती है। पक्का नहीं बनाते तो मजदूरी बाहर जाती है। एक जमाना था जब हिंदुस्तान-वाले अपने लिये तो कपड़ा बनाते ही थे लेकिन बाहर भी भेजते थे। उस जमाने में लोगों को चरखा कातने के लिये समय मिलता था और आज नहीं मिलेगा ऐसी बात तो नहीं है। आज लोगों की संख्या बढ़ गई है, जमीन कम हुई है। इसलिये समय तो खूब मिलता है। अभी एक जगह एक गांव का सर्वे किया गया तो मालूम हुआ कि वहां के लोगों को साल भर में छः माह काम नहीं मिलता है। मैं देखता हूं कि आप के गांव में बगीचे भी नहीं हैं। याने आप के यहां की खेती बारिश के पानी पर ही होती है।

इसलिये वह काम अधिक नहीं रहता। समय काफी बचता है। उसका क्या किया जाय? अगर कोई व्यक्ति ऐसा हो जो आप के गांव की सेवा करे तो आप के गांव की उन्नति होगी। वह व्यक्ति आपके गांव का ही होना चाहिये। काँग्रेसवालों का काम है कि ऐसे गांव की सेवा करें। मुझे तो ऐसे गांव में रहने की इच्छा हो जाती है। यहां रहा तो पहले मैं कातनेवालों को धुनना सिखाऊंगा। आज तो कातनेवाले अपनी पूनी नहीं बनाते। दूसरे लोग उनके लिये पूनी बनाते रहे हैं। अपने घर में कपास बने और दूसरा मनुष्य उसकी पूनी बनावे और फिर मैं कातूं ऐसा क्यों होना चाहिये? अगर हम अपने ही घर में पूनी बनाते हैं तो पूनी अच्छी बनती है और सूत भी अच्छा कतता है। दिल्ली में हमने यह प्रयोग करके देखा। पंजाब की निर्वासित स्त्रियों को कातने के साथ हमने उन्हें पूनी बनाना भी सिखा दिया। परिणाम यह हुआ कि जो स्त्रियां पहले आठ दस नंबर तक कातती थीं वे सोलह बीस नंबर तक सूत कातने लगीं। याने पहले बिलकुल मोटा सूत कातती थीं अब महीन कातने लगी हैं। बारीक सूत से धोतियां और साड़ियां बन सकती हैं। आप देख रहे है कि मदालसा यहां बैठी पूनी बना रही है। पांच पांच छः छः साल के बच्चे भी ऐसी पूनी बना लेते हैं। इस तरह अगर घर में ही पूनी बनने लग जायगी तो सूत अच्छा कतेगा।

फिर आप के यहां ये पहाड़ भी हैं। अगर मैं यहां रहा तो पहाड़ से पत्थर ला ला कर उन पत्थरों से मकान बना लूंगा। इस

तरह अपने परिश्रम से पक्के मकान बन जायेंगे। फिर सफाई का काम शुरू कर दूंगा ताकि गांव में कोई बीमारी न होने पावे। आप लोग बाहर खुले में पाखाना जाते हैं। लेकिन उस पर मिट्टी नहीं डाली जाती। खाद की बरबादी होती है। हमारा हिसाब है कि फी आदमी मैले की कीमत चार रुपया होती है। मतलब यह कि पांचसौ जनसंख्या के आप के गांव में दो हजार रुपयों की आमदनी बढ़ सकती है। इस तरह गांव गांव उत्पादन भी बढ़ेगा और स्वच्छता भी बढ़ेगी। अब यह सारा काम अगर यहां कोई मनुष्य रहेगा तो हो सकेगा। लेकिन बाहर से मनुष्य कहां से लावें? इसलिये यहीं पर कोई कार्यकर्ता मिलना चाहिये।

एक बात और। आप के गांव में प्रेम-भाव बढ़ना चाहिये। जसा एक परिवार में प्रेम होता है वैसा सारे गांव में होना चाहिये। सारा गांव एक परिवार ही हो जाना चाहिये।

तो आप लोग नित्य गांव में उद्योग बढ़ाइये और प्रेम-भाव बनाये रखिये, यही मुझे आप से कहना था।

निरडगोंडी, (जि० आदिलाबाद)
२०-३-५१

चौदहवाँ दिन—

: १८ :

ग्राम राज्य

गांधीजी का ही संदेश सुनाता हूं

मुझे गांधीजी का आदमी समझ कर आप सब स्त्रियां अपने अपने चरखे लेकर इस सभा में आयी हुई हैं। और आज मैं आपको जो सुनानेवाला हूं वह गांधीजी का ही संदेश है। लोग कहते हैं कि गांधीजी ने जो कहा उससे कोई नई बात यह मनुष्य नहीं कहता है। यह बात सही भी है। क्योंकि गांधीजी के पास मैंने जो सीखा उसे नहीं भूल सकता। अगर गांधीजी का शिक्षण मैं भूल जाऊंगा तो पशु बनूंगा।

सुदर्शन चक्र धारी भगवान के दर्शन

आप लोगों को मैं नारायण समझता हूं। और जब मैंने देखा कि सौ से अधिक स्त्रियां यहां चरखे चला रही हैं तो उस सुदर्शन चक्रधारी भगवान के ही मैंने आज दर्शन किये। इस तरह आपके दर्शन का लाभ लेने के लिये मैं पैदल निकल पड़ा हूं। आज सुबह पांच बजे हम निकले और चौदह मील की मुसाफिरी की। एकदम से इतना चलने से हम लोगों को कुछ तो थकान जरूर लगी। लेकिन जो दृश्य यहां आपके कातने का मैंने देखा उससे वह सारी थकान

उड़ गई। आज की सभा जो भी देखते वे अगर मनमें शंका रखते हैं कि चरखा कैसे चलेगा इन दिनों, तो यह दृश्य देखकर वे समझ जायेंगे। लेकिन आज तो आप लोगों ने बता दिया कि आप खेती का काम भी कर सकती हैं और चरखा चला कर अपना कपड़ा भी बना लेती हैं।

लक्ष्मी की कथा

अब मुझे यही कहना है कि आप यह काम निष्ठा से अधिक बढ़ाइये। अपने गाँव में हाथ का बना कपड़ा ही हमें पहनना चाहिये। बाहर का कपड़ा यहां नहीं आना चाहिये। आप कातती हैं और उसका कपड़ा भी पहनती हैं यह अच्छा है। लेकिन खद्दर ही पहनेंगे दूसरा कपड़ा नहीं पहनेंगे ऐसा व्रत आपने नहीं लिया है। ऐसा व्रत न लेने में क्या खतरा है यह मैं आपको समझाऊंगा। खतरा यह है कि मिल का कपड़ा यहां आता रहेगा और आपको उसका मोह होगा। फिर आप खुद उस मिल के कपड़े को शायद नहीं पहनेंगी। लेकिन अपनी लड़कियों को वह पहनायेंगी और कहेंगी कि कैसी सुंदर दीखती है मेरी लड़की मिल के कपड़े में। लेकिन मैं आपको कहता हूं कि मिल के कपड़े में आपके लड़के लड़कियां खूबसूरत नहीं बल्कि बदसूरत दीखेंगी। क्योंकि मिल का कपड़ा अगर घर में आता है तो घर की लक्ष्मी बाहर चली जाती है। और लक्ष्मी अगर बाहर गई तो फिर घर की क्या शोभा रही? लक्ष्मी की कथा है कि वह शामके समय गाँव में घूमती है। जिस घरमें देखती है कि सायंकाल के समय भी दीपक जल रहा है और

काम हो रहा है उस घर में वह प्रवेश करती है। उसका मतलब यह है कि जहां दिन में भी काम चलता है और रातको सोते तक निरंतर काम और उद्योग चलता है उसी घर पर लक्ष्मी की कृपा होती है। चरखे से इस तरह घर घर काम हो सकता है।

कातनेवालों की जाति नहीं होती

मैं देख रहा हूं कि कुछ स्त्रियां कात रही हैं लेकिन कुछ नहीं कातती है। एक बाई से मैंने पूछा कि वह क्यों नहीं कातती? मिल का कपड़ा क्यों पहनती है? उसने उत्तर दिया कि हमारी जाति में कातना निषिद्ध है। यह खयाल गलत है। जो भी कपड़ा पहनता है उसको कातना चाहिये। जैसे बढ़ई की या लुहार की जाति होती है वैसे कातनेवालों की कोई जाति नहीं होती। हरेक जाति को कातना चाहिये। हर घर में रसोई बनती है उसमें जाति का कोई प्रश्न नहीं होता। वैसे हर घरमें कातने का काम होना चाहिये। मैं यह भी देखता हूं कि स्त्रियां तो कातती हैं लेकिन पुरुष नहीं कातते हैं। शायद उनको लगता है कि वे कातेंगे तो उनका धर्म बिगड़ेगा। स्त्रियां कपड़ा पहनती हैं तो पुरुष नंगे थोड़े ही रहते हैं? इसलिये पुरुषों को कातना चाहिये स्त्रियों को कातना चाहिये बच्चों को कातना चाहिये और बूढ़ों को भी कातना चाहिये। गांधीजी रोज नियम से कातते थे। जिस दिन उनका खून हुआ उस दिन भी वे कात कर मरे हैं। इस तरह उन्होंने सारी जिंदगीभर हमारे सामने एक आदर्श दिखा दिया कि हमको रोज कुछ न कुछ सूत कातना चाहिये।

बेकार रहेंगे तो शैतान मन में घर करेगा

लोग पूछते हैं कि अब तो स्वराज्य आया है अब कातने की क्या जरूरत है ? तो आप से यह भी पूछ सकते हैं कि अब स्वराज्य आया है तो रसोई करने की क्या जरूरत है ? स्वराज्य के पहले घर में रसोई करने की जरूरत थी, स्वराज्य के बाद भी जरूरत है। मिल का पराक्रम आप को सुनाता हूं। लड़ाई के पहले मिलें फी आदमी १७ गज कपड़ा देती थीं। और अब १२ गज तैयार करती हैं। इस पर से आप के खयाल में आयेगा कि मिल पर भरोसा रखना कितना घातक है। मैं तो कहना चाहता हूं कि मिलें अगर ५० गज भी कपड़ा तैयार करें तो भी उसको खरीदने में देहातवालों का भला नहीं है। कोई कहते हैं कि मिल का कपड़ा सस्ता होता है। मैं कहता हूं कि वह मुफ्त में भी मिले तो भी हम वह कपड़ा नहीं लेंगे इस तरह का निश्चय हमें करना चाहिये। ऐसा निश्चय अगर देहातवाले नहीं करेंगे तो उनके सारे धंधे खतम हो जाएंगे। और आप के धंधे अगर नष्ट हो गये तो फिर आप को मुफ्त कौन खिलायेगा ? इसलिये मैंने लक्ष्मी का जो चरित्र कहा था वह याद रखिये। उद्योग चले गये तो लक्ष्मी चली जायगी, हम आलसी बनेंगे और फिर आपस आपस में झगड़े शुरू हो जायेंगे। फिर लोगों में तरह तरह तरह के व्यसन शुरू हो जायेंगे। नशाखोरी चलेगी। लोग शराब और बीड़ी पीने लगते हैं। बीड़ी पीनेवाले तो यहां तक आगे बढ़ गए हैं कि जहां प्रार्थना चलती है वहां भी वे बीड़ी पीते हैं। याने साधारण सभ्यता भी वे नहीं जानते हैं कि

जहां लोग इकट्ठे होते हैं वहां बीड़ी नहीं पीनी चाहिये। जहां उद्योग नहीं होते हैं और मनुष्य खाली रहता है वहां ये सारे ढंग सूझते हैं। फिर झगड़े बढ़ते हैं और उसके साथ व्यभिचार आदि भी चलते हैं। इसीलिए हमारे पुरखाओं ने हमें सिखाया है कि "क्षणार्धमपि व्यर्थ न नेयम्" एक क्षण भी खाली नहीं रहना चाहिये। इस तरह एक एक क्षण का हम हिसाब नहीं रखेंगे तो फिर हमारे मन में शैतान काम करने लगता है और यह विचार शुरू होता है कि दूसरे के जेब से पैसे कैसे छूटे जांय। व्यापार में सर्वत्र झूठ शुरू होता है। चोरियां कैसे की जायं इसकी युक्तियां खोजी जाती हैं। यह सब हिंदुस्तान में शुरू हो रहा है इसलिये मैं आप लोगों को सावधान कर रहा हूं।

ग्रामराज्य और रामराज्य की व्याख्या

जो लोग अपने घर में सूत कातेंगे उनका अपना कपड़ा घर का होगा। लेकिन उनके घर में अगर ज्यादा कपड़ा तैयार होता है तो गांव के दूसरे लोग उसको खरीद सकते हैं। गांव में कुछ लोग जरूर ऐसे होंगे कि जिनके लिए खुद सूत कातना संभव नहीं होगा। तो वे अपने गांव में कते सूत का कपड़ा खरीदेंगे। यह जो मैंने कपड़े के लिये कहा वही दूसरे उद्योगों को भी लागू है। तेल गांव में बनाना चाहिये। गुड़ गांव में बनाना चाहिये, आटा घर घर पीसा जाना चाहिये। इस तरह आप देहात की स्त्रियां और पुरुष काम करेंगे तो यह राज्य आपका होगा। इसको ग्रामराज्य कहते हैं। ग्राम में जब स्वावलंबन होगा, गांव अपनी शक्ति पर खड़ा होगा तब

वह ग्रामराज्य होगा। और रामराज्य तब होगा जब आपस आपस में कोई झगड़ा नहीं रहेगा, सब एक दूसरे पर प्यार करेंगे, सब एक दूसरे का साथ देंगे और सहकार करेंगे। अपने देश के लिये स्वराज्य तो आया है। लेकिन ग्रामराज्य स्थापित करना बाकी है। उसके लिये अब हमें झगड़ना है, मेहनत करनी है। वह बड़ी भारी लड़ाई होगी।

ग्रामराज्य के लिए लड़ाई लड़नी है

स्वराज्य के लिए तो लड़ाई हो गई। लेकिन उससे भी कठिन लड़ाई आगे ग्रामराज्य के लिये होनेवाली है। आज तक हमने जो लड़ाई लड़ी वह अहिंसात्मक थी। वैसे यह लड़ाई भी अहिंसात्मक ही होगी। यह लड़ाई टलनेवाली नहीं है। उस लड़ाई के सिपाही आप सारी बहनें और भाई होंगे। उधर शहरवाले लोग व्यापार में लगे हुए हैं, ग्रामों की कोई चिंता नहीं करते हैं। उनके साथ हमारा कोई भेदभाव तो नहीं है, लेकिन झगड़ा जरूर है। उस युद्ध में हमारे औजार होंगे चरखा और हल। हमारे युद्ध के लिये हमें बम की जरूरत नहीं है, तोपों की भी जरूरत नहीं है। हमें जरूरत है काम करने के औजारों की।

गोपाल पेठ, (जि० आदिलाबाद)
२१-३-५१

पन्द्रहवाँ दिन—

: १९ :

सर्वोदय की महिमा

स्वराज्य शब्द की महिमा

हम सर्वोदय के यात्री अपनी पैदल मुसाफिरी में आप के गांव में आ पहुंचे हैं। सर्वोदय एक महान शब्द है और उसका अर्थ भी महान है। समाज के सामने जब कोई महान शब्द होता है तो उससे समाज को शक्ति मिलती है। शब्द की महिमा अगाध होती है। जिस समाज के सामने कोई बड़ा शब्द नहीं होता है वह समाज शक्ति-हीन और श्रद्धा-हीन बनता है। शब्द की शक्ति का यह अनुभव हर जमात को और हर देश को आया है। हमारे देश में चालीस साल तक स्वराज्य शब्द चला और उसका पराक्रम तथा महिमा सब ने देख ली। १९०७ में स्वराज्य शब्द दादाभाई नौरोजी ने हमें दिया और १९४७ में उसका दर्शन हमें मिला। उसका चमत्कार आखिर तो हैद्राबादवालों ने भी देख लिया। हैद्राबादवाले बहुत दिनों से सोच रहे थे कि बाकी के सारे देश में स्वराज्य का उदय हुआ, हमारा क्या हाल होगा? उनको भी अनुभव हुआ कि जो शक्ति देशभर में पैदा हुई थी उसका स्पर्श यहां भी होना था। यह संस्थान उससे अलग नहीं रह सकता था।

स्वराज्य के बाद का शब्द

इस तरह स्वराज्य शब्द का कार्य हिंदुस्तान में हो गया और उसके साथ साथ महात्मा गांधीजी का अस्त हुआ। उनके जाने के पीछे सारा देश हक्का-बक्का हो गया और कुछ रोज तो सूझता ही नहीं था कि इस देश का क्या होनेवाला है ? लेकिन परमेश्वर की कृपा से सब लोग स्थिर हो गये और अब ऐसा समय आ गया है कि देश के प्रगति का अगला कदम रखा जाय। अगला कदम तो तब रखा जा सकता है जब कि जहां जाना है उसकी दिशा तय हुई हो। तो गांधीजी के जाने के बाद चंद लोग इकट्ठा हुए और उन्होंने अपने देश को सर्वोदय शब्द दे दिया। यह शब्द भी गांधीजी का ही रचा हुआ था। और उसकी जड़ हिंदुस्तान की संस्कृति में प्राचीन काल से जमी हुई है। जब स्वराज्य नहीं हुआ था तब तो वही एक शब्द हमारे सामने था और परदेशियों का यहां का राज्य हटाने में ही हम सब लगे हुए थे। हमारे खेत में तरह तरह के निकम्मे झाड़ उगे हुए थे, उनको काटने का काम हुआ उसीका नाम स्वराज्य था। अब स्वराज्य-प्राप्ति के बाद उस खेत में परिश्रम करना है और बोना है। लेकिन मैं देख रहा हूं कि लोगों का यही खयाल है कि अब तो काटनेका समय है। यह बिलकुल गलत खयाल है। तो वह जो खेती में परिश्रम करके फसल लाना है उसी का नाम है सर्वोदय। सर्वोदय शब्द अगर हमारे सामने न होता तो हम सब ध्येय-शून्य बन जाते।

स्वराज्य के बाद का नैतिक कार्य

सर्वोदय शब्द ने हमारे सामने स्पष्ट उद्देश्य रख दिया। वह उद्देश्य ऐसा है जिसमें सब लोगों का समावेश हो सकता है। मेरे अभिप्राय में स्वराज्यप्राप्ति के बाद हिंदुस्तान में जो तरह तरह के राजकीय पक्ष पैदा हुए हैं उनकी कोई जरूरत नहीं थी। स्वराज्य के बाद हिंदुस्तान में जो असंख्य समस्यायें पैदा हुई वे बहुत सारी अनैतिक थीं। याने जनता की नीति गिरी हुई थी उसका हमें तरह तरह से अनुभव आया। और आज भी हम यही देखते हैं कि जहां जाओ वहाँ नीति-हीनता और शील-भ्रष्टता का दर्शन होता है। इसके लिये मैं जनता को दोष नहीं देता हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि सारी की सारी जनता नीति-भ्रष्ट नहीं हो सकती। लेकिन वैसा नीति-भ्रष्टता का दर्शन अगर सर्वत्र होता है तो यही समझना चाहिये कि उसका कारण परिस्थिति में मौजूद है। जिम्मेदारी चाहे परिस्थिति की हो चाहे जनता की हो लेकिन जो है उसको हमें दुरुस्त करना है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद सब लोगों का शील कायम रखना, आपस आपस में प्रेम-भाव कायम रखना आदि बिल्कुल बुनियादी काम करना जरूरी हो गया था और है। इस हालत में किसी भी तरह के राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका ही नहीं रहता है। जब समाज का नैतिक स्तर और आपस आपस का प्रेम-भाव बढ़ेगा तब राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका आ जाता है। इसलिये जिन जिन लोगों से जब जब बात करने का मौका मिलता है तब उन्हें मैंने यही कहा है कि भाइयो,

यह राजकीय लेबल अब अपने सिर पर मत चिपकाओ। और केवल इन्सान बन जाओ।

आज का परदेशावलंबी स्वराज्य किस काम का

देखिये मैं तो पैदल घूम रहा हूं। बीच-बीच में छोटे-छोटे गाँवों में जाना होता है तो बीच में शहर देखने को मिलते हैं। तो मैं देखता हूं कि उधर गावों की परिस्थिति क्या है और इधर शहरों की परिस्थिति क्या है! देहात में एक तरह का दुःख है तो शहरों में दूसरी तरह का। देहात में देखता हूं कि लोगों को कपड़े पहनने के लिये नहीं हैं और शहर में देखता हूं कि लोग शराबी बन रहे हैं। वस्त्रों का न होना एक बड़ा भारी दुख है तो शराबी होना कोई सुख की बात नहीं है। तरह तरह के व्यसन शहरों में बढ़ रहे हैं। स्वराज्य के पहले स्वदेशी विदेशी का जो फरक हम करते थे वह भी अब भूल गये हैं। जो भी अच्छी चीज देखते हैं खरीद लेते हैं। स्वराज्य के बाद हमारे शहरों की अगर यह हालत हो जाय कि सारे बाजार परदेशी वस्तुओं से भर जायं तो वह स्वराज्य किस काम का? और मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि आप परदेशी वस्तु खरीदते रहिये, आप के स्वराज्य पर कभी आक्रमण नहीं होगा। आपका स्वराज्य कायम रहेगा। क्योंकि दूसरे देशों को क्या फिक्र पड़ी है कि आप का देश कब्जे में रख कर सारा जिम्मा उठायें अगर उनका माल यहां खपता है? और इन दिनों किसी देश को अपने कब्जे में रखना कठिन काम हुआ है। इसलिये दुनिया के बड़े बड़े

देश यह नहीं सोचते कि दूसरे देशों पर अपनी राजकीय सत्ता कायम करें। अगर व्यापारी सत्ता हासिल है तो राजकीय सत्ता हासिल करने में कोई लाभ नहीं है। मतलब यह हुआ कि फिर हमारे स्वराज्य का कोई अर्थ ही नहीं रहेगा अगर हमारे बाजार परदेशी वस्तुओं से भरे रहे। यह है हमारे शहरों का हाल।

उधर देहातों का हाल यह है कि उन लोगों के पास कोई धंधे नहीं हैं। उनके जो छोटे छोटे धंधे थे वे शहरवालों ने छीन लिये। यहीं देखो, हम जहां बैठे हैं वह एक धान कूटने की मिल है। अगर धान कूटने का धंधा देहात में चला तो लोगों को काम मिलेगा, वह भी शहर में गया तो देहातवाले बेकार हो जायेंगे।

तो उधर परदेशी वस्तुओं से शहर के बाजार भर रहे हैं उनके विरोध में शहरियों का पराक्रम कुछ नहीं चलता है। उनका सारा पराक्रम देहात के धंधे डुबाने का है।

देहात के धंधे सुरक्षित रहें

होना यह चाहिये कि देहात के धंधों को देहात में रखना चाहिये और परदेश से जो माल आ रहा है उसके विरोध में शहरों में धंधे खड़े होने चाहिये। आज की हालत यह है कि परदेश के लोग हमारे शहरों को लूटते जा रहे हैं और शहरवाले हमारे देहातों को लूटते जा रहे हैं। अगर उससे उलटा बना याने परदेश के धंधों के विरोध में शहरवाले खड़े हो गये और देहात के धंधों को उन्होंने बचा लिया तो देहात और शहर दोनों का सहयोग होगा।

और यह देश शक्तिशाली बनेगा। हम हमारे कुछ जंगलों को जैसे रिजर्व रखते हैं वैसे देहात के लिये कुछ धंधे रिजर्व रखने चाहिय। इस तरह देहात के धंधों को हमने सुरक्षित नहीं रखा तो देहात उजड़ जायेंगे और आखिर देहाती लोग शहरों पर टूट पड़ेंगे। तो उधर परदेश के व्यापारी शहरों को लूटेंगे और इधर देहात के लोग शहरों पर टूट पड़ेंगे तो फिर शहरों की क्या हालत होगी आप ही सोचिये। तो स्वार्थबुद्धि से भी आप को देहात की रक्षा करनी चाहिये।

देहात उजड़ जाय तो शहर और देहात की लड़ाई अटल है

तो हम लोगोंकी अकल अब इस बात में लगनी चाहिये कि देहात और शहर दोनों का सहयोग कैसे हो और दोनों मिल कर परदेशी माल के विरोध में कैसे शक्ति पैदा करें? यह नहीं हो रहा है और मुझे देहातवालों को कहना पड़ता है कि भाई तुम्हारे और शहरियों के बीच लड़ाई होनेवाली है। मैं उस लड़ाई को नहीं चाहता। लेकिन अगर शहरियों का रवैया नहीं बदला तो यह लड़ाई अटल है, यह मैं देख रहा हूं और वही मुझे कहना पड़ता है।

सर्वोदय का ध्येय

मैं उस लड़ाई को नहीं चाहता इसीलिये सर्वोदय के प्रचार के लिये आप को समझा रहा हूं। और मैं कहता हूं कि इस समय इस शब्द में जो शक्ति है वह आप चिंतन करेंगे तो आप को महसूस होगी। सर्वोदय शब्द हमें यह समझा रहा है कि देश में जगह

शक्तिसंचय हो जाना चाहिये। देश में एक घर भी अशक्त नहीं रहना चाहिये। अगर इस तरह हम नहीं सोचते हैं और वर्गों के झगड़ों की बात निकालते हैं या कोई खास लोगों के हित की ही बात सोचते हैं तो हिंदुस्तान सुख में नहीं रहेगा। सरकारी कानूनों में जो भी लूपहोल मिलते हैं उनका लाभ उठाने का व्यापारी सोचते हैं। इस तरह व्यापारी और सरकार दोनों के बीच अकल की लड़ाई चलेगी और इन दोनों की लड़ाई के बीच देहात के लोग मारे जायेंगे। जरूरी इस बात की है कि व्यापारियों की ताकत देहात के हित में लगे, सरकार की ताकत देहात के हित में लगे और शहरियों की भी ताकत देहात के हित में लगे। और देहाती लोग, शहर के लोग, व्यापारी और सरकार चारों मिलकर परदेशी वस्तुओं का और विचारों का जो आक्रमण हो रहा है उसके विरोध में खड़े हो जाँय।

सर्वोदय का लक्ष्य

तो स्वराज्य के बाद सर्वोदय का क्या काम है यह मैंने थोड़े में आपको समझाया। हमारे देश में चार शक्तियां काम कर रही हैं। एक है सरकार की, दूसरी है व्यापारियों की, तीसरी है शहरियों की और चौथी है देहातियों की। इन सब शक्तियों का योग साध्य करना सर्वोदय का काम है। अब आप ही सोचिये कि सर्वोदय में इतना अर्थ भरा है तो इसको छोड़ कर और किस शब्द की आपको जरूरत है? और किन राजकीय पक्षों की आपको आवश्यकता है? सर्वोदय कोई राजकीय पक्ष नहीं है।

लेकिन सारे राजकीय पक्षों को पेट में निगलने के लिये वह पैदा हुआ है। दूसरी भाषा में सबका हृदय एक बनाना, सबकी भावना एक बनाना, और सबकी शक्तियों का समवाय सिद्ध करना सर्वोदय का लक्ष्य है।

भाइयो, मैं आशा करता हूं कि यहां का हरेक जवान और प्रौढ़ इस शब्द से स्फूर्ति पावेगा और इसके लिये जीवन भर कोशिश करेगा। इस शब्द से जो स्फूर्ति मिलती है वह राम-नाम जैसी शक्ति है। और राम वही है जो सबके हृदय में रम रहा है। उसी का भजन अब हम सब मिल कर करेंगे।

निमल, (जि० आदिलाबाद)
२२-३-५१

सोलहवां दिन—

: २० :

सच्चा वर्णाश्रम धर्म

आज प्रार्थना सभा सदा की भांति साढ़े पांच बजे होनेवाली थी। लेकिन आप सब भाई बहनें दूर दूर गांव से यहां आ कर बैठे हैं इसलिये जल्दी ही शुरू कर देता हूं। ये स्त्रियां अपने बच्चों को घर छोड़ कर आई हैं। इसलिये मैं उन्हें जल्दी ही रवाना कर देना चाहता हूं।

ग्रामोद्योग का अर्थशास्त्र

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप सूत कातती हैं। लेकिन आपके चारों ओर घटोत्कची माया फैली है। सब तरफ मिलों का कपड़ा छाया हुआ है। आप के लिये इस देश की मिलों और परदेश की मिलों में कोई फरक नहीं है। आप को तो अपने सूत का ही कपड़ा पहनना चाहिये। मुझे इस बात का दुःख है कि आप तो सूत कातती हैं लेकिन यहां के लोग मिल का कपड़ा पहनते हैं। होना तो यह चाहिये कि इस गांव में बना हुआ कपड़ा ही यहां के लोग पहनें। अपने गांव वालों पर जो प्रेम नहीं करते वे प्रेम करना जानते ही नहीं। प्रेम का अर्थ ही यह है कि एक दूसरे की रक्षा करें। गांव में चमार है। वह जूता बनाता है तो उसका जूता हम नहीं खरीदेंगे और बाहर का खरीदेंगे तो

गांव का चमार मर जायगा। इस तरह हमारे चमार को हम रक्षण नहीं देते हैं तो उस पर हम प्रेम नहीं करते। इसी तरह तुम्हारे गांव के तेली का तेल तुम्हें खरीदना चाहिये। अपने गांव के बुनकर का कपड़ा पहनना चाहिये। लेकिन हम कहते हैं कि हमारे गांव के चमार का जूता महंगा है, तेली का तेल महंगा है, बुनकर का कपड़ा महंगा है। इस तरह अगर गांव के चमार का जूता, तेली का तेल, बुनकर का कपड़ा, गांव का गुड़ और गांव की चीजें हमें महंगी लगेंगी तो हम जी नहीं सकेंगे। हम महंगा महंगा कहते हैं, लेकिन वास्तव में वह महंगा नहीं है। गांव के तेली का तेल उसी गांव का चमार खरीदता है और चमार का जूता तेली खरीदता है तो इसका पैसा उसके घर में जाता है, उसका पैसा इसके घर में जाता है। हम अपने घर की लड़कियां दूसरों के घर देते हैं, उनकी लड़कियां हमारे घर लेते हैं। क्या यह सौदा महंगा पड़ता है? इसी तरह अगर तेली का पैसा चमार के घर और चमार का पैसा तेली के घर जाता है तो किसका नुकसान होता है? इस तरह जिसे आप महंगा कहते हैं वह महंगा नहीं है बल्कि उस पर ही हमारे गांव का जीवन चलता है। इस लिये आप लोगों से मेरी प्रार्थना है कि जो माल आप के गांव में बनता है वही खरीदिये। यह मत कहिये कि हमारा देश बड़ा है तो दिल्ली का माल क्यों न खरीदें। दिल्ली हमारे देश में तो है पर दिल्लीवालों का काम है कि वे दिल्ली की चीजें खरीदें, यहांवालों का काम है कि वे यहां की चीजें खरीदें। दिल्ली में जो बारिश होती है वह सुवर्णपुर में नहीं

आती। भगवान हर गांव में बूंद बूंद बारिश बरसाता है। उसी तरह घर घर में और गांव गांव में लक्ष्मी निर्माण करने की शक्ति चरखे में पड़ी है। चरखा धन थोड़ा देता है जैसे बारिश की बूंद भी छोटी होती है। लेकिन बारिश की बूंद छोटी होते हुए भी घर घर बरसती है वैसे ही चरखे का धन थोड़ा होने पर भी घर घर निर्माण होता है। यह जब सोचते हैं तो आप को मालूम हो जायगा कि अपने गांव की रक्षा कैसे हो सकती है।

हमारे यहां पहले से वर्ण-धर्म चला आया है। वर्ण-धर्म का अर्थ यह है कि अगर बाप चमार है तो लड़के को भी चमार का धंधा करना चाहिये। लेकिन अगर हम अपने गांव के चमार का माल नहीं खरीदेंगे और बाहर का खरीदेंगे वैसे ही अपने बुनकर का कपड़ा न खरीद कर बाहरवालों का कपड़ा खरीदेंगे तो चमार का लड़का चमड़े का काम करेगा कैसे ? और बुनकर का लड़का बुनकर का काम आगे चलायेगा कैसे ?

गांव का शिक्षण ब्राह्मण संभालें

इस गांव में ब्राम्हण भी रहते हैं। ब्राम्हण विद्वान होते हैं। और देहातों में अकसर नहीं रहते। मैं अभी छोटे छोटे देहातों से होता हुआ आया हूं। मैंने कहीं ब्राम्हणों के घर नहीं देखे। छोटा गांव होते हुए भी यहां ब्राम्हण हैं क्योंकि यह क्षेत्र का गांव है। लेकिन यहां ब्राह्मणों के होते हुए भी यहां के लोग शिक्षित नहीं हैं। यहां के लोग मुझे आज सवेरे कहते थे कि यहां एक मदरसा खोलने के लिये सरकार से प्रार्थना की जाय। सरकार हर गाँव में कहां तक

मदरसे खोल सकती है ? और पैसा भी कहां से ला सकेगी ? इस गांव में अगर ब्राह्मण रहते हैं तो यहां के बालकों को वे मुफ्त क्यों नहीं पढ़ाते हैं ? ब्राह्मण लोग रोज एक घंटा पढ़ायेंगे तो पाँच-सात साल में सारा गांव लिखना-पढ़ना सीख जायगा। मदरसा-खोलेंगे तो वहां बच्चों को रोज पांच छः-घंटे पढ़ना होगा। और इतना समय गरीबों के बच्चे निकाल नहीं सकेंगे। इसलिये मैंने ब्राह्मणों से कहा है कि वे सिर्फ एक घंटा पढ़ावें और बच्चे भी एक घंटा सीखें। कुछ लोग शाम को एक घंटा पढ़ायेंगे, कुछ लोग सुबह एक घंटा पढ़ायेंगे। पढ़नेवाले बाकी के समय काम करेंगे और पढ़ाने वाले भी काम करेंगे। अगर इस तरह ब्राह्मण बिना शुल्क विद्यादान करेगा तो उसकी प्रतिष्ठा कायम रहेगी। लेकिन ब्राह्मण बन गये लोभी और फिर भी प्रतिष्ठा कायम रखना चाहते हैं। लोभ और प्रतिष्ठा दोनों साथ नहीं रहेंगे। इसलिये मैंने ब्राह्मणों से कहा है कि वे विद्यादान करें।

वर्णाश्रम धर्म कैसे टिकेगा ?

ये सारे ब्राह्मण वर्णाश्रमाभिमानी होते हैं। लेकिन उनके बदन पर मिल के ही कपड़े हैं। अब मैं उनसे पूछूंगा कि भाई आप अगर वर्णाश्रम का अभिमान रखते हैं तो गाँव के बुनकर का कपड़ा क्यों नहीं पहनते हैं ? अगर वे जूते पहनते हैं तो गाँव के चमार के बनाये हुये क्यों नहीं पहनते ? इस तरह वर्ण-धर्म की प्रतिष्ठा कायम रखना उनका काम है। मैं ब्राम्हणों से और सब से प्रार्थना करता हूं कि अपने गाँव के उद्योग कायम रखो और इस

तरह वर्ण-धर्म कायम रखने में मदद करो। ऐसा करोगे तो गोदावरी के तट का यह गाँव फिर से भाग्यशाली और सही माने में सुवर्णपुर बनेगा।

इस गाँव के बहुत से लोग बाहर गये हैं। उन्होंने बाहर अपनी पढ़ाई की है। लेकिन वे अपने इस गाँव की क्या सेवा कर रहे हैं? उनका का काम है कि अपने गाँव का जो ऋण उन पर है वह चुकावें और उसके लिये गाँव की सेवा में लग जायं।

सबसे समान व्यवहार करो

अंत में एक बात और। यह क्षेत्र है। क्षेत्र में ब्राह्मण ऊंचे माने जाते हैं और हरिजन नीच माने जाते हैं। मुझसे कहा गया है कि मैं इस बारे में कुछ कहू। लेकिन इस बारे में आप मुझसे मत पूछिये। इस गोदावरी नदी को ही पूछिये। क्या यह गोदावरी ब्राह्मण को पानी पिलाती है और हरिजन को नहीं पिलाती? तो जैसे गोदावरी सब के साथ समान व्यवहार करती है और यह सूर्य सब को समान भाव से प्रकाश देता है वैसे सबके साथ समान भाव से व्यवहार करना ही धर्म है। यह ऊंचा वह नीचा कहने वाले धर्म का आचरण नहीं करते। इसलिए इस क्षेत्र में किसी तरह का भेद-भाव होना ही नहीं चाहिये। दुनियां में दो ही जातियां हैं। एक सज्जनों की और दूसरी दुर्जनों की। भला बर्ताव करनेवाला चांडाल भी ब्राह्मण से बढ़ कर है, और बुरा बर्ताव करनेवाला ब्राम्हण भी चांडाल से बदतर है।

तो मेरे भाइयो, मुझे जो कहना था मैं कह चुका। मैं एक दफा आपके गाँव में आया। फिर कब आऊंगा कौन जाने? हम लोग सर्वोदय यात्रा के लिये निकले हैं। जैसे यह गोदावरी आप के गाँव से होकर गुजरती है वैसे हमारी यात्रा भी सहज ही यहां आ गई है। तो आप से मेरी प्रार्थना है कि इस क्षेत्र को सच्चे अर्थ में क्षेत्र बनाओ। यहां के हर मनुष्य को पढ़ना-लिखना आना चाहिये एक बात, और यहां जो चीजें बनती हैं उन्हीं को आप को खरीदना चाहिये यह दूसरी बात। एक ज्ञान की है और दूसरी प्रेम की। ये दो बातें आप ध्यान में रखियेगा। मेरा आप को प्रणाम।

सोन अर्थात् सुवर्णपुर, (जि० आदिलाबाद)
२३-३-५१

सतरहवाँ दिन—

: २१ :

गाँव गोकुल बने

मुझे बहुत आनंद होता है कि आप इतनी बहनें और भाई दूर दूर के गाँव से हम लोगों से मिलने के लिये आ गये हैं। अभी दो तीन साल के पहले आपका यह हैद्राबाद का राज्य बड़ा दुखी था। रजाकार लोगों का जुल्म चल रहा था और आप सब लोग भयभीत थे। कोई कुछ कर नहीं सकता था। लेकिन रजाकारों की सल्तनत खतम हुई और आप लोग अब आजादी से इकट्ठे हुए हैं। नहीं तो ऐसी सभाओं में कौन आ सकता था?

आजादी का मतलब

लेकिन आजादी का यह मतलब नहीं है कि आप बिना काम किये सुखी हो जायेंगे। हम लोग हाथ पर हाथ दिये बैठे रहेंगे तो हम आजाद हो गये हैं इसलिये मुफ्त खाने या पहनने को थोड़े ही मिलनेवाला है!

अपने ही सूतका कपड़ा पहनें

आज मैंने देखा यहां पर बहुत स्त्रियां कात रही थीं, लेकिन वह देख कर भी मुझे आनंद नहीं हुआ। क्योंकि कातनेवाली बहनों के बदन पर तो मिल का ही कपड़ा था। कातने से मजदूरी मिलती है। इसलिये वे कातती हैं। लेकिन हमारे सूत की कीमत

अगर हम नहीं करेंगे तो लोग क्यों करेंगे ? हमें हमारे सूतका ही कपड़ा पहनना चाहिये।

सरकार के सिपाही हैं

लोग मानते हैं कि हमको सरकार अनाज दे, कपड़ा दे। लेकिन क्या सरकार के पास अनाज का और कपड़े का खजाना है? हम सारे हमारी सरकार के सिपाही हैं। अगर हम सिपाही का काम नहीं करेंगे तो हमारी सरकार बेकार हो जायगी। हम काम करेंगे तभी सरकार मजबूत बनेगी।

बाहर मत देखिए

इसलिये आप को मेरी सूचना है कि आप सब मिल कर एक समिति बनाइये। उस समिति द्वारा गाँव का सारा कारोबार चलाइये। गाँव में झगड़ा है तो बाहर की अदालत में नहीं जाना चाहिये। गाँव में कोई न कोई सज्जन होते ही हैं। उनके पास अपना झगड़ा रख कर उनका फैसला मानना चाहिये। सारे गाँव का हिसाब करके उसमें क्या बोना चाहिये वह तय करना चाहिये। आप के गाँव में सब तरह की शक्ति है। अनाज आप तैयार करते हैं, तरकारी आप ही करते हैं, दूध, घी भी आप के यहां होता है। इतना होते हुए भी आप भिखारी हैं, क्योंकि ये चीजें आप खा नहीं सकते, उनको बेचना चाहते हैं। और बेचते क्यों हैं? पैसे के लिये। और पैसा क्यों चाहिये? बाहर से सारा पक्का माल खरीदने के लिये। अपना कच्चा माल आप बेचते हैं और पक्का माल मोल लेते हैं। इस तरह से आप लोग स्वराज्य का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

सारा गांव एक कुटुम्ब बने

और एक बात आप को कहनी है। हरेक गाँव में अलग अलग पार्टियाँ होती हैं। उससे गाँव में झगड़े होते हैं। लेकिन सारा गाँव एक कुटुंब के जैसा होना चाहिये। कोई आपसे पूछे कि क्या आप काँग्रेसवाले हैं या कम्युनिस्ट हैं या समाजवादी हैं, तो जवाब देना चाहिये कि हम हमारे गाँव के हैं और उस गाँव की सेवा यही हमारा धर्म है। भगवान श्रीकृष्ण के गोकुल में सारा गोकुल एक कुटुंब बन गया था उस तरह आप का गाँव गोकुल बनना चाहिये। इस तरह अपने गाँववालों पर प्रेम करना सीखेंगे तो सारा गाँव भगवान का निवास-स्थान बन जायगा।

झुकें नहीं, नम्रता रखें

आखिर में एक बात। आप लोग नमस्कार करने के लिये आते हैं और पांव पर सिर झुकाते हैं। आप लोगों को खड़े रह कर ही नमस्कार करना चाहिये। हमको सीखना चाहिये कि हम किसी के आगे इस तरह अपना सिर झुकायेंगे नहीं! हमारा आदर और प्रेम हमको प्रकट करना है तो दोनों हाथ जोड़ कर नम्रता से सिर झुका कर खड़े खड़े ही नमस्कार करना चाहिये। पैर तक सिर नहीं झुकाना चाहिए। मैं आप सब को प्रणाम करता हूं।

बालकोंडी, (जि० निजामाबाद)
२४-३-५१

अठारहवां दिन—

: २२ :

सच्चा स्वराज्य

आप मेरा भाषण सुनने के लिये इतनी बड़ी तादाद में यहां आये हैं। आप की उत्सुकता मैं समझ गया हूं। आप शांति से बैठे हैं यह देख कर मुझे खुशी होती है।

स्वराज्य आने पर भी हालत क्यों नहीं सुधरी

आज घर पर बात हो रही थी तब कुछ लोगों ने कहा कि स्वराज्य आया है फिर भी कोई खास फरक हम नहीं देखते हैं। मुझे यह सुन कर आश्चर्य नहीं हुआ। देखिये आप के इस निजाम के मुल्क में करीब सात-आठ सौ साल से दूसरों की सत्ता चली आ रही है। और अब दो साल से आप की खुद की सत्ता आई ऐसा कहते हैं। अब यह स्वतंत्रता आप को किस तरह हासिल हुई है? तो बोले पुलिस ॲक्शन से। पहले के जमाने में भी इसी तरह राज्यों में फेर-बदल होते थे। एक राज्य जाता था और दूसरा आता था, लेकिन उस से प्रजा में कोई फरक नहीं होता था। तो प्रजा में कोई फरक हुए बगैर जो राज्य आता है वह स्वराज्य हो ही नहीं सकता। वह परराज्य है, चाहे उसको चलानेवाले अपने लोग भी क्यों न हो।

जब यहां रजाकारों का जुल्म था तब आप लोग भयभीत थे। तो क्या अब आप लोगों ने भय छोड़ कर के यह राज्य हाथ में लिया

है ? लोगों का भय तो जैसा का वैसा ही है। आज भी पुलिस डंडा चलायेगी तो लोग डरेंगे। परकीय सत्ता इसलिये होती है कि लोगों में भय होता है। अगर वह भय कायम है तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? परकीय सत्ता इसलिये होती है कि लोगों में आपस आपस में एकता नहीं होती। अगर लोगों में आज भी एकता नहीं है तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? परकीय सत्ता इसलिए होती है कि लोग शराबी होते हैं, व्यसनी होते हैं, पराक्रमहीन होते हैं। अगर आज भी लोग शराबी हैं, व्यसनी हैं, और पराक्रमहीन हैं, तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? लोगों में परकीय सत्ता इसलिए होती है कि लोग आलसी ह। अगर आज भी लोग आलसी हैं तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? इसलिए मुझे आश्चर्य नहीं होता कि आप लोगों की स्थिति पहले थी वैसी ही आज है। अगर मुझे कोई कहेगा कि कल रात थी और आज दिन हो गया है फिर भी प्रकाश नहीं है, तो मैं कहूंगा कि दिन नहीं हुआ है बल्कि छोटी सी लालटेन लगी हुई है। तो यही समझो कि पुलिस ॲक्शन के पहले रात थी, और आज भी रात है, लेकिन जरासी लालटेन लग गयी। लेकिन उतने लालटेन से दिन नहीं होता है। दिन के लिये तो सूर्य का प्रकाश चाहिये जो हर घर में पहुँचता है।

स्वराज्य का अर्थ

आप के इस गाँव में १२ हजार लोग रहते हैं, लेकिन यहां आपस आपस में सहकार्य से कौनसा काम चल रहा है ? क्या गाँव का शिक्षण आप लोग चलाते हैं ? आप कहेंगे हमारा रक्षण सरकार करती है और शिक्षण हमें सरकार देती है। इस तरह

अगर गाँव का सारा काम हुकूमत ही करती है तो फिर गाँव का स्वराज्य कहां रहा ? यहां कपड़ा बाहर से आता है, तेल बाहर से आता है तो गाँव में आप क्या करते हैं ? यहां बीड़ियाँ बना कर आप बंबई भेजते हैं और वहां से पैसा लाते हैं। उससे क्या हुआ ? शायद पहले से आप अधिक बीड़ियाँ पीने लगे होंगे। स्वराज्य का मतलब तो यह होता है कि हरेक गाँव अपनी-अपनी बहुत सारी आवश्यकताओं को गाँव में ही पूरी कर लेता है। और इस तरह जो गाँव स्वावलंबी होते हैं वे एक दूसरे की पूर्ति कर सकें इसलिये सरकार निमित्तमात्र होती है। सरकार का काम यह नहीं है कि गाँव को हर चीज बाहर से ला दे। सब गाँवों का संबंध बना रखने के लिये सरकार है। सरकार का काम हरेक गाँव को स्वावलंबी बनने में मदद देने का है। मेरी तो व्याख्या यह है कि जहां स्वराज्य नहीं होता है वहां दुर्गुण होते हैं। गोरी चमड़ी वाले लोग गये और काली चमड़ीवाले आये इससे स्वराज्य नहीं बनता। तो मुझे जब लोग कहते हैं कि स्वराज्य के बाद हमारी स्थिति सुधरी नहीं है तो मैं पूछता हूं कि क्या आप के दुर्गुण कम हुए हैं ? अगर हमको यह अनुभव आता है कि पहले से हमारे दुर्गुण कम हुए हैं तो स्वराज्य आया ऐसा समझ सकते हैं। अगर वैसा अनुभव नहीं आता है और चार साल पहले जिन दुर्गुणों में हम थे वे अब भी कायम हैं तो स्वराज्य हमें नहीं मिला है ऐसा समझना चाहिये। इसलिये मुझे आप लोगों को यही कहना है कि अभी स्वराज्य हासिल करना बाकी है ऐसा समझ कर आप जोरों के साथ काम में लग जाइये।

हरेक को दो भाषाओं का ज्ञान हो

अब दूसरी बात जो आज मुझे सूझ रही है वह मैं कहता हूं। हमारी विधान सभा ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार किया है। इसलिये अब हरेक को राष्ट्रभाषा का उत्तम अभ्यास करना चाहिये। मैंने तो यह उपमा दी है कि जैसे मनुष्य को दो आंखें होती है वैसे हरेक हिंदुस्तानी को दो भाषाओं का ज्ञान होना चाहिये, एक अपनी मातृभाषा और दूसरी राष्ट्रभाषा। मेरा तर्जुमा करने के लिये जो यहां खड़े हैं उन्होंने हिंदी भाषा का अच्छा अभ्यास नहीं किया है। तो हो यह रहा है कि आपके लिये जो विचार मैं भेजता हूं उसमें से कुछ आपके पास पहुंचते हैं और कुछ बीच में खतम हो जाते हैं। यह आज का अनुभव ध्यान में लीजिये और जल्दी से जल्दी राष्ट्रभाषा का अध्ययन सब कर लीजिये।

बड़े राष्ट्र की जिम्मेवारी

इन दिनों छोटे-छोटे राष्ट्र टिकते नहीं हैं। हिंदुस्तान जैसा बड़ा देश ही टिक सकता है। पुराने जमाने में छोटे छोटे राष्ट्र टिकते थे। लेकिन आज जमाना दूसरा आया है। आज बड़े राष्ट्र ही टिक सकते हैं। और आगे तो हम ऐसा स्वप्न देखते हैं कि सारी दुनिया मिल करके एक ही राज्य बन जाय।

तो यह सब ध्यान में लेकर हरेक नागरिक का कर्तव्य है कि भारत की कोई भी एक भाषा और अपनी मातृभाषा अच्छी तरह सीखे। सारे भारत को एक माना है तो यह जिम्मेवारी उठानी ही चाहिये।

आरमूर (जि० निजामाबाद)
२५-३-५१

उन्नीसवां दिन—

: २३ :

हमारे पाप

आज मुझे इस बात की खुशी है कि मैं हिंदुस्तानी में ही बोलूंगा और आप मेरे व्याख्यान को समझ लेंगे। नहीं तो अकसर मेरे वाक्यों का तर्जुमा करना पड़ता था तेलगु में, जिसमें भाषण का बहुतसा सार मैं खो बैठता था। लेकिन वह बात आज नहीं होगी और मेरी आवाज सीधी आपके कानों तक और मैं उम्मीद करता हूं कि हृदय तक, पहुंचेगी।

अभी आप लोगों को सुनाया गया कि हम वर्धा से पैदल-यात्रा के लिये निकल पड़े हैं। शिवरामपल्ली में सर्वोदय संमेलन होने जा रहा है, वहां जा रहे हैं। वैसे रास्ते में तो आप का गाँव नहीं आता है, थोड़ा बाजू में है। इसलिये यहां आने का मैंने नहीं सोचा था। लेकिन आपके गाँववाले पहुंच गये। उन्होंने बहुत आग्रह किया तो मैं पिघल गया। और आप लोगों के दर्शन करने के लिये आरमूर से आज १७ मील चल कर पहुंच गया हूं।

छोटे देहात में क्यों जाता हूं

अकसर मेरी इच्छा खास कर छोटे छोटे गावों में जाने की होती है। क्योंकि ऐसे छोटे गाँवों में लोग बहुत कम पहुंचते हैं। इसके अलावा पदैल-यात्रा का यह उद्देश्य था कि जिन

देहातों में अक्सर जाना नहीं होता है वहां जा कर वहां की स्थिति देखूँ। तो आप का गाँव वैसे छोटा भी नहीं था और रास्ते पर भी नहीं था। दोनों लिहाज से यहां आने का मुझे कोई आकर्षण नहीं था। फिर भी आप लोगों के प्रतिनिधियों ने आपका प्रेम मुझे पहुंचाया वह मुझे यहां खींच लाया है। छोटे देहात में जाना होता है तो घंटा डेढ़ घंटा उस गाँव में मैं घूम लेता हूं। मेरे कार्यक्रम में यह भी एक चीज है। बहुत सारे घरों में जाता हूं; वहां की बहनों से बातचीत करने का मौका मिलता है। इस तरह काफी प्रेमभाव महसूस होता है। मेरे और गाँववालों के बीच कोई परदा नहीं रहता।

शहर की व्याख्या

अब यह बात शहरों में तो नहीं होती। शहर में यह अपेक्षा भी नहीं होती कि सब से परिचय हो। इतना ही नहीं बल्कि मैंने तो शहर की व्याख्या ही यह की है कि शहर वह है जहां मनुष्य अपने पड़ोसी को नहीं पहचानता। अगर आप से पूछा जाय कि आपके पड़ोसी कौन हैं और वे क्या करते हैं, और आप उसका जवाब मुझे दे सकें तो मैं कहूंगा कि आप दर असल नागरिक हैं ही नहीं। आप देहात के रहनेवाले हैं। शहर तो वह है जहां एक दूसरे की पहचान नहीं, एक दूसरे की परवाह नहीं, और जहां प्रेम का कोई सवाल ही नहीं। हरेक अपने अपने में मग्न है। अगर दूसरे किसी से संबंध आया तो अपनी गरज से। टिकट घर पर लोग इकट्ठा होते हैं उनके बीच में कोई संबंध

नहीं होता सिवाय इसके कि हरेक को अपनी अपनी टिकट कटानी होती है। वैसे शहर में जो समुदाय इकट्ठा होता है वह समुदाय की गरज से नहीं बल्कि अपनी गरज से होता है। तिसपर भी मानवता होती है इसलिये कुछ प्रेमभाव पैदा हो जाय तो लाचारी की बात है।

शहरों में नहीं रहते

एक पुरानी कहानी है। उपनिषदों में वह किस्सा आया है। एक राजा था और उसने किसी ज्ञानी का नाम सुना। राजा का दिल बड़ा था। जब वह किसी ज्ञानी का नाम सुनता तो उससे मिलने की उसको बहुत तीव्र इच्छा हो जाती थी। तो राजा ने अपने सारथी को बुला कर कहा कि "जाओ भाई, फलाने ज्ञानी का नाम मैंने सुना है उसका पता लगाओ। वह कहां रहता है ? ढूंढ निकालो।" राजा के हुक्म से सारथी गया और उसने सारी राजधानी ढूंढी। लेकिन जिस ज्ञानी को ढूंढना था उसका कोई पता नहीं लगा। वह राजा के पास वापिस आया और कहा, "मैंने सब जगह ढूंढ लिया लेकिन "नाविंद इति प्रत्येयाय"—मुझे वह ज्ञानी नहीं मिला।" तो राजा बोला, "अरे मूरख तू कैसा है, ज्ञानी जहां होते हैं वहां ढूंढना चाहिये। ज्ञानी क्या कहीं शहर में होते हैं ?" फिर वह सारथी जंगल में गया। वहां उसको वह ज्ञानी मिला। फिर राजा को आकर सारथी ने यह बात बताई। राजा ज्ञानी के पास पहुंचा और बहुत कुछ ज्ञान उस ज्ञानी से उसने हासिल किया। वह सारा उपनिषद में दिया

है। हम लोगों को आश्चर्य होगा कि वह उपनिषद का ऋषि ज्ञान की आशा ही शहर में नहीं करता है। और इधर देखो तो जो भी विद्यालय, हाईस्कूल या कॉलेज आदि खुले हैं सारे शहरोंमें हैं। मानों सरस्वतीदेवी ने अपने कमलासन को छोड़ कर नगर में ही आसन डाला है। लेकिन उस जमाने में यह बात जितनी सही थी उससे भी आज वह ज्यादा सही है कि शहर में कोई विद्या नहीं है।

शहरों में विद्या का लय

मैं तो बहुत दफा कह चुका हूं कि शहरों में विद्यालय तो बहुत खुले हैं लेकिन वहां विद्या का लय होता है, विद्या का आलय वह नहीं है। आजकल के विद्यालयों में जो विद्या पढ़ाई जाती है वह बिलकुल ही बेकार है। नागरिकों से जो कुछ आशा करनी है उसके लायक विद्या हाईस्कूल, कालिजों में होनी चाहिये, वह वहां मौजूद नहीं है तो वह विद्या किस काम की? आज कल जो विद्या चलती है वह हमारे काम की नहीं है, उसमें फौरन परिवर्तन होना चाहिये; यूं कहते कहते सरदार वल्लभभाई पटेल चले गये। और मैंने तो कई दफा कहा है कि भाई इस तरह की विद्या होने के बजाय न होना बेहतर है। अगर नये ढंग के विद्यालय शुरू करने में देरी लगती है तो कम से कम पुरानी विद्या तो बंद कर दो। चार-छः महीने बच्चों को छुट्टी दे दो, कोई नुकसान नहीं होगा। वैसे तो आज जिस तरह स्कूल चलती है उसमें भी चार-छः महीनों की छुट्टी होती है। गरमी की मौसम में

लगातार दो-दो महीने छुट्टी होती है जब कि किसान धूप में अपने खेत पर काम करता है। लेकिन हम मकानों में बैठ कर विद्या का आदान-प्रदान नहीं कर सकते! इस तरह साल भर में चार-छः महीने छुट्टी लेते हैं और बारह-बारह पंद्रह-पंद्रह साल सीखते रहते हैं। बच्चों पर उनके मां-बाप तालीम के लिये पैसा खर्च करते हैं। और बच्चे बिना काम किये जिंदगी कैसे बसर हो इसकी खोज में रहते हैं। इसमें उनका कोई दोष नहीं है। जो विद्या उन्हें मिली है वह निर्वीर्य है। तो बच्चों के शरीर भी नाजुक बनते हैं। कोई रुहानी याने आत्मिक ताकत मिलती नहीं है, काम की आदत पड़ती नहीं और कोई दस्तकारी सिखाई जाती नहीं। जो उठता है उपदेश देता है कि देश की पैदावार बढ़ाने की आवश्यकता है, और हरेक का काम है कि देश के लिये कुछ न कुछ पैदा करे। इस तरह प्रवचन देनेवाले देते हैं और सुननेवाले सुनते हैं। लेकिन दोनों मिल-कर कोई चीज पैदा नहीं होती। चीज तो तब पैदा होती है जब कोई करे। लेकिन करने की तालीम स्कूल में नहीं है। इस हालत में देश का कोई भला यह शहर की तालीम नहीं कर रही है। उससे बेकारी में वृद्धि होती है, मनुष्य के दिल में एक तरह का असंतोष पैदा होता है। इसलिये यद्यपि शहरों में इतने विद्यालय हैं फिर भी देश का भला हो, मानवता ऊंची उठे, दीनों के दुःख मिटें परस्पर सहकार बढे, सारा देश वीर्यवान, बलवान हो ऐसा कोई काम हम कर नहीं पाते। और सारे शहर एक तरह से राष्ट्र के लिये भाररूप से हो गये हैं।

युवानों में सर्वोदय का संदेश सुनने की उत्सुकता

ऐसी निकम्मी तालीम दी जाने के बावूजूद मैं जब कभी शहरों में हाईस्कूल या कॉलेजों में गया हूं और वहां बोला हूं तो आश्चर्य चकित हुआ हूं। क्योंकि मैं देखता हूं कि वहां के लड़के सर्वोदय के विषय में मैं जो कहता हूं वह सुनने के लिये अत्यत उत्सुक रहते हैं और उससे प्रभावित होते हैं। हाईस्कूल, कॉलेजों के नवयुवकों में एक ऐसी आकांक्षा काम कर रही है जिससे उनका जी छटपटा रहा है कि कुछ न कुछ करना चाहिये जिससे हमारा देश आगे बढ़े। मानव में रजोगुण और तमोगुण काम करते ही हैं, और इन दिनों इन दोनों का नाच बहुत जोरों से चल रहा है। रिश्वतखोरी बढ़ी है, आलस्य बढ़ा है शराबखोरी और दूसरे व्यसन बढ़े हैं, एक दूसरे को लूटने का विचार हो रहा है, यह सब हो रहा है। लेकिन इतना होते हुए भी युवानों में एक ऐसी सद्भावना और शक्ति काम कर रही है जो इस बिगड़ी हुई हवा से बिलकुल अलिप्त है और जिसको अपनी ही कल्पना में विचरने की इच्छा हो रही है। युवानों को लग रहा है कि चाहे साम्यवाद आये, चाहे समाजवाद आये, चाहे सर्वोदय आये, किसी भी तरह से आज जो बुरी हालत है वह जाय। इस तरह की प्रेरणा तरुणों में मैंने देखी है। मैंने सोचा इसका कारण क्या होगा। तो कारण मुझे यही लगा कि इस देश पर भगवान की कृपा हो रही है।

वैसे यह देश एक पुण्यभूमि के तौर पर सारी दुनिया में मान्य है। हम तो कहते ही आये हैं कि " दुर्लभं भारते जन्म "

लेकिन सारी दुनिया कबूल करती है कि हिंदुस्तान के इतिहास में एक ऐसी विशेषता है जो दूसरे देशों के इतिहास में कम पाई जाती है। यहां हमने अनेक प्रकार की तपस्या की है। यहां अनेक खोजें हुई हैं। अनेक तरह के आध्यात्मिक शोध यहां हुए हैं। इन दिनों पश्चिम में जिस तरह वैज्ञानिक और प्रापंचिक शोध हुये हैं वैसे हमारे यहां आध्यात्मिक शोध और प्रयोग हुये हैं। यह देश क्या है? यह तो सारी पृथ्वी का एक दर्शन है। "नाना धर्माणं पृथिवीम् विवाचसम्" अनेक धर्मवाले और अनेक भाषावाले लोग पृथ्वीभर में फैले हुये हैं और "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" यह सारी भूमि मेरी माता है और मैं उस भूमि का पुत्र हूं, यह जो सारी पृथ्वी के लिये वैदिक ऋषि ने कहा था वह इस भरतभूमि के लिये भी उतना ही लागू है। यहां के विचारवान और ज्ञानी लोगों ने कभी आप पर भेद नहीं रखा। जिसे संकुचित देशाभिमान कहते हैं वह इस भूमि में कभी जन्मा ही नहीं। इसलिये दुनियाभर के लोग यहां आये तो उनका बहुत प्रेम से यहां स्वागत हुआ है। इस तरह के कई पुण्य इस भूमि में हुए हैं तो परमेश्वर की कृपा उस पर होनी ही चाहिये।

हमारी भूमि के कुछ पाप

लेकिन जैसे इस भूमि में कुछ पुण्य हुए हैं वैसे कुछ पाप भी हुए हैं। और पापों को पुण्य के साथ भुगतना ही पड़ता है। यह नहीं होता कि पांच रुपयों का पुण्य किया और तीन रुपयों का पाप किया तो आखिर दो रुपयों का पुण्य बचा। पाप-पुण्य का हिसाब पैसे जैसा नहीं होता है। अगर पांच रुपयों का पुण्य

किया है तो वह भी अलग से भोगना है और तीन रुपयों का पाप किया है वह भी अलग से भोगना है। दोनों को भोगना पड़ता है। एक में से दूसरा बाद नहीं होगा। बहुत लोगों को इस बात का खयाल नहीं होता। वे बहुत पाप करके पैसा कमाते हैं और फिर सोचते हैं कि कुछ दान देंगे, धर्मशाला बांध देंगे तो उस पुण्य से पाप खतम हो जायगा। लेकिन पाप और पुण्य दोनों अलग से भोगने पड़ते हैं। तो इस पुण्यभूमि में यद्यपि पुण्य काफी हुआ था तो भी पाप भी हुआ था। वह पाप यह कि यहां के लोगों ने उच्च-नीच भाव को बढ़ाया। हमारे समाज की रचना में श्रम के लिहाज के खयाल से वर्ण-व्यवस्था का उदय हुआ और इसमें मैं कोई दोष नहीं देखता हूं। लेकिन उस वर्ण-व्यवस्था में आगे चल कर उच्च-नीच भाव दाखिल हुए और जितने-जितने परिश्रम के उपयोगी काम थे वे सारे नीच श्रेणी के गिने गये। और वे काम करने वाले मनुष्य भी नीच माने गये। यहां तक कि उनमें से कुछ लोगों को अछूत तक हमने माना। काम करना बेइज्जती समझा गया। ज्ञानी काम नहीं करेगा, भक्त माला जपेगा लेकिन काम नहीं करेगा। संन्यासी काम नहीं करेगा। ब्राह्मण काम नहीं करेगा। इस तरह काम न करने वालों की संख्या बढ़ गई और उनकी इज्जत भी बढ़ गई। जो काम करते थे उनकी संख्या घट गई और उनकी इज्जत भी घट गई। यह बड़ा पाप हमारे देश में हुआ। तो उस पर परमेश्वर की अब कृपा हुई और शताब्दियों से हम लोग गुलामी भुगत चुके।

पापों का प्रायश्चित्त हुआ

अब यह दीखता है कि इस देश ने जितना पाप किया था उसका प्रायश्चित्त उसको मिल चुका ऐसा परमेश्वर को लगा। आखिर परमेश्वर कृपालु तो होता ही है। उसने अपनी कृपा इस देश की तरफ फिर से दिखाई, जो पहले भी थी। इसके सिवाय मैं और कोई कारण नहीं देखता कि हमारे जैसे टूटे-फूटे लोग भी गाँधीजी जैसा नेता निमित्तमात्र बनने पर आजादी हासिल कर सके। मैं तो हमारे लोगों में ऐसी कोई शक्ति नहीं देखता हूं कि जिसके बल पर हमको आज़ादी मिली ऐसा हम कह सकते हैं। अगर उस शक्ति का आत्मविश्वास हमें होता तो हिंदुस्तान की आज जो हालत है वह हम नहीं देखते। उसका रंग हमको दूसरा ही दीखता। यह कभी नहीं हो सकता कि स्वराज्य आता है। और लोगों का दुःख, विमनस्कता और मनोमालिन्य जो पहले था वैसा ही बना रहा। लेकिन ऐसा बना है तो उसका मतलब यह है कि परमेश्वर की इच्छा से ही हम स्वराज्य में दाखिल हुए हैं। इसी कृपा के कारण मैं यह देख रहा कि आज के बिगड़े हुए वातावरण में भी हाईस्कूल और कॉलेजों के युवानों में उच्च आकांक्षा और सद्भावना कुछ अंश में सर्वत्र है।

साम्ययोग से तरुणों को स्फूर्ति

हम लोग आश्रम में काम करते हैं वहां मेरे पास काफी तरुण लोग हैं। बहुत सारे तो हाईस्कूल-कॉलेजों को छोड़ कर आये हैं। और वहां आ कर वे क्या करते हैं? कोई खेती में लग

गये हैं, कोई जमीन खोदते हैं, कोई पानी खींचते हैं, कोई रसोई करते हैं, कोई भंगी का काम करते हैं। हमको कुआं खोदने की जरूरत थी तो आखिर वह भी हमने शुरू कर दिया। जिन तरुणों को उस काम का कोई अनुभव नहीं था वे उस काम को बड़े उत्साह के साथ कर रहे हैं। मैं बड़ा ताज्जुब में रह जाता हूं कि यह प्रेरणा उन जवानों में कहां से आयी। तो सिवाय इसके कि यह परमेश्वर की इच्छा है, मुझे और कोई जवाब नहीं मिलता है। और क्योंकि इसमें मैं परमेश्वर की इच्छा देख रहा हूं तो मेरा उत्साह परमावधि को पहुंचता है। जब मैं हिंदुस्तान की अभी की हालत के विषय में लोगों में निराशा देखता हूं तो उस निराशा का जरा भी स्पर्श मुझे नहीं होता। क्योंकि मैं देखता हूं कि यद्यपि काफी अंधकार फैला हुआ है, फिर भी उसको तोड़नेवाली शक्ति का जन्म हो रहा है, याने युवानों में बलवान प्रेरणा काम कर रही है। उनकी आत्मा उछल रही है। वे देख रहे हैं कि कौन ऐसा मिलता है जो हमें मार्ग बतायेगा जिससे कि सारे हिंदुस्तान में साम्ययोग दीख पड़ेगा। बस साम्ययोग का नाम लीजिये और तरुणों का उत्साह देखिये। इसीलिये जिन्होंने बिलकुल परिश्रम नहीं किया था वे परिश्रम के लिये तैयार हो रहे हैं। और इस तरह का काम जहां भी आप शुरू करेंगे वहां जवान लोग उत्साह से काम करने के लिये सामने आते हैं ऐसा दृश्य आप को दीख पड़ेगा।

मेरा खास दावा

इसलिये मैं बहुत दफा कॉंग्रेस वालों को सुनाता हूँ। उनको इसलिये सुनाता हूं कि वह एक बड़ी जमात है। उसके पीछे तपस्या का भाव है। पचास-साठ साल के इतिहास में कॉंग्रेस ने बहुत भारी तपस्या की है। इस युग में कई महान् महान् पुरुष हमारे देश में पैदा हुये और उन सबका प्रयत्न कॉंग्रेस के द्वारा हुआ। इसका मतलब यह हुआ कि कॉंग्रेस ऐसी संस्था बनी कि जिसका संपर्क सारे देश से आ गया। इसलिये मैं कॉंग्रेसवालों को सुनाता हूं। लेकिन मैं दूसरे लोगों को भी सुनाता हूं। समाजवादियों में मेरे कई मित्र हैं। वे जानते हैं कि यह एक ऐसा मनुष्य है जो भेद-भाव नहीं रखता है। मेरा ऐसा खास दावा है कि मैं अपने को किसी पक्ष का कभी समझता ही नहीं हूं। मेरे सिर पर किसी तरह का लेबल कभी चिपका ही नहीं। मेरा दिमाग किसी वाद के पीछे पागल नहीं हुआ है। जहां जहां सत्य का थोड़ा अंश भी दीख पड़ता है वह ग्रहण करने के लिये मैंने अपनी बुद्धि को हमेशा स्वतंत्र रखा है। इसलिये समाजवादियों में भी मेरे कई मित्र पड़े हैं। तो मैं उनको भी सुनाता हूं और सबको सुनाता हूं कि अभी वाद-विवाद छोड़ दीजिये। वाद के लिये अभी मौका नहीं है। देश अभी ही स्वतंत्र हुआ है। जहां देश स्वतंत्र होता है वहां कई तरह की शक्तियां काम करती हैं। उनमें कुछ शक्तियां प्रतिक्रियावादी भी होती हैं। उनका मुकाबला सबको मिल कर करना चाहिये। जब इनका मुकाबला होगा और देश का नैतिक

स्तर चाहिये वैसा बनेगा उसके बाद अपने अपने वादों के लिये अवकाश रहेगा। तब तक वादों को छोड़ो और सारे लोगों की सेवा में लग जाओ।

लोगों की सेवा कैसे होगी

और सेवा व्याख्यान श्रवणादि से नहीं बल्कि प्रत्यक्ष शरीर-परिश्रम से होगी। आज हिंदुस्तान के हरेक नागरिक से, और ग्रामीण से, चाहे वह पुरुष, स्त्री, बच्चा, बूढ़ा कोई भी हो, यह आशा की जाती है कि उस से जो भी प्रयत्न बन सकेगा अपनी मातृभूमि के लिये उसे करना चाहिये। अगर यह नहीं होता है तो हमारे देश की समस्या हल नहीं होगी। लोग मुझे पूछते हैं कि सर्वोदय क्या है ? मैं कई तरह के अर्थ समझाता हूं। एक अर्थ यह भी समझाता हूं कि सर्वोदय याने सब का प्रयत्न। एक बच्चा भी ऐसा नहीं रहना चाहिये कि जिसने देश के लिये कुछ न कुछ काम नहीं किया है। इसीलिये गांधीजी ने हरेक को दीक्षा दी कि सूत कातो। और भी दूसरे काम करो। लेकिन कोई इतना कमजोर है कि दूसरा कुछ काम नहीं कर सकता तो वह भी थोड़ा सूत अगर कात लेता है तो देश की पैदावार में उतनी वृद्धि होती है। जैसे बूंद बूंद से नदी बनती है वैसे हरेक मनुष्य से इस वक्त परिश्रम होना अत्यंत जरूरी है।

मैं तो समझता हूं कि आप ऐसा कोई कार्यक्रम प्रत्यक्ष पैदावार का निकालो। गरीबों से एकरूप होने का कार्यक्रम

निकालो कि जिससे अमीर, गरीब, शिक्षित, अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण यह सारा भेद मिट जाय, किसी प्रकार का उच्च-नीच भाव न रहे। इस तरह का कार्यक्रम शुरू करो तो कोई वाद का सवाल ही पैदा नहीं होगा और आप देखेंगे कि तरुणों को कितना उत्साह आता है और कितनी तीव्र प्रेरणा से वे उस कार्यक्रम में शामिल होते हैं।

तो मैं सब से पहले कॉंग्रेसवालों को सुनाता हूं फिर समाजवादियो को सुनाता हूं और बाद मे और भी जो बहुतसे वादी पड़े हैं उनको सुनाता हूं कि भाइयो, तुम्हारे जो भी अलग विचार हैं वह सारे रखो तुम्हारे पास। मैं यह नहीं कहता कि उनको छोड़ दो, क्योंकि जो विचार तुमको अच्छे लगते है और तुम्हारे दिल में बैठे हैं वे आप कैसे छोड़ेंगे? और छोड़ना भी नहीं चाहिये। लेकिन उन विचारों को ध्यान में रखते हुए भी यह समझो कि फिलहाल देश को शरीर-परिश्रम की जरूरत है और भेदभाव मिटाने के कार्यक्रम हाथ में ले लो। तो देखोगे कि कितनी महान् शक्ति पैदा होती है। हमने थोड़ा करके देखा है जिससे हमको अनुभव आया है कि कितनी स्फूर्ति उससे मिलती है। देखनेवालों और सुननेवालों को स्फूर्ति मिलती है तो प्रत्यक्ष करनेवालों को कितनी मिलती होगी इसका अंदाजा आप लगाइये।

आज आपके शहर में आया तो यह विचार सहज सूझा कि शहर और देहात में भेद क्यों होना चाहिये? शहरों को देहात की सेवा में लग जाना चाहिये। देहातियों में शहरों को मदद

करने की प्रेरणा होनी चाहिये। इस तरह एक दूसरे को एक दूसरे की मदद करने की प्रेरणा क्यों नहीं होनी चाहिये? ऐसी प्रेरणा यदि होती है तो यह सारा भेद मिट जायगा और सारे मिल-कर हिंदुस्तान की सेवा में लग जायेंगे। भगवान नें हरेक को अलग अलग शक्ति दी है। इस तरह की विषमता दुनियाँ में है इसमें दोष नहीं बल्कि लाभ है। अगर संगीत में केवल 'सा' 'सा' 'सा' ऐसा एक ही स्वर होता, 'ग' 'म' आदि कुछ नहीं होते तो संगीत ही नहीं बनता। लेकिन भिन्न-भिन्न स्वर होते हुये भी हरेक में भिन्न भिन्न गुण हैं इसलिये मधुरता होती है और सब मिल कर सुंदर संगीत बनता है। वैसे शहरवालों में कुछ शक्तियाँ पड़ी हैं, लेकिन वे सारी एक दूसरे के खिलाफ काम करतीं हैं तो उन शक्तियों का जोड़ नहीं होता बल्कि घटती ही होती है। दस के विरोध में अगर आठ खड़े होते हैं तो दोनों मिल कर दो ही शक्ति रह जाती है। लेकिन दस के साथ अगर आठ लगते हैं तो शक्ति अठारह बनती है। यह सीधी गणित की बात है। तो हमारे देश में शक्ति काफी पड़ी है। लेकिन उस शक्ति का साक्षात्कार हमें तब होगा जब कि वह सारी एक दिशा में लग जाय। नदी का पानी जब कई जगहों से एक दिशा में आता है तो शक्तिशाली नदी बनती है। लेकिन पानी अगर इधर उधर दौड़ता चले और नदी न बने तो वह सारा का सारा पानी कहीं न कहीं गायब हो जायगा। उसमें से कोई विशेष महान प्रवाह बनता हुआ दीख नहीं पड़ेगा। वैसे हममें शक्ति कम नहीं है।

लेकिन वह सारी अगर एक दिशा में लग जाती है तो उसका प्रकाश पड़ेगा, उसका स्वरूप दीख पड़ेगा, उसके परिणाम का अनुभव आयेगा।

मेरे भाइयो, मैंने आपको काफी सुनाया। अगर आप के दिलों तक मेरी बात गई है तो कुछ न कुछ उत्पादक शरीर-परिश्रम में लग जाइये और ऊंच-नीच भाव मन में से बिल्कुल निकाल दीजिये। यह मेरी आप से प्रार्थना है।

निजामाबाद
२६-३-५१

बीसवाँ दिन—

: २४ :

सज्जनों का समाज

कुष्ठ-रोगियों की सेवा

आप के इस गांव में कोई पंद्रह-बीस साल पहले मैं एक बार आया था। लेकिन यहां गांव के भीतर नहीं आया। कुष्ठ-रोगियों का दवाखाना देखने के लिये आया था जो उन दिनों बहुत मशहूर था। हिंदुस्तान भर में इस तरह के कुष्ठ-रोगियों के दवाखाने ईसाई भाइयों ने चलाये हैं। वैसे हिंदुस्तान में ईसाइयों की संख्या बहुत कम है। और जो बीमार होते हैं उनमें ज्यादातर हिंदू-मुसलमान ही होते हैं, ईसाई कम होते हैं। उन दिनों हमारे मन में विचार आता था कि हम ऐसी सेवा क्यों न करें? वैसे हम लोग दूसरी सेवा तो करते थे, जैसे हरिजन सेवा, खादी आदि। लेकिन कुष्ठ-रोगियों की सेवा का काम हाथ में नहीं लिया था। जब इस सेवा के क्षेत्र में आने की इच्छा हुई तो हममें से एक इस काम के लिये तैयार हो गये। उनकी तीव्र इच्छा हुई कि यह काम करें। तब वर्धा में हमने यह काम शुरू कर दिया। उस दृष्टि से उस समय वह दवाखाना मैंने देखा था और देखकर मुझे बहुत खुशी हुई थी। हमारे मित्र श्री मनोहरजी ने यह काम शुरू किया। वे खुद डॉक्टर नहीं थे। लेकिन इस काम के लिये जरूरी डॉक्टरी का ज्ञान

उन्होंने प्राप्त किया । इतने दिन उन्होंने अकेले ही काम किया । वैसे वर्धा के कुछ डॉक्टरों ने भी उनकी मदद की ।

लेकिन अब वहां दो अच्छे कार्यकर्ता इस काम के लिये मिले हैं । बीमारों की व्यवस्था भी अच्छी है । गांधीनिधि वालों ने भी तय किया है कि उस निधि से इस काम को कुछ मदद पहुंचाई जाय । क्योंकि महात्मा गांधी ने जो रचानात्मक कार्य बताये हैं उनमें इस काम का भी समावेश है । हम आशा करते हैं कि वह काम अब ठीक चलेगा ।

सेवकों की कमी

लेकिन भारत में सेवकों की बहुत कमी है। और यह सेवकों की कमी हमारे हर काम में बाधा डाल रही है । मानों फसल तो बहुत ज्यादा है और काटनेवालों की कमी है । हमारे देश में आज तरह-तरह के सेवकों की जरूरत है । आज तक स्वराज्य नहीं था तो वह प्राप्त करने में कार्यकर्ताओं की शक्ति लगी थी । लेकिन अब स्वराज्य मिलने पर कार्यकर्ताओं को सेवा के काम में लग जाना चाहिये ।

सेवकों का काम

भारत देश में केवल यही एक रोग नहीं है । और भी बहुत रोग हैं । इन सब रोगों से लोगों को मुक्त करना सेवकों का काम है । लोगों को अच्छा खाने को भी नहीं मिलता । अच्छी खुराक के अभाव में रोगों की बन आती है । तो रोगों की भी एक समस्या है । और दरिद्रता की भी एक समस्या है। फिर दरिद्रता की समस्या के साथ व्यसनों की भी समस्या है । जिधर देखो उधर शराबखोरी

चल रही है। इधर इस मुल्क में तो लोग शराब खूब पीते दीखते हैं। सब को शराबखोरी से मुक्त करना हमारा काम है। मतलब यह कि जिधर देखो उधर सेवा का काम पड़ा ही है। इसलिये सेवा में फौरन लग जाना चाहिये। काँग्रेसवालों को और दूसरे जो सेवक हैं उनको भी।

शराब के विरुद्ध प्रचार की आवश्यकता

पुराने जमाने में काँग्रेस पिकेटिंग द्वारा शराब के विरुद्ध प्रचार करती थी। अब तो काँग्रेस का ही राज्य है, लेकिन सरकार को लगता है कि शराबबंदी से सरकार की आमदनी बंद होगी और लोग तो छिप छिप कर चोरी से शराब पीते ही रहेंगे। इसलिये कार्यकर्ताओं का काम है कि चित्रों और व्याख्यानों के जरिये शराब की बुराइयों को लोगों के सामने रखें। जब ऐसे प्रचार से वातावरण तैयार हो जायगा तो गाँव गाँव में प्रस्ताव पास करके सरकार को शराबबंदी के लिये कानून बनाने की बात हम कह सकते हैं। याने इधर ज्ञान-प्रचार द्वारा और उधर कानून द्वारा यह काम करना होगा।

जो व्यसन लोगों में सालों से घुसा हुआ है उसे निकालने में तकलीफ तो होगी; लेकिन यह बात भी सही है कि हमारे सारे देश में वातावरण शराबखोरी के लिये अनुकूल नहीं है, प्रतिकूल है। यद्यपि सब लोग इसके विरोध में हैं फिर भी कुछ जातियां, जैसे हरिजन आदि, शराब अधिक पीती हैं। इसलिये केवल क़ानून से यह काम हो, ऐसा नहीं मानना चाहिये। हम लोगों को प्रचार भी

काफी करना चाहिये। और ये जो प्रचारक होंगे वे केवल प्रचारक नहीं होंगे बल्कि गाँवों की विविध सेवा करनेवाले कुशल सेवक होंगे। अगर वे ऐसा करेंगे तो आप को यहां कम्युनिज्म का जो डर लगता है उसको भी वे रोक सकेंगे। क्योंकि आखिर कम्युनिस्टों का जो हिंसक तरीका है वह हमारे देश को कभी पसंद नहीं आ सकता। फिर भी क्योंकि देश में गरीबी है, लोग उनकी बात मान लेते हैं। अगर हम लोग देहातों में चले जांय और उनकी सेवा में लग जांय तो उन्हें महसूस होगा कि काँग्रेसवाले हमारी सेवा में लग गये हैं। इस दृष्टि से सेवा के बारे में यह डिचपल्ली का दवाखाना हमें गुरुरूप बना है। दूर दूर से अंग्रेज लोग आते हैं और हमारी सेवा करते हैं यह क्या हमारे लिये शरम की बात नहीं है ! काँग्रेस-वाले अगर आइंदा इस तरह सेवा के काम में नहीं जुट जायेंगे तो काँग्रेस खतम होगी। यह तो मैंने सेवकों के लिये कहा। किंतु गाँववालों को भी चाहिये कि वे भी खुद अपनी सेवा करें।

सज्जनों का समाज

लोग यह नहीं कह सकते कि हमारे यहां सेवक नहीं हैं। जंगल के जानवर भी शेर आदि हिंसक पशुओं से बचने के लिये आपस में झुंड बना कर रहते हैं, और एक दूसरे की मदद करते हैं। आप लोग तो आखिर मनुष्य हैं। अगर आप प्रेम से रहेंगे और एक दूसरे की मदद करेंगे तो गाँव की रक्षा सहज कर सकते हैं। जैसे हम अपने परिवार की सोचते हैं वैसा सारे गाँव की भी सोचने की आदत डालनी चाहिये। लेकिन अपने परिवार के बाहर हम

सोचते ही नहीं। सालों से यही आदत पड़ी है। इसलिये आप लोगों को गाँव में सज्जनों का एक समाज बनाना चाहिये। जानबूझ कर मैने इसे 'समाज' नाम दिया है। याने यह जो समाज बनेगा वह किसी तरह का अधिकार नहीं चाहेगा। वह सिर्फ सेवा करना चाहेगा।

गाँव में दुर्जन भी होते हैं। आपस आपस में संघ करते हैं। लेकिन सज्जन लोग ऐसा संघ नहीं करते। हरेक सज्जन अकेला अकेला काम करता है इसलिये सज्जनों की शक्ति प्रकट नहीं हो पाती। इसलिये हम लोगों ने सर्वोदय-समाज कायम किया है। ऐसा सज्जनों का समाज हर गाँव में बनना चाहिये फिर यह सोचेगा कि गाँव की बुराइयों का मुकाबला कैसे किया जाय? इस समाज को चाहिये कि सारी समस्याओं पर सोचे। यही सज्जनसंघ का काम होगा। ऐसा संघ आप अपने गांव में कायम करेंगे और गाँव की सेवा करेंगे ऐसी मैं आशा करता हूं।

डिचपल्ली
ता. २७-३-५१

इक्कीसवाँ दिन—

: २५ :

गाँव स्वर्ग-भूमि है

हम भी देहात में रहते हैं

हम लोग वर्धा से पैदल यात्रा में आ रहे हैं। वैसे वर्धा तो एक बड़ा शहर है। लेकिन हम लोग वर्धा में नहीं रहते। वर्धा के नजदीक छोटे देहात में हम रहते हैं। आप का जैसा यह छोटा गाँव है वैसा हमारा भी एक छोटा गाँव है। महात्मा गांधी वर्धा मे रहे यह सब जानते हैं। लेकिन वे वर्धा शहर में नहीं बल्कि वर्धा से नजदीक एक छोटे गाँव में रहे। वैसे पहले वे वर्धा आये। फिर उन्होंने कहा कि हमें शहर में नहीं रहना है, बल्कि गाँव में रहना है तो कोई गाँव ढूंढो। फिर वर्धा से चार-पांच मील दूर एक छोटा गांव ढूंढ लिया। और उस गाँव का नाम सेवाग्राम रखा। उस गाँव में वे दस-बारह साल रहे। उन्होंने सारे देश का काम उस छोटे गाँव में बैठ कर किया। वहां ही बड़ी बड़ी सस्थायें खुल गई जो सारे देश का काम करती हैं। आप जानते है कि बड़े लोग तो बड़े बड़े शहरों में रहते हैं। कोई हैद्राबाद में रहेगा कोई बंबई रहेगा तो कोई दिल्ली रहेगा। हम सब महात्मा गांधी को बड़ा मनुष्य कहते हैं। लेकिन उन्होंने छोटे गाँव में रहना पसंद किया। उनको मिलने के लिये बड़े बड़े लोग

आते थे तो उनको भी वे देहात में घसीट लाते थे। उन्होंने हमें सिखाया कि हिंदुस्तान के गरीब लोग गाँवों में रहते हैं तो उनकी सेवा के लिये गाँवों में जाओ। उनकी आज्ञा और शिक्षण के मुताबिक हम लोग भी छोटे छोटे गाँवों में दस-दस पंद्रह-पंद्रह सालों से रहते हैं।

वैकुंठ की व्याख्या

छोटा गांव याने स्वर्गभूमि है। लेकिन स्वर्ग को भी मनुष्य नरक बना सकता है। हम आज सुबह आपका गांव देखने के लिये आये थे। यहां लोगों में प्रेम बहुत देखा। स्वर्ग और वैकुंठ तो प्रेम को ही कहते हैं। जहां प्रेम है वहां वैकुंठ है। मैंने देखा कि आप के इस गांव में प्रेम बहुत है। तो यह एक स्वर्ग हो सकता है। लेकिन उस प्रेम के साथ ज्ञान भी चाहिये, और स्वच्छता भी चाहिये, तब स्वर्ग बनता है। तो जहां प्रेम है, ज्ञान है और स्वच्छता है वहां वैकुंठ आ गया। आपके घरों में तो कुछ स्वच्छता देखी लेकिन गाँव काफी गंदा था। तो सब लोगों को मिल कर रोज कुछ न कुछ गांव की सफाई का काम करना चाहिये। हमारे यहां छोटे छोटे गांवों में सफाई का काम चलता है। एक रोज पुरुष काम करते हैं, एक रोज स्त्रियां काम करतीं हैं और एक रोज बच्चे काम करते हैं, इस तरह सफाई का काम बांट लिया गया है। इस तरह सारा गाँव साफ करने की तालीम उस गांव को मिल रही है। यह नहीं हो सकता कि आप का गांव साफ करने के लिये शहर से कोई मेहतर आ जाय। आप के घर की स्त्रियां जिस तरह घर का सफाई का काम करती हैं

वैसे सब गांववालों को मिल कर अपने गांव की सफाई करनी चाहिये। जब गांव स्वच्छ होगा तो अपना हृदय भी स्वच्छ होगा। हमें अगर अमंगल जगह में बैठने की आदत पड़ जाय तो हमारा चित्त भी अमंगल बनता है। इसलिये हमारे पूर्वजों ने तालीम दी है कि ध्यान या पूजा करनी है तो पहले जगह साफ कर लो। सफाई के लिये पैसे की भी जरूरत नहीं होती। जरूरत है परिश्रम की। इस तरह आप गाँव के बड़े लोग, स्त्रियां और छोटे बच्चे सफाई के काम में लग जायेंगे तो अपना गाँव वैकुंठ बन जायगा।

गाँव की रक्षा गाँव ही करे

मैंने सुना कि इस गांव में एक साहूकार रहता था। वह डर के मारे गाँव छोड कर दूसरे गाँव में रहने गया है। बड़े दुख की बात है कि किसी को गाँव छोड़ कर जाना पड़े। हमारे गाँव का मनुष्य कैसा भी क्यों न हो अपना मनुष्य है। तो हम सबको उसकी रक्षा करनी चाहिये। अगर हमारा किसी से झगड़ा है तो हम उसके साथ प्रेम से झगड़ेंगे। लेकिन उसकी रक्षा तो गाँव में जरूर होगी। किसी के शरीर को जरा भी तकलीफ नहीं पहुंचने देंगे। इस तरह गाँव की रक्षा की जिम्मेवारी हमारी है। जरा कहीं भय मालूम हुआ तो लोग पुलिस को बुलाते हैं। अब पुलिस गाँव में आकर क्या करेगी? वह भी दूसरों को लूटती है। लूटनेवालों ने गाँव को लूट लिया। उसके बचाव के लिये पुलिस आये तो उन्होंने भी गाँव को लूट लिया। तो आप को पुलिस की आसा नहीं रखनी चाहिये और अपने गाँव की रक्षा खुद करनी चाहिये। गरीब लोगों

से ही सरकार को पैसा मिलता है। वह पैसा अगर पुलिस पर ही खर्च होगा तो आपके हित के लिये सरकार कुछ नहीं कर सकेगी। आपको सरकार से कहना चाहिये कि हमारे गाँव में पुलिस मत भेजो। हमारी रक्षा करने के लिये हम समर्थ हैं। हमने जवान लोगों की सेना बनाई है। गाँव में अगर कोई दुर्जन भी रहा तो उसका भय नहीं मालूम होना चाहिये। दुर्जन को भी हमें प्रेम से जीतना है। हमारे गाँव का भाई हमारे घर का मनुष्य है। अगर लड़का ठीक बर्ताव नहीं करता है तो क्या माता उसको घर से निकाल देती है? वह तो उसको प्रेम से जीतेगी। उसी तरह गाँव के सब लोगों को हमें प्रेम से सीधे रास्ते पर लाना है। लोग कहते हैं कि दुर्जन पर हम प्रेम करते हैं तो वह और भी दुर्जन बनता है। लेकिन यह खयाल गलत है। अगर कहीं अंधकार है और उसमें हम दीपक लाते हैं तो क्या अंधकार ज्यादा हो जाता है? इस बात का बहुत अनुभव आ चुका है कि सज्जनता के सामने दुर्जन की बुद्धि भी शुद्ध होती है।

शिक्षण का जिम्मा गाँववाले उठायें

आप के गाँव में एक बहुत अच्छी बात हमने देखी, जो हमारी तरफ उत्तर हिंदुस्तान में नहीं है। किसी देहात में अगर हम सभा करते हैं तो आप के यहाँ स्त्रियाँ भी बहुत आती हैं। लेकिन वहां तो पुरुष ही पुरुष आते हैं। बहुत सी स्त्रियां तो परदे में रहती हैं तो सूर्य का दर्शन भी बिचारी को नहीं होता। आप के यहां स्त्री, पुरुष दोनों प्रेम से एक जगह आते हैं और ज्ञान सुनते हैं,

यह अच्छा है। गाड़ी में दो पहिये होते हैं, वैसे संसार की गाड़ी के भी स्त्री और पुरुष ये दो पहिये हैं। दोनों को ज्ञान की अत्यंत आवश्यकता है, और समान आवश्यकता है। लेकिन मैंने सुना है कि आप के गाँव में जो स्कूल चलता है उसमें केवल लड़के ही जाते हैं, लड़कियां नहीं जातीं। लेकिन लड़कियों को भी अच्छी तालीम मिलनी चाहिये। मैं जानता हूं कि गरीब लोगों के लड़के और लड़कियां स्कूल में नहीं जा सकतीं, उनको घर में काम रहता है। तो मैं कहता हूं कि गाँव में एक घंटे की स्कूल चलनी चाहिये। वह स्कूल सरकार नहीं बल्कि गाँव का पढ़ा-लिखा आदमी चलायेगा। उसके लिये पैसे भी नहीं लगेंगे। वह आदमी प्रेम से रात को एक घंटा सिखायेगा और दिन में भी एक घंटा सिखायेगा। अभी गोदावरी के तीर पर सोन नाम का गाँव है वहाँ, मैं गया था। वहां के लोगों से मैंने कहा कि प्रेम से एक घंटा सिखाने के लिये तैयार हो जाइये। वहां पर वैसे लोग तैयार हुए और मेरे जाने के बाद एक घंटे की पाठशाला वहां शुरू हो गई है। तो जैसे उस गाँव में हुआ है वैसे आप के गाँव में भी हो सकता है।

सहकारी दूकान गाँव में होनी चाहिये

मैंने पूछा इस गाँव में दूकानें कितनी हैं। तो कहा गया कि तीन-चार हैं। लेकिन ये दूकानें खानगी हैं। मैं चाहता हूं कि आप के गाँव में सब लोगों की एक दूकान होनी चाहिये। चार-चार पांच-पांच रुपयों का शेअर बनाइये। इस तरह सब के पैसे से दूकान करेंगे तो आप को अच्छा माल मिलेगा और कोई

किसी को ठगेगा नहीं। अगर हरेक घर से चार-आठ या दस रुपये मिल जाते हैं तो तीन-चार हजार रुपयों की दूकान हो सकती है। इस तरह की बड़ी दूकान अगर गाँव में चले तो सब को ठीक भाव से माल मिलेगा। एक बच्चा भी उस दूकान पर माल खरीदने जायगा तो उसको ठीक भाव से ही माल मिलेगा। वह दूकान आपके गाँव की होगी। आप सब लोगों का उस पर हक होगा। उसमें अगर कोई लाभ हुआ तो वह भी आप सब लोगों को मिलेगा। मै जानता हूं कि देहात के लोगों के पास धन कम है। लेकिन जो थोड़ा सा है वह इकट्ठा करेंगे तो बड़ा काम हो सकता है। देहात में धन कम है लेकिन शरीर-श्रम करने की शक्ति बहुत है। तो उसका उपयोग करो और सब मिल कर गाँव का काम करो इतना ही मुझे कहना है। मेरा आप लोगों को प्रणाम।

कलवरल, (जि० निजामाबाद)

२८-३-५१

बाईसवाँ दिन—

: २६ :

मूर्ति गुण चिन्तन का साधन

आज पैदल यात्रा में मैं आपके गाँव आ पहुंचा हूं। हम सब जा रहे हैं शिवरामपल्ली में सर्वोदय संमेलन के लिये। यहां आपने मुझ से एक काम लेना चाहा। यहां पर गांधीजी की मूर्ति का उद्घाटन आप मेरे हाथ से करवाना चाहते हैं। तो इस काम को मैं कुछ संकोच के साथ करता हूं।

चित्र से प्रेरणा

यों गांधीजी का दर्शन आप लोगों के नेत्रों को होता रहेगा तो यह खुशी की बात होनी चाहिये। लेकिन संकोच भी मुझे इसमें हो रहा है। कारण उसका यह है कि हम चित्र को खड़ा कर देते हैं लेकिन उस चित्र का जो भी हमारे मन के सामने भाव होना चाहिये वह अति परिचय से मिट जाता है। मैंने बहुत बार यह अनुभव किया है कि लोग अपने घरों में अच्छे अच्छे चित्र तो रख देते हैं लेकिन चित्र का उपयोग मच्छरों को होता है वहां रहने के लिये। इस तरह अगर चित्रों का हमारे जीवन में ठीक उपयोग हम नहीं करते हैं तो उन चित्रों के होने के बजाय न होना बेहतर है। वास्तव में जिस भावना से चित्र खड़ा किया जाता है

वह भावना रोज द्विगुणित होनी चाहिये। आप देखते हैं कि नदी शुरू तो होती है छोटे आकार में लेकिन दिन ब दिन उसका पानी बढ़ता जाता है। इसी तरह हमारी भावना भी बढ़ती रहनी चाहिये ताकि रोज वह बढ़ती जाय। लेकिन शरीर तो जड़ रहता है इसलिये उसको बार बार प्रेरणा देनी पड़ती है। अगर हमने गेंद को एक दफा गति दे दी तो वह कायम नहीं रहती वह कम होती जाती है। इसलिये फुटबॉल खेलने वाले हमेशा उसको गति देते रहते हैं। तो आज यदि हम शुभ भावना के साथ गांधीजी के चित्र का उद्‌घाटन कर देते हैं, तो कल हमें अपनी भावना में और भी वृद्धि करनी चाहिये।

चित्र का उपयोग

वैसे हिंदुस्तान में मूर्तियाँ और देवता कम नहीं हैं। लेकिन उन देवताओं का हमारे जीवन में कोई खास उपयोग नहीं होता। इस तरह सत्पुरुषों की मूर्तियों को बेकार नहीं बनाना चाहिये। अगर हमारे सामने हमने एक मूर्ति रखी है तो उसके गुणों का ध्यान और चिंतन हमें करना चाहिये। और हमें सोचना चाहिये कि वह भी हम जैसा ही एक सामान्य पुरुष था और अपने पराक्रम से महा-पुरुष बना था। अगर अपने मन में हम यह मान लेते हैं कि महापुरुष एक वर्ग के थे और हम दूसरे वर्ग के हैं तो ऐसे चित्रों का हमारे लिये उपयोग नहीं होगा। याने विचार यह होना चाहिये कि हम भी प्रयत्न करेंगे तो उनके गुणों का हमें भी अनुभव आ

सकता है। मैंने एक घर मे गाधीजी का चित्र देखा। उसमें गांधीजी चरखा कात रहे थे। मैंने उस घरवाले भाई से पूछा कि क्या आप के घर में चरखा चलता है ? तो उन्होंने कहा कि नियमित तो नहीं चलता, कभी कभी चलता है। फिर मैंने सोचा कि यह गांधीजी का चरखेवाला चित्र हम अपने घर में रखेगे और चरखा नहीं चलायेंगे तो क्या दशा होगी ? फिर तो ऐसी दशा होगी कि हमारे घर में चित्र तो रहेगा गरुडवाहन वाले विष्णु का, लेकिन हम तो गरुड पर नहीं बैठते है। वैसे अगर सोचेंगे कि गाधीजी के लिये तो चरखा वाहन हो गया लेकिन हमारे लिये वह वाहन नहीं हो सकता। इस तरह सोचेंगे तो उस चित्र से जो लाभ हमें होना चाहिये, वह नहीं होगा।

अहिंसा का विकास

देखिये गाधीजी के प्रयत्नों से और उनके शिक्षण से हमको स्वराज्य तो मिल गया। लेकिन जहां स्वराज्य हाथ में आया वहाँ भगवान ने गांधीजी को हम में से उठा लिया। तो भगवान अब हमारी परीक्षा कर रहा है। वह देखता है कि इन लोगों ने गांधीजी का नाम लिया, उनके पीछे चलने का दावा किया, अब उनके बाद ये क्या करनेवाले हैं ? वह देखता है कि गांधीजी की तालीम अगर ये लोग दर असल समझे हैं तो अब गांधीजी की इनको जरूरत नहीं है। और अगर उनकी तालीम हम लोगों के दिल में नहीं पहुंच चुकी है तो गांधीजी को जिंदा रखने से कोई लाभ नहीं है। मैं

तो परमेश्वर की यह कृपा समझता हूं कि वह मौके पर सत्पुरुषों को भेजता है और मौके पर उनको उठा लेता है। इसमें तो मैं भगवान की दया ही देख रहा हूं। वह गांधीजी की जो तालीम थी उसको हमारे द्वारा प्रचलित करना चाहता है। अहिंसा और सर्व भूतों के लिये प्रेम, यह था गांधीजी का दिया हुआ शिक्षण। अहिंसा का यह सिद्धांत ही ऐसा है कि उसके विकास के लिये पूरी स्वतंत्रता चाहिये। मनुष्य के चित्त पर कोई दबाव नहीं होना चाहिये। अब जब कि गांधीजी को भगवान ले गया तो हम लोगो को पूरी आज़ादी है कि हम अपनी अक्ल से सोचे और अहिंसा का अपने जीवन मे विकास करे। मेरे जैसे लोग जो कि उनके साथ रहे और उनके मार्ग पर चले वे अब क्या करते हैं। यह आप देख रहे हैं। मैं क्या कर रहा हूं इसके आप साक्षी हैं लेकिन जैसे गांधीजी के विचार के मुताबिक मुझे चलना है, वैसे आपको भी चलना है। तो आप मुझे देखिये, मेरे साक्षी बनिये और मैं आपको देखूंगा, मैं आपका साक्षी बनूंगा। इस तरह आप और मै दोनों एक दूसरे के साक्षी बनेगे, एक दूसरे को मदद देंगे तो अहिंसा बढ़ेगी।

प्रजा ही राजा

आप देखते हैं कि प्रजा हमेशा सरकार की तरफ ताकती रहती है। पहले की सत्ता जुल्मी थी और आज की सत्ता अच्छी है, तो सत्ता का फरक हुआ। उसमें प्रजा के गुण में कोई फरक नहीं।

हुआ ? अगर राजा अच्छा रहा तो वह प्रजा को सुख देता है और राजा बुरा रहा तो प्रजा को दुःख रहता है। सुख और दुःख का फरक वह करता है। लेकिन राजा पर ही जहां प्रजा का आधार है वहां प्रजा में स्वराज्य तो तब होगा जब हम में से हरेक यह महसूस करेगा कि मै ही अपना राजा हू और मैं ही अपनी प्रजा हूं। छः सौ साल हुए हैद्राबाद में प्रजा के हाथ में सत्ता नहीं रही। तो उसका कारण क्या था ? कारण यही समझना चाहिये कि हम लोगों में कोई ऐसे दोष है जिनके कारण हम स्वतंत्र नहीं बन सके हैं।

स्वराज्य का अनुभव

देखिये जो डर जनता मे पहले था वह आज भी मौजूद है और जनता निर्भय नहीं है। तो स्वराज्य क्या मिला? जो व्यसन और आलस पहले था वही अगर आज भी रहा तो स्वराज्य कहां आया ? तो भावार्थ उसका यह हुआ कि हमारे हृदय में बल आना चाहिये और हमें स्वराज्य का अनुभव होना चाहिये। जिसने भोजन किया उसको तृप्ति का अनुभव आता है। वैसे अगर हमें स्वराज्य मिला है तो उसका अनुभव बच्चे बच्चे को होना चाहिये। हां, एक फरक जरूर हुआ है। यह गांधीजी का चित्र आपने आज खड़ा किया वैसा पुराने जमाने में खड़ा नहीं कर सकते थे। आपको लगता था कि अगर गांधी टोपी से या गांधीजी के नाम से संबंध रखेंगे तो रजाकार हमको पीटेंगे। लेकिन अब शायद यह लगेगा कि

गांधीजी का नाम लेते रहेंगे, उनके चित्र का उद्घाटन करेंगे तो हम पर बड़े लोगों की मेहरबानी होगी। इन दिनों हम देखते हैं न कि हमारे स्वागत के लिये बड़े अधिकारी आते हैं। पहले जब बड़े अधिकारी आते थे तो हम समझ लेते थे कि हमारी गिरफ्तारी का संबंध है। पर इस समय गांधीजी का चित्र घर में रखने में किसी को कोई तकलीफ होनेवाली नहीं हैं।

गांधीजी के काम से निर्भयता

तो, इस अवस्था में हमें यह करना चाहिये कि हम गांधीजी का काम करें। उनके चित्र से कोई निर्भयता हम में आती है ऐसी बात नहीं है। उनके काम से ही हममें निर्भयता आयेगी। पहले के जमाने में अकबर आदि बादशाहों के चित्र घरों में रहते थे और स्कूलों में रहते थे। अगर उनकी जगह हम गांधीजी को देंगे और उनके चित्र घर में, शालाओं में, और होटलों में रखेंगे तो वे क्या काम के होंगे? मेरे कहने का मतलब यह है कि गांधीजीने हमारे लिये कुछ काम दिया है। वह काम हमको करना चाहिये। हम अगर माता का नाम लेते हैं तो वह यही कहेगी कि अगर तुम मेरा नाम लेते हो तो परस्पर में प्रेम क्यों नहीं करते हो? तो गांधीजी के लिये हमें आदर है या नहीं इसकी परीक्षा इसी पर से होनेवाली है कि हम आपस में कितना प्रेमभाव रखते हैं। क्या अभी भी हम हरिजनों को अपने से नीचा समझते हैं? क्या अभी भी हिंदू और मुसलमानों के दिलों में भेद

मौजूद है ? क्या अभी भी पुलिस का डर जैसे पहले था वैसा ही मौजूद है ? अगर यह सब है तो समझ लेना चाहिये कि गांधीजी के लिये वास्तव में हमें आदर नहीं है ।

स्थितप्रज्ञके लक्षण

मेरे भाइयो, मैं जानता हूं कि मेरे व्याख्यान का कुछ हिस्सा आपके पास पहुंचता है और कुछ हिस्सा बाहर रहता है । इस हालत में मैं आपको अपेक्षा कृत ज्यादा देर रखना नहीं चाहूंगा । मुझे इस बात की खुशी है कि आप लोगों ने यहां काफी शांति रखी । आज प्रार्थना में मैं जो बोला वह भगवद्गीता का एक भाग है । उसका मैंने तेलगु में तर्जुमा भी पढ़ लिया । उसमें स्थितप्रज्ञ पुरुष के लक्षण बताये हैं । जैसे गांधीजी का यह चित्र आपके सामने है वैसे स्थितप्रज्ञ का शब्दों में लक्षण गीता से मिलता है । महात्मा गांधीजी प्रार्थना में हमेशा ये लक्षण बोलते थे और उनका सारा जीवन उन लक्षणों का अनुशीलन करने के कारण हुआ है । तो ये स्थितप्रज्ञ के लक्षण हम अपने सामने रखें । हम रोज ऐसे पुरुष का चिंतन करें यह मैं आप लोगों से प्रार्थना करता हूं । कुटुंबवाले अड़ोसी-पड़ोसी और मित्र दिन में शाम को एक दफा एकत्र हो जायं और स्थितप्रज्ञ के लक्षण बोलें, उस पर चिंतन करें तो बहुत अच्छा होगा । उनमें जो गुण बताये हैं वे हिंदुओं के लिये अच्छे हैं, मुसलमानों के लिये अच्छे हैं, क्रिस्तियों के लिये अच्छे हैं और सारे मनुष्यों के लिये अच्छे हैं । तो मैं चाहता हूं कि ये लक्षण आप

हमेशा बोलते रहें, पढ़ते रहें, गाते रहें। मैं आज आप के गांव में आया। कल यहां से जाऊंगा। और परसों शायद इस दुनिया से भी चला जाऊंगा। लेकिन ये जो स्थितप्रज्ञ के लक्षण हैं वे हमारी आंख के सामने कायम रहने वाले हैं, सदा टिकनेवाले हैं। मेरे जैसे लोग तो आयेंगे और जायेंगे। उनका इतना उपयोग नहीं है जितना इन लक्षणों का है। इसलिये हम इन लक्षणों का ही चिंतन करें और मनुष्यों को भूल जायं। आखिर में आप सबको मेरा प्रणाम।

कामारेड्डी
२९-३-५१

तेईसवाँ दिन—

: २७ :

परमेश्वर की देनें

हम लोग वर्धा से हैद्राबाद पैदलयात्रा करते जा रहे हैं। हैद्राबाद से पांच मील पर शिवरामपल्ली है। वहां सर्वोदय संमेलन होने जा रहा है। महात्मा गांधीजी के भक्तजन वहां इकट्ठे होनेवाले हैं। उनकी संगति का लाभ लेने के लिये हम लोग भी जा रहे है। रोज हम अक्सर दस बारह मील चलते है। लेकिन आज हम को कामारेड्डी से यहां पहुंचने के लिये सत्रह मील चलना पड़ा। आज एक बात और हुई। बात यह थी कि बीच में एक रोज बारिश आदि होने के कारण आज मुझे थोड़ा बुखार था। और सुबह मेरे मन में शंका थी कि सत्रह मील की मंजिल आज कैसे तय होगी। लेकिन भगवान का नाम लिया, चलना आरंभ किया और उसकी कृपा से आज हम यहां पहुंच गये। और मैं आप से कहना चाहता हूं कि मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई।

मानव-देह का प्रयोजन

परमेश्वर का नाम ले कर जो काम किया जाता है उस में जरा भी तकलीफ नहीं होती यह अनुभव मैंने कई बार किया। भगवान के स्मरण से शरीर की थकान दूर हो जाती है और मन की भी थकान दूर हो जाती है। मनुष्य ताजा बन जाता है। यह

एक ऐसी अपार शक्ति है कि जिस में से हम चाहे जितना ले सकते हैं। हम मांगें और वहां से न मिले यह बात आज तक हुई नहीं। लेकिन भगवान से कैसे मांगना, भगवान के साथ कैसे संबंध जोड़ना यह समझने की बात है। मानव-देह हमें इसीलिये मिला है कि इसके जरिए हम भगवान से संबंध जोड़ें। और खास कर किसानों के जीवन में तो भगवान से निरंतर संबंध आता है। कभी वर्षा नहीं पड़ती है तो किसान का चित्त जमीन से उठ कर आसमान की तरफ दौड़ता है। वह परमेश्वर की प्रार्थना करने लगता है। अगर वर्षा अच्छी हुई तो उसकी बुद्धि कृतज्ञता से भर जाती है और वह परमेश्वर का स्मरण करता है। इसलिये किसान का जीवन मैं अत्यंत पवित्र समझता हूं। किसान कितना भी कष्ट कर के यह नहीं समझता कि जो फसल होती है वह उसके खुद के कष्ट से होती है। वह तो यही समझता है कि कदम कदम पर भगवान की कृपा होती है तभी फसल आती है।

परमेश्वर की देनें

सब लोगों का यही हाल है। मनुष्य की एक सांस भी परमेश्वर की इच्छा के बगैर नहीं होती है। लेकिन कुछ लोग अपना संबंध परमेश्वर के साथ सीधा है यह कम महसूस करते हैं, किसान ज्यादा महसूस करता है। अब देखिये आप के इर्दगिर्द के गावों में ओले गिरे और फसलें काफी बरबाद हुईं। अब किसान क्या करता है? वह परमेश्वर का स्मरण करता है। इस तरह अपने जीवन में

हरेक काम का परमेश्वर के साथ संबंध जोड़ना हमें सीखना चाहिये। अगर इस तरह हम भगवान से संबंध जोड़ सकें तो हमें पता चलेगा कि उसने हमें कितनी देनें दी हैं, कितनी नियामतें बख्शी है। उसने हमें जो नियामतें दी हैं वे बेहिसाब हैं, उसकी कोई गिनती नहीं है। उसने हम पर क्या उपकार नहीं किया है? लेकिन उसके उपकार का ठीक उपयोग करने का भी हमें ज्ञान नहीं है।

परमेश्वर की देनों का दुरुपयोग

मैं इधर घूम रहा हूं और चारों तरफ सिंदी के पेड़ देखता हूं। यह परमेश्वर की हमारे लिये देन है। लेकिन हम उसका दुरुपयोग करते है। उस में से शराब बनाते हैं और अपनी जिंदगी को खराब करते है। लेकिन हम अगर उसका ठीक उपयोग करें तो हमारे लिये वह अमृत का वृक्ष बन जायगा। उसमें से उत्तम गुड़ बनेगा और हरेक गांव गुड़ के विषय में स्वावलंबी बन जायगा। आज जो आप की जमीन का बहुतसा हिस्सा गन्ने में जाता है वह बच जायगा अगर सिंदी का गुड़ हम बनायेंगे। आज हमारे देश में अनाज की कमी है; ऐसी हालत में जितनी जमीन बच जाय उतना अच्छा है। इससे आप की दो बातें बनती थी। सिंदी के पेड़ से गुड़ बनता और जमीन में अनाज ज्यादा पैदा होता। लेकिन परमेश्वर की इस देन का उपयोग करना हम नहीं जानते और सिंदी से शराब बना कर अपनी आत्मा और शरीर को हम बिगाड़ते हैं और जमीन गन्ने में खर्च होती है। इसमें परमेश्वर का क्या

दोष है ? उसने तो हमको एक भारी चीज दी थी, लेकिन उसका उपयोग हमने नहीं किया।

हमारे पास जमीन पड़ी है। उसमें से हर चीज हमको मिलती है। लेकिन उसका उपयोग हम सिर्फ पैसे के लिये करते हैं। पैसे के लोभ से ही जमीन का उपयोग करने की दृष्टि रही तो जमीन में से तंबाकू बनती है। परमेश्वर ने हमें क्या क्या दिया और हम ने उसकी देनों को कैसे बरबाद किया इसका मैं कहां तक वर्णन करूं ?

कपास के लिये जमीन रखो

मैं सुनता हूं कि यहां पहले लोग थोड़ा कपास भी अपने उपयोग के लिये बोते थे। लेकिन आज लोगों ने वह छोड़ दिया, पैसे के लोभ में पड़े और सारा कपड़ा बाहर से खरीदते हैं। नतीजा उसका यह हुआ कि आप परावलंबी बन गये और अपना भार आप ने व्यापारियों पर डाल दिया। मैं यह नहीं कहता कि इस जमीन में अगर गन्ना अच्छा होता है तो गन्ना मत बोओ। लेकिन मैं कहता हूं कि कुछ तो जमीन अपने कपास के लिये रखो। इस तरह अगर देखते हैं तो कई चीजों का अच्छा उपयोग हमको सूझेगा।

गोबर और मैले का ठीक उपयोग करो

देखिये हम लोगों की गायें और भैंसें हमको गोबर देती हैं। हम उस गोबर को जलाते हैं तो हमारा सारा खाद खतम होता है। इसी तरह मनुष्य का भी मैल और मूत्र इधर उधर गिरता है और हम अपनी सारी दुनिया अमंगल बनाते हैं। उस से हमारी सेहत

बिगडती है, हमारी सभ्यता बिगड़ती है। अगर इस मलमूत्र को जमीन के अंदर रखते हैं और उस पर मिट्टी डालते हैं तो परमेश्वर की कितनी अपार कृपा है उसका अनुभव आयेगा। भगवान ने हमें गाय बैल दे दिये। अगर हम उनका दूध बढ़ाते हैं और बैलों को मजबूत बनाते हैं, उनको पूरा खिलाते हैं तो उनसे बहुत सेवा होती है। यह तो परमेश्वर की देन का अच्छा उपयोग होगा। लेकिन अगर हम गायों को ठीक खिलाते नहीं और उनको कम दाम मे बेच डालते है तो गायों की कतल होती है। इसका मतलब यह हुआ कि भगवान की देनों का हमने दुरुपयोग किया। परमेश्वर की देनो का हम ठीक उपयोग करे और उसका हम स्मरण करें तो इस दुनिया मे कोई मनुष्य दुःखी नहीं रह सकता।

हम सर्वोदय सर्वोदय चिल्लाते हैं। कहते हैं कि सब का भला होना चाहिये। लेकिन परमेश्वर अपने मन में हंसता होगा और कहता होगा कि भाई यह काम इतना मुश्किल क्यों लगता है ? कोई बाप अपनी संतान के लिये जीवन मुश्किल हो ऐसा नहीं चाहता। तो वह परम पिता, जिसने हमें निर्माण किया और हमारे लिये ये सारे उपकार पैदा किये, हम उनका उपयोग अच्छा नहीं करते। आपस में झगड़ते हैं और कहते हैं कि सर्वोदय कब होगा।

ईश्वर अल्ला एक ही नाम

गांधीजी अपनी प्रार्थना में ईश्वर का नाम लेते थे और उस के साथ अल्ला का नाम भी लेते थे। अब ईश्वर और अल्ला में कोई

भेद नहीं है । लेकिन कुछ पागल हिंदुओंने कहा कि हम अल्ला का नाम नहीं सहन करते । वैसे ही रघुपति राघव राजाराम कहते हैं तो कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह राम काफिरों का शब्द है हम उसकी प्रार्थना में नहीं जायेंगे । इस तरह भगवान के नाम में भी हमने भेद निर्माण किये । यहां तक हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई तो हम सुखी कैसे बन सकते हैं ? फिर तो आपस में लड़ना झगड़ना ही है । इस तरह सारे झगड़े अपने देश में पड़े हैं और बाहर के देशों में भी झगड़े ही झगड़े चल रहे हैं । आप कोई अखबार देखिये तो सौ में से नब्बे खबरें यही पायेंगे कि किसी का खून किया, कहीं लूटा, कहीं लड़ाई हुई । उधर कोरिया की लड़ाई चलती है, इधर कश्मीर का मामला चल रहा है। बोल रहे हैं कि तीसरी लड़ाई— तीसरा महायुद्ध कब होगा! कब होगा यूं कहते जायेंगे और उसी का ध्यान करेंगे तो वह जरूर होगा। क्योंकि जिस चीज का हम ध्यान करते है वह चीज हमारे सामने खड़ी होनी ही चाहिये ऐसा ध्यान करो कि हम सब परमेश्वर के पुत्र हैं। और अगर हम सब एक कुटुंब के हैं, तो हम में कोई झगड़ा होगा ही नहीं ।

पृथ्वीपर संख्या का नहीं, दुर्गुणों का भार होता है

लोग कहते हैं कि हिंदुस्तान में जनसंख्या बढ़ गई । मैं कहता हूं कि आज भी हिंदुस्तान में इतनी शक्ति है कि हम अगर परमेश्वर की देनों का उपयोग करें तो हिंदुस्तान में प्रेम के साथ रह सकते हैं । यह भी बात सही है कि मनुष्य को विषयवासना रोकनी चाहिये । लोग संतान कम ज्यादा गिनते हैं । मैं कहता हूं

कि विषयवासना कम करो। अगर हम विषयवासना को नहीं जीत सकते हैं तो हम एक दूसरे पर प्रेम नहीं कर सकते। अगर हम विषयवासना को जीतते हैं तो जो भी प्रजा होगी वह परमेश्वर की भक्त होगी, और उसका दुनिया पर भार नहीं होगा। इस दुनिया में मनुष्य ज्यादा है या कम हैं इसका पृथ्वी कोई भार महसूस नहीं करती है। लेकिन मनुष्य सज्जन हैं या दुर्जन है इसका भार अवश्य महसूस करती है। पृथ्वी को मनुष्य की संख्या का भार नहीं है, मनुष्य के दुर्गुणों का भार है। हम काम क्रोधादि को जीतें, एक दूसरे पर प्यार करें, परमेश्वर की देनों का सदुपयोग करना सीखें, अपनी हरेक कृति का संबंध परमेश्वर से जोड़ें, सुख और दुःख में उसका स्मरण करें, तो सर्वोदय ही होगा, और कुछ नहीं हो सकता।

रामायण पेठ
३०-३-५१

चौबीसवाँ दिन —

: २८ :
सत्पुरुष और धर्म

आज मै इस गांव में आया तो ठहरने के लिये यह जगह मिली है। मुझे इस बात की खुशी है कि ठहरने के लिये मुझे क्रिस्तियों का स्थान मिला।

सारे सत्पुरुषों की जाति एक

अपने इस बड़े देश में बहुत प्राचीन काल से अनेक सत्पुरुष पैदा हुए। क्रिस्ती लोगों के गुरु ईशु क्राइस्ट नाम के थे, और वे बड़े सत्पुरुष थे। वैसे ही मुसलमान धर्म के बड़े संस्थापक हो गये मुहंमद पैगंबर, वे भी एक बड़े सत्पुरुष थे। इस तरह के सत्पुरुष हर जाति में, हर कौम में और हर भाषा में पैदा हुए। परमेश्वर की मानवों पर यह कृपा है कि मानवों को बीच बीच में राह बताने के लिये अच्छे मनुष्यों को वह भेजता है। इन दिनों हमारे देश में महात्मा गांधी इस तरह के सत्पुरुष हो गये। ये सारे जो सत्पुरुष हुए उनमें कोई फरक नहीं था। सब के दिल एक थे। उन सब की एक ही जाति थी, उन सब का एक ही धर्म था। परमेश्वर की भक्ति करना, मानवों पर प्रेम करना यही उनका धर्म था।

गुरु का नाम लेते हैं, काम नहीं करते

अभी आप लोगों ने क्रिस्ती प्रार्थना सुनी। उसमें यही कहा गया था कि परमेश्वर प्रेममय है और उसकी भक्ति से हमारे हृदय प्रेममय

और पवित्र हो जाँय। लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि महंमद के अनुयायी, किस्त के अनुयायी और हिंदू धर्म के अनुयायी आपस में प्रेम से नहीं रहते। यह बड़े आश्चर्य की बात है, इसमें कोई शक नहीं। अपने अपने गुरु का नाम लेना यह अच्छी बात है। लेकिन उस गुरु के नाम का भी एक अभिमान बना करके दूसरों में और हममें फरक पैदा करना यह बुरी बात है। गुरु ने जो शिक्षण दिया उसका पालन तो हमने किया नहीं, लेकिन अभिमान रखते है और दूसरों का द्वेष करते हैं। हम जानते हैं कि हिंदूधर्म ने यह शिक्षण दिया कि हरेक जीव में आत्मा मौजूद है, लेकिन उपर हजारों जातियां बना करके हम लोगों ने द्वेष बढा दिया। क्रिस्त ने तो हमेशा प्रेम का संदेश दिया। लेकिन क्रिस्त के नाम का अभिमान रखनेवाले दुनिया भर में जहां देखो वहा लडाइया करते रहे। पिछले चालीस साल में दो महायुद्ध हुए। दोनों क्रिस्तियों के आपस में हुए। क्रिस्त गुरु ने तो यह कहा था कि हमको अहिंसा रखनी चाहिये। किसी की हिंसा नहीं करनी चाहिये। याने जो गांधीजी की शिक्षा थी वही क्रिस्त की थी। लेकिन क्रिस्ती लोगों ने जितने शस्त्रास्त्र बढ़ाये उतने सारी दुनिया में किसी ने नहीं बढाये। मुसलमान लोग अपने धर्म को इस्लाम कहते हैं। इस्लाम का अर्थ है शांति। अगर किसी को वे नमस्कार करते है तो कहते हैं "सलाम अलयकुम" याने आपको शांति रहे। लेकिन उन लोगो का जो भी बर्ताव रही उसे देखते हुए लोगों को शंका होती है कि क्या इस्लाम में

भी शांति की शिक्षा हो सकती है। इस तरह उन उन गुरुओं का हमने अभिमान रखा, आचरण कुछ नहीं किया, और अपना जीवन पहले जैसा बिगड़ा हुआ था, वैसा ही आज भी है।

हम लोग बिगड़े हुए थे तो हमको सुधारने के लिये ये गुरु हमारे पास आये। लेकिन हम क्या करते हैं? अपना जीवन तो हम सुधारते नहीं और कहते हैं कि दूसरे हमारे धर्म में आ जाँय। जो उठा वह यही चाहता है कि मेरे धर्मवालों की संख्या बढ़े। कोई यह नहीं देखता कि धर्म तो एक आचरण की चीज होती है, संख्या से उसका क्या मतलब है। मैंने सुना कि यहां के इर्द-गिर्द के देहातों में तीन हजार क्रिस्ती बन गये। अगर उनका जीवन सुधर गया है तो मैं कहूंगा कि अच्छी बात है। लेकिन अगर नहीं सुधरा है तो हिंदू नाम के बदले क्रिस्ती नाम हो जाने से क्या फरक हुआ? जैसे पहले शराब-सिंदी पीते थे वैसे ही अगर अब भी शराब-सिंदी पीते रहे, जैसे पहले झूठ बोलते थे वैसे अब भी बोलते हैं तो सिर्फ धर्म का नाम बदलने से क्या हुआ? समझना चाहिये कि जो मनुष्य झूठ बोलनेवाला है, दूसरे से द्वेष करनेवाला है, वह न हिंदू है, न मुसलमान है, न क्रिस्ती है। वह तो धर्महीन मनुष्य है। लेकिन हमारी दशा अब यह है कि हिंदुओं में से अगर कोई बदमाशी करता है, गुंडा है, तो उस गुंडे का अभिमान हिंदू लोग रखते हैं। कोई अगर मुसल्मान गुंडापन करता है तो मुसल्मान उस गुंडे का अभिमान रखते हैं। ऐसे ही कोई क्रिस्ती अगर दुर्जनता करता है तो क्रिस्ती लोग उसको

झांकते हैं। यह बुरी दशा देख कर अब जवान लोग यह कहने लगे हैं कि हमें यह धर्म चाहिये ही नहीं। लेकिन वह भी उन लोगों की गलती है। धर्मवाले लोग धर्म पर चलते नहीं हैं। यह उस धर्म का दोष नहीं है। यह तो हम लोगों का दोष है कि हम धर्म की दीक्षा तो लेते हैं लेकिन आचरण करते नहीं।

हरेक जाति में सत्पुरुष हुए हैं

मै तो यही कहूंगा कि हमारे हिंदुस्तान मे ऐसी कोई जाति नहीं है जिसमें अच्छे गुरू पैदा नहीं हुए, और जिनको शिक्षण देने के लिये दूसरे किसी गुरू की जरूरत है। यह कोई जरूरी नहीं है कि तेलगु लोगों को ज्ञान देने के लिये मलबार के कोई सज्जन आ जायँ, या महाराष्ट्र के लोगों को ज्ञान सिखाने के लिये कोई पंजाबी गुरू आ जाय। हरेक जमात में सत्पुरुष हुए हैं। मैं तो इतना ही कहूगा कि अपने अपने पड़ोस में जो सत्पुरुष हुए उनके कहने के मुताबिक चलो। और हरेक धर्मवाले और हरेक गुरू के शिष्य अगर अपना जीवन सुधारेंगे तो उनके जीवन को देख करके सब लोगों के दिल खुश हो जायेंगे।

धर्म से ज्यादा सज्जनता की फिकर रखो

इस तरह उस उस धर्मवाले अपने अपने धर्म के शिक्षण का आचरण करके एक दूसरे को मदद दे सकते हैं और सब मिल करके दुनिया का आनंद बढ़ा सकते हैं। हम लोगों को ऐसा भेदभाव नहीं रखना चाहिये कि फलाना क्रिस्ती है या फलाना मुस्लिम है या फलाना हिंदू है। परमेश्वर के सामने हम खड़े होंगे तो वह हम

से यह नहीं पूछेगा कि तुम क्रिस्ती थे या हिंदू थे या मुसलमान थे, बल्कि यह पूछेगा कि क्या तुम सदाचार करने वाले थे या दुराचार करनेवाले थे। कोई ब्राह्मण भी अगर दुराचार करता है तो परमेश्वर को उसकी कोई कीमत नहीं है। और कोई चाटाल भी अगर भक्ति करता है तो परमेश्वर को वह मान्य है।

सब धर्मों का रहस्य

तो इस तरह एक दूसरों पर प्यार करो, सच्ची राह पर चलो यही कहने के लिये सब गुरू आये और यही शिक्षण हमको उनसे लेना है। आज आप लोगों के सामने यही बात मै कहूगा और यह आशा करूगा कि यहां पर मैं आया तो इतना भी लाभ आप उठा लें। मै क्रिस्ती धर्म के रहस्य को अत्यत प्रेम के साथ स्वीकार करता हू। सब धर्मों मे जो अच्छी बात है उसको मैं कबूल करता हू। हिंदुओ मे मैं अपने को हिंदू मानता हू। क्रिस्तियों में मै अपने को क्रिस्ती मानूगा, और मुसलमानों में मै अपने को मुसलमान मानूगा। यही मानो कि पाषाण और पत्थर में जैसे कोई फरक नहीं है, पाषाण याने पत्थर और पत्थर याने पाषाण। वैसे ही हिंदू और मुसलमान और क्रिस्ती याने सज्जन सत्पुरुष इतना ही अर्थ है। तो यह सब धर्मों का रहस्य आप अपने दिल में रखिये और अपने जीवन को उन्नत बनाने की कोशिश कीजिये। आखिर में आप लोगों को मै प्रणाम करता हू।

वडियारम (जि० मेदक)
ता० ११-३-५१

'पच्चीसवा दिन—

: १९ :

गांव कुटुम्ब की तरह रहे

गाव और शहर की खूबियों का समन्वय हो

आप का गाव कुछ बडा है। छोटे गाव मे कुछ खूबियां होती है तो बडे गाव मे भी कुछ खूबियां होती है। इन दोनों खूबियों का अगर गाव मे समन्वय हुआ तो गांव को बहुत लाभ हो सकता है। लेकिन जैसे छोटे गाव में कुछ बुराइया होती है वैसे बडे गांव में भी होती है। दोनो बुराइयो को अगर गाव में इकट्ठा करेंगे तो गाव खतम हो जायगा। और अकसर मैंने देखा है कि जो गांव आप के जैसे बीचवाले होते हैं वहा छोटे और बडे गावो की बुराइया इकट्ठी होती है। इस तरह अगर हुआ तो वह गाव अधिक से अधिक दुखी होगा।

गाव की समिति होनी चाहिये

आज प्रार्थना के पहले आप के गाव के लोगो के साथ चर्चा चल रही थी। मैंने पूछा कि भाई इस गाव मे क्या हो रहा है? उसमे क्या सुधार कर सकते हैं? यह सब सोचने के लिये गांव में कोई समिति या मडली है पूछने पर तो कहा गया।कि ऐसी कोई मडली नहीं है। फिर मैं सोचने लगा कि हर कुटुब में कुटुब के भले के लिये कुछ न कुछ विचार होता है वैसे गाव के भले के लिये विचार

करनेवाला समाज अगर गाव मे न होगा तो गाव कैसे आगे बढ़ेगा ?
हमारे लोगों में घर से बाहर की सोचने की आदत ही नहीं है ।
लेकिन गांव में जो होता है उसका परिणाम घर पर होता है, और
घर में जो कुछ होता है उसका परिणाम गांव पर होता है । इस
तरह गांव और घर अलग नहीं हैं यह ध्यान में आयेगा । इसलिये
हरेक गाव में गांव के बारे में सोचने की आदत होनी चाहिये ।
अगर ऐसा कोई समाज, जिसे मैं 'सर्वोदय समाज' कहता हू, आप
के गांव मे बन जाय तो गांव की सेवा का आरंभ होगा । तब तक
गाव में सेवा का आरम ही नहीं होता ।

गांव में दूसरे धंधे नहीं हैं

आप के गाव में कोई चार हजार जनसख्या है । तीन हजार एकड जमीन है । याने हर मनुष्य के पीछे पौन एकड जमीन हुई । इस गांव मे पानी की कुछ सहूलियत जरूर है । लेकिन इतनी कम जमीन जहां है वहां लोगों को पूरा काम नहीं है यह बात जाहिर है । और अगर गाव को पूरा काम नहीं मिलता है तो फिर गाव को पूरा खाने को भी कैसे मिल सकता है ? मैंने देखा कि यहा के नजदीक के कुछ गांवों मे कहीं रेशम का काम चलता है । तो वैसा कोई काम यहां चलता है क्या ? ऐसा मैंने पूछा तो जवाब मिला कि ऐसा कोई काम नहीं है । मैंने यह भी पूछा कि गाव में जो मुसलमान लोगों के घर हैं उनके घर वाले क्या काम करते हैं । क्योंकि मैं जानता हू कि मुसलमानों के यहां गोशा होता है और उनके घर की स्त्रियां बाहर कोई खास काम नहीं कर सकतीं ?

लेकिन घर में उनको कोई काम नहीं है ऐसा मुझे कहा गया। इस तरह जहां गांव मे पूरा काम-धाम नहीं है वहां लोगों में अगर आपस में झगड़े न हुये तो उसे परमेश्वर की कृपा ही समझनी चाहिये।

सिंदी के बदले नीरा या गुड़ बनाओ

मैं इस तरफ सिंदी के कई पेड़ देखता हूं। उनमे से जो सिंदी निकलती है वह पी पी कर लोग अपनी जिंदगी को बरबाद करते हैं। मैं तो यहां तक सुनता हूं कि इस गांव की चार हजार की जन संख्या में से करीब तीन हजार लोग सिंदी पीते होंगे। अगर इतनी बड़ी संख्या रोज सिंदी पी कर अपनी जिंदगी बरबाद करती है तो गांव के लिये यह बहुत खतरनाक बात है। गांव के लोगों का यह बड़ा भारी काम है कि लोगों को समझायें और सिंदी पीने से उनको मुक्त करें। ये जो सारे सिंदी के पेड़ हैं उनके रस का अच्छा गुड़ बन सकता है। और उसका ताजा रस अगर लोगों को पिलाने की व्यवस्था की जाय तो सिंदी के बदले अच्छी नीरा लोगों को मिल सकती है। लेकिन यह सब तब बनेगा जब गांव में गांव के बारे में सोचनेवाली मंडली होगी।

गांव की पंचायत कैसी हो

यह मंडली हर हफ्ता इकट्ठा होगी और गांव के हरेक काम के बारे में सोचेगी। ये लोग केवल सेवा के लिये इकट्ठे होंगे। किसी पार्टी के वे नहीं होंगे या किसी राजकीय पक्ष से उनका

संबंध नहीं रहेगा। मैंने पूछा—गांव में कोई भजन मंडली भी है ? तो लोगों ने कहा कि भजन मंडली है और हर शुक्रवार को भजन करते हैं। मैंने कहा यह अच्छा है। गांव के दूसरे लोग भी इस भजन मंडली के साथ इकट्ठा हो जायँ। आधा घंटा सब मिलकर भगवान का भजन करें और बाकी के समय में गांव के बारे में सोचें। परमेश्वर के भजन के साथ गांव की सेवा का अगर कुछ आयोजन करते हैं तो वह परमेश्वर का सच्चा भजन होगा। परमेश्वर हरेक के हृदय में मौजूद है। तो अगर हम अपने बंधुओं की सेवा नहीं करते हैं और परमेश्वर का नाम लेने का दावा करते हैं तो वह नाम लेना सच्चे अर्थ में भजन नहीं है। आप के यहां भजन चलता है यह भी मेहरबानी है। क्योंकि उसके निमित्त से गाँव के लोग इकट्ठा होते हैं। तो जहां भजन होता है वहां सेवा का भी आयोजन हो सकता है। मैंने कभी यह भी देखा है कि जहां ग्राम पंचायत होती है वहां गाँव के काम की चर्चा तो करते है लेकिन साथ साथ झगडे भी चलते हैं। लेकिन परमेश्वर के भजन के साथ अगर गाँव की सेवा की चर्चा करेंगे तो वहां किसी तरह के झगड़े नहीं होंगे और परमेश्वर की दी हुई सद्बुद्धि से हमारा काम भी अच्छा चलेगा।

गाँव एक कुटुंब बने

गाँव में कितनी तरह की सेवा हो सकती है उसका वर्णन तो मैं यहां नहीं करूंगा। जो लोग मेरे साथ चर्चा करने के लिये इकट्ठा हुए थे उनके सामने कुछ बातें मैंने बता दी हैं। आप लोगों से मैं इतना ही कहूंगा कि आप के गाँव के बारे में अगर आप

नहीं सोचेंगे तो बाहर का दूसरा कोई सोच कर आप का भला करेगा यह आशा करना बेकार है। तो आप को अपने कुटुंब के बाहर दृष्टि फैला कर गाँव के बारे मे सोचने का अभ्यास करना चाहिये। गाँव की खूबी ही समझनी चाहिये कि गाँव के लोग एक दूसरे को पहचानते है और कुछ प्रेम कर सकते है। अगर कुटुब के बाहर जाकर सेवा करने का अभ्यास हुआ तो सारा गांव मिलकर एक कुटुम्ब ही बन जायगा। फिर जैसे घर की मा पूछती है कि घर के सब लोगों का खाना मिला है या नहीं, और जब उसे यकीन हो जाता है कि कोई भूखा नहीं है तभी वह खाती है। वैसे गाँव में किसी का भूखा तो नहीं रहना पड़ा है यह गाँव की पचायत देखेगी और सब को खाना मिला है यह देख कर ही खुद खायेगी। इस तरह गाँव की जिम्मेवारी उठानेवाली मडली गाँव में बन सकती है और अगर वैसी बनी तो गाँव में गाँव का राज्य बन जायगा।

मेरा स्वराज्य मुझे ही हासिल करना होगा

स्वराज्य का सच्चा अर्थ यही है कि हरेक गाँव अपने अपने पांवो पर खडा हो जाय और बलवान बन जाय। जिस राज्य में और देश में बलवान् ग्राम होंगे वह राज्य और वह देश बलवान होगा। लेकिन जहा के गाँव कमजोर होंगे वह राष्ट्र और राज्य भी कमजोर होगा। हम लोगो के हाथ में स्वराज्य आया इसका मतलब यही समझो कि हरेक गाँव का फिर से सघटन करने का मौका हमें मिला है। अभी तो इतना ही समझो कि सारे देश को स्वराज्य मिल गया, है लेकिन उसके अन्दर के ग्रामों को अभी स्वराज्य हासिल करना बाकी है।

स्वराज्य भी एक ऐसी अजीब चीज है कि मेरा स्वराज्य आप नहीं दे सकते। मेरा स्वराज्य मुझे ही हासिल करना होता है। मौके पर यह बन सकता है कि दूसरा मनुष्य मेरे लिये खाना लाकर मुझे खिलादे। लेकिन यह कभी नहीं हो सकता कि दूसरा मनुष्य मुझे स्वराज्य दे। जैसे हरेक मनुष्य स्वर्ग और नरक अपने ही पुण्य और पाप से पाता है, वैसे ही गाँव का पुण्य और गाँव का पाप गाँव को खुद को भुगतना होगा और उसी मे गाँव की उन्नति या अवनति होगी।

गांव की ही वनस्पतियों से गाव की बीमारी का इलाज

आज चर्चा हो रही थी तब लोग सारे जिले की बात करने लगे। मैंने कहा जिले की बात मत करो इस गांव की बात करो। वे लोग कहते थे कि इस जिले मे एक दवाखाना खोलने का विचार हो रहा है और उसके लिये पैसा भी इकट्ठा किया जा रहा है। मैंने कहा ऐसा हो रहा है तो अच्छी बात है, लेकिन उतने से इस गांव की बीमारी दूर होनेवाली नहीं है। क्योंकि जिले के किसी बड़े शहर में वह दवाखाना खुल जायगा और जो लोग वहा तक पहुंच सकेंगे उनकी सेवा वह दवाखाना करेगा। लेकिन अगर हमें गाँव के बारे में सोचना है तो यही करना पड़ेगा कि गाँव मे ही कुछ वनस्पतियां और दवाइयां बोनी होंगी। और ताजी वनस्पतियां लेकर गाँव के बीमारों को देना होगा। अगर कोई यह कहे कि हम हरेक गाँव में दवाखाना खोलेंगे और वहां बाहर से डॉक्टर लायेंगे जो गाँव की सेवा करेगा, तो मैं कहूंगा कि भाई यह नई बीमारी गाँव में मत

लाइये। मैं तो यही कहूगा कि गॉव की बीमारी का इलाज गाँव की वनस्पति से ही होना चाहिये। परमेश्वर की यह कृपा है कि उसने मनुष्य को जहां पैदा किया वहीं उसको सारी सहूलियतें दी हैं। मनुष्य को भूख है तो उसको खाना मिलने की योजना भगवान ने की है। जहां मनुष्य को उसने भूख दी वहां भूख निवारण की अकल भी उसने मनुष्य को दी। वैसे ही जहां बीमारियां हैं वहां दूर उन्हें करने का इलाज भी जरूर होना चाहिये। अगर यह आशा करेंगे कि गाँव की बीमारी का इलाज हैद्राबाद या मेदक के डॉक्टर करेंगे तो उन डॉक्टरों का बोझ इस गाँव पर पडेगा। इसके सिवाय और कुछ होनेवाला नहीं है।

भाइयो, मैंने एक चीज आप के सामने विस्तार से रखी है। उस पर आप सोचें और ऐसा सर्वोदय समाज अपने गाँव में बनाइये।

नूपरान (जि० मेदक)
१-४-५१

छब्बीसवाँ दिन—

३०

हम अपना कर्त्तव्य करें

परमेश्वर कसौटी करता है

दो चार दिन पहले आप के इस मुल्क मे आसमान से ओले पडे। कई जगह फसल को हानि हुई है, कई जगह मकान के कवेलू टूट गये है। मै सोचता था कि भगवान की कृपा से ही बारिश होती है और उसकी कृपा से ही फसल होती है। यह तो जाहिर है कि परमेश्वर दयालु है और सब पर उसकी कृपा है। लेकिन इस तरह बीच बीच में वह ओले गिराता है तो उसकी क्या मर्जी होगी इसका मेरे मन में विचार आता रहा। मै मानता हू कि इसमें भी उसकी दया काम कर रही है।

वह देखना चाहता है कि हम लोग ऐसे मौके पर एक दूसरे को किस तरह मदद करते हैं। यानि उसमें वह हमारी परीक्षा ले रहा है। वह देखना चाहता है कि जो दया वह हम पर बरसाता है उसका कुछ अश हममें है या नहीं। अगर ऐसे मौके पर हम एक दूसरे को मदद न करे तो परमेश्वर की कृपा के लायक हम साबित नहीं होते हैं। होना यह चाहिये कि हम लोगों को जहा आपत्ति है वहां फौरन दौड जाना चाहिये और जो भी लोगों को मदद पहुचा सकते है पहुचानी चाहिये। लेकिन हम लोग वह तो नहीं करते हैं। सरकार की तरफ देखते हैं और सोचते है कि सरकार क्या

मदद करेगी ? यह तो अपने धर्म को भूल जाना है। सरकार तो अपना काम जरूर करेगी, उसको करना भी चाहिये। लेकिन सरकार की शक्ति की एक मर्यादा होती है, लोकशक्ति अमर्याद है। अगर हमारे घर में हमारा लड़का बीमार पड़ा तो हम यह राह नहीं देखते कि सरकार उसके लिये क्या करेगी। बल्कि हम फौरन हमसे जो बन सकता है करने की कोशिश में लग जाते हैं। वैसे ही कौटुम्बिक भावना हमारी समाज में होनी चाहिये। जैसे नदी में प्रवाह रहता है और पानी सतत बहता रहता है, वैसे हमारा प्रेम जिनको हमारी मदद की जरूरत है उनकी तरफ बहना चाहिये। समझना चाहिये कि ईश्वर हमारी परीक्षा लेना चाहता है और उस परीक्षा में हम अगर पास नहीं होते हैं तो एक बड़ा मौका खोते है। इस तरह नहीं सोचना चाहिये कि मैं नहीं मदद करूंगा तो उससे क्या हानि होगी, दूसरे तो करेंगे। सोचना यह चाहिये कि दूसरे तो मदद करेंगे लेकिन ऐसे मौके पर मै अगर मदद न करूं तो मैंने अपना मौका खोया। हमारे जीवन में दूसरो को मदद करने के लिये जो भी मौके मिलेंगे वे बड़े भाग्य के अवसर हैं ऐसा समझना चाहिये। तो हरेक को यही सोचना चाहिये कि इस मौके पर मैने क्या मदद की। यह नहीं सोचना चाहिये कि दूसरों ने क्या की या सरकार ने क्या की। दूसरे को जो करना होगा वह करेंगे या नहीं करेंगे, वह उनका नसीब है। लेकिन मुझे तो मेरा काम करना ही है। ऐसी जागृति हमारे मन में होनी चाहियें।

स्वराज्य में हरेक की जिम्मेवारी

स्वराज्य का लक्षण ही यह है कि स्वराज्य मे हरेक मनुष्य यही सोचता है कि मैंने इस देश के लिये क्या किया, मैं इस देश के लिये क्या करता हू ? क्या मैं अपने देश के लिये अपने पडौसियों के लिये, गरीबों के लिये, आज कुछ करता हूं ? इस तरह जिस देश के सारे लोग सोचते है उस देश में स्वराज्य है। जिस देश के लोग अपने कर्तव्य का विचार नहीं करते बल्कि दूसरे क्या करेंगे, सरकार क्या करेगी, यही सोचते हैं वे लोग परतत्र हैं, पराधीन है, गुलाम है। स्वराज्य याने हरेक की जिम्मेवारी हरेक महसूस करे। हमारे शरीर में आख अपना काम करती है, कान अपना काम करते है। आख यह नहीं सोचती है कि कान क्या करते है, वह तो अपना कर्तव्य करती है। इस तरह हरेक अवयव अपने अपने कर्तव्य मे जागरूक हैं इसलिये अपने देह मे अपना राज्य चल रहा है। मान लीजिये कि किसी के कान बहरे है और उसकी आख अच्छी है, लेकिन आंख यह सोचने लगे कि कान अपना काम नहीं करते हैं तो मैं भी अपना काम क्यों करू, तो शरीर की क्या हालत होगी ? तो जैसे हरेक इंद्रिय दूसरे इंद्रियो की तरफ नहीं देखती बल्कि अपनी जिम्मेवारी समझ करके उस को पूरा करती है तो यह शरीर अच्छा चलता है। लेकिन इस देश मे लोगो की जबान से अकसर मैं यह सुनता हू कि फलाना काम नहीं करता है, दूसरा काम नहीं करता है, वह खुद क्या काम करता है इसके

बारे मे वह बोलता ही नहीं। मुझे यह देखकर लगता है कि स्वराज्य अभी बहुत दूर है।

सच्चा स्वराज्य अभी हासिल करना है

एक तरह का स्वराज्य तो मिल गया लेकिन वह स्वराज्य नहीं है। वह तो इतना ही हुआ कि दूसरे देश के पंजे से हमारा देश छूट गया। हमारे घर मे शेर घुस गया था उसको बाहर निकाल दिया इतने से हमारा काम नहीं पूरा होता है। यह कोई नहीं कहेगा कि भाई शेर तो चला गया अब रसोई करने की क्या जरूरत है। बल्कि यही कहेंगे कि अब शेर बाहर चला गया है तो शुरू करो अपना घर का काम। तो हरेक गांव, हरेक घर और हरेक मनुष्य को यह सोचना चाहिये कि स्वराज्य आया है उसका मतलब मेरे पर जिम्मेवारी आई है। गांव में सैंकडों काम ऐसे होते है जो गांव वाले अगर एक दूसरों को मदद दें तो खुशी से हो सकते हैं। अगर हरेक गांव यही कहेगा कि हम को बाहर से मदद मिलनी चाहिये तो हरेक गांव को कहा से मदद आयेगी। समझना चाहिये कि हम लोग गरीब हैं तो हमारी सरकार श्रीमान् कैसे हो सकती है, वह भी गरीब ही होगी। देखिये मनुष्यों के हिसाब से अपने देश की सरकार की संपत्ति कितनी है, और अमेरिका की सरकार की संपत्ति कितनी है। तो हमारे सरकार को बलवान हमें बनाना है। यह दृष्टि हमारी प्रजा में जब आयेगी तब वह खुद अपना काम करने लगेगी और स्वराज्य का अनुभव हम लोगों को होगा।

कलात्मक शिक्षण के लिये सरकार मदद देगी

हां यह हो सकता है कि आप के गांव में आप कोई उद्योग खड़ा करना चाहें, और कोई जवान लोग उसके लिये तैयार हो जांय, और उन को कहीं से तालीम दे कर लाना है तो उस काम के लिये सरकार से आप मदद मांग सकते हैं। याने सरकार की तरफ से तालीम की एक छोटी सी मदद हम को मिल सकती है, और वह मागनी चाहिये। लेकिन तालीम याने उद्योग की तालीम। पढना लिखना तो गांववालों को अपने गाव में खुद कर लेना है। जो धंदे या उद्योग गांव मे मौजूद नहीं है उसके लिये सरकार कुछ स्कॉलरशिप दे सकती है, और व्यवस्था कर सकती है। हर गाव में जो खेती होगी उस में परिश्रम करना गांववालों का ही काम रहेगा। लेकिन खेती में अगर कोई जंतु बढ़ गये हैं और उससे खेती नष्ट होती है तो उस के लिये क्या इलाज करना, यह सरकार को पूछ सकते हैं और सरकार से ऐसी सलाह मिल भी सकती है। यही समझो कि जैसे अपने कुटुंब का सारा कारोबार हम खुद करते हैं लेकिन अपने पड़ौसियों से कहीं थोड़ी मदद चाहते हैं तो मिल जाती है। उसी तरह एक गांव को दूसरे गांव की कुछ मदद मिल सकती है। लेकिन मुख्य जो काम करना होगा वह गांववालों को अपने पांव पर खडे हो कर ही करना होगा। यही समझो कि मुझे अपने ही पाव पर खडा होना होता है, अपने हाथ से काम करना होता है अपने आंख से देखना होता है, अपने कानों से सुनना होता है। वैसे दूसरों को भी इन्हीं इंद्रियो से काम लेना होता है।

फिर भी हम एक दूसरे को कुछ मदद देते हैं। याने हम पगु बनकर एक दूसरों की मदद नहीं करते हैं बल्कि हम अपने अपने शरीर का पूरा उपयोग करके समर्थ बनते हैं और समर्थ बन कर दूसरों की मदद लेते हैं, दूसरों को मदद देते हैं। मैं यह नहीं कहता हू कि आप की आंख से मुझे देखना है, आप के कान से मुझे सुनना है। मैं तो अपनी आंख से देखने की जिम्मेवारी मानता हू और आप की मदद लेता हू। इसी तरह एक दूसरे का एक दूसरे पर थोडा-थोडा उपकार हो सकता है।

इस तरह स्वावलम्बन और परस्पर सहकार ये दो चीजें स्वराज्य में हरेक को सीखनी चाहिये। इन दोनों की अपनी मर्यादा क्या है ? यह हरेक को पहचानना चाहिये। एक मनुष्य को भी यह चीज लागू है, गांव को भी लागू है।

कोचारम् (जि मेदक)
२४५१

सत्ताइसवाँ दिन—

: ३१ :

"इन्शाल्लाह" भगवान चाहे तो

भक्त की कसौटी :

८ मार्च से मै वर्धा से हैद्राबाद के लिये पैदलयात्रा मे निकल पड़ा हू। कुछ रोज तो हमारा काम ठीक चला। लेकिन चार दिन पहले मुझे बुखार आ गया, जो लगातार चार दिन रहा। हमारे साथी सोचने लगे कि कुछ रोज विश्रांति लेनी चाहिये। मैंने कहा कि नहीं हम रोज के नियम के मुता'बिक चलते ही रहेंगे। क्योंकि मुझे विश्वास था कि भगवान बीच मे थोडी कसौटी लेना चाहता है इसके सिवाय और कुछ नहीं है। परमेश्वर हमेशा भक्त की बीच बीच मे सत्वपरीक्षा लिया करता है। लेकिन जैसे वह परीक्षा करता है वैसे वह शक्ति भी देता है। आखिर श्रद्धा रख कर हम चलते रहे। और आज मैं देखता हू कि बुखार चला गया। अब लगता है कि जैसा हमने पहले तय किया था वैसे दो तीन रोज के अदर शिवरामपल्ली के सर्वोदय समेलन में पहुच जायेंगे। लेकिन यह भी मनुष्य की कल्पना मात्र है। भगवान ने जो चाहा होगा वही होगा। मै वर्धा से निकला तब मन मे भगवान का नाम ले कर ही निकला। और आज भी उसी के बल पर मेरा

सब काम चलता है। मैं देखता हूं कि मनुष्य में अपना निज का कोई बल नहीं है। अगर वह भगवान पर श्रद्धा रख कर चलता है तो भगवान कुछ बल देता ही है।

"इन्शाल्लाह"

मैंने कुरान मे एक जगह एक किस्सा पढा था। वह इस समय मुझे याद आ रहा है। बडा दिलचस्प किस्सा है। एक रोज कोई बात महमद पैगंबर मे पूछी गई तो उसने कहा कि "हां मैं उसे करूंगा" लेकिन उन्होने जैसा वचन दिया था वैसा वे कर नहीं पाये। तब उनसे पूछा गया कि "आपने वादा किया था वैसा आप क्यों नहीं कर पाये।" तो मुहमद पैगंबर ने जवाब दिया कि "अगर भगवान चाहेगा तो" इतना कहना मैं, भूल गया और "मैं करूंगा" ऐसा अपने नाम से मैंने कहा इसलिये वह काम नहीं हो पाय। इसीलिये मुसलमानों मे "इन्शाल्लाह" याने अगर भगवान चाहे तो, ऐसा बोलने का रिवाज पडा है। लेकिन सिर्फ बोलने की यह बात नहीं है, मन मे वैसी भावना होनी चाहिये। अपने जीवन की कोई भी कृति हम भगवान की इच्छा के बगैर नहीं कर सकते। वह चाहता है तभी वह बनती है।

हरिनाम ही एकमात्र बल

अपने निज के काम मे अगर हम इतने असमर्थ हैं तब जहाँ हम देश का काम करने जाते हैं वहा भगवान की इच्छा के बिना कैसे होगा? इसलिये जब कभी मैं देश के काम के बारे में सोचता

हूं तो मुझे परमेश्वर के स्मरण का महत्त्व उत्तरोत्तर अधिक ध्यान में आता है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद हमारे देश के सामने बहुत बड़ी समस्यायें खड़ी हो गई। उनमें से कुछ समस्याओं का हल तो मिल गया लेकिन बहुत सारी वैसी की वैसी मौजूद हैं। और मेरा तो विश्वास हो गया है कि बिना परमेश्वर की मदद मांगे और लिये इन कठिन कामों को हम अपनी शक्ति से हल नहीं कर सकेंगे। मुझे एक भाई ने पूछा--"आपको जो कहना है वह आप कोई स्वतंत्र व्याख्यान में क्यों नहीं कहते? प्रार्थना के साथ उसको क्यों जोड़ देते हैं।" मैंने कहा, "प्रार्थना ही एक मुख्य शक्ति मेरे पास है। इसलिये सब के साथ मैं उस प्रार्थना को करना चाहता हूं। और जब मैं प्रार्थना के बाद थोड़ा बोलता हूं तो उसमें प्रार्थना की शक्ति का ही जो परिणाम होता है सो होता है। बाकी मेरे निज के शब्दों में कोई खास शक्ति है ऐसा मैंने अभी तक अनुभव नहीं किया है। यह एक बात जो इन दिनों बहुत दफा मेरे मन में आई वह आपके सामने रख दी।

अध्ययन की आवश्यकता

एक दूसरी बात कहना चाहता हूं। कल कार्यकर्ताओं के साथ बात हो रही थी तब मैंने पूछा कि पोतना का भागवत आप लोगों में से कितने लोगों ने पढ़ा है। वहां जो भाई इकट्ठा हुये थे उनमें से सिर्फ एक ने कहा कि मैंने पढ़ा है। बाकी सबने नहीं पढ़ा था। जो लोग वहां थे वे सब पढ़े-लिखे थे और कुछ न कुछ

कॉंग्रेस का काम करनेवाले थे। तो मुझे आश्चर्य लगा कि तेलगु में जो किताब सब के दिलों पर असर करती है याने जो जनता की किताब है इसको इन लोगो ने कैसे नहीं पढ़ा! फिर मैंने उनसे प्रार्थना की कि हर रोज आपको उस किताब का कुछ न कुछ अभ्यास जरूर करना चाहिये। हमारे शरीर को जैसे रोज साफ करने की जरूरत होती है वैसे हमारे मन को भी रोज शुद्ध करने की आवश्यकता होती है। इसलिये संतो के वचनों का कुछ परिचय रोज रखना और उसका चिंतन मनन करना बहुत लाभदायी होता है। इस तरह अपने मनकी शुद्धि का काम कार्यकर्ता नहीं करते है तो उनकी कर्तृत्वशक्ति दिन ब दिन बढ़ने के बजाय क्षीण होती जायगी। इसके अलावा जिस किताब ने जनता में काम किया है और जनता के दिलों पर जिसका असर है उस किताब से हमारे कार्यकर्ताओं का अगर परिचय न हो तो वे ग्रामों मे क्या सेवा कर सकेंगे। ग्रामो की सेवा अगर हम करना चाहते है तो ग्रामवासियों की पवित्र भावनाओं के साथ हमारे दिल का संबध जुड़ जाना चाहिये। मुझे लगा कि यह चीज मैं आप लोगों के सामने भी रखूं।

पतिव्रता धर्म का अर्थ

आखिर यहा जो बहनें इकट्ठी हुई हैं उनको एक दो बातें कहना चाहता हूं। हैद्राबाद राज्य में जब से मैंने प्रवेश किया है तब से मैं देख रहा हूं कि यहां शराबखोरी बहुत है। इसमें से हम

कैसे छूट सकते है इसका जब मै विचार करता हू तो उसमें स्त्रियों का मुझे बहुत काम दीखता है। माताओं के हाथ में भारी शक्ति है। सत्याग्रह की शक्ति स्त्रियो में जितनी होती है उतनी शायद पुरुषों में भी नहीं हो सकती। इसलिये आप बहनो से मुझे कहना है कि आप अगर निश्चय करें तो पुरुषों को व्यसनों से छुडा सकतीं हैं। लेकिन हम लोगो में ऐसा एक खयाल हो गया है कि पति चाहे दुराचार भी करता हो तो स्त्री को कुछ बोलना नहीं चाहिये और उसको चुपचाप सहन करना चाहिये। इस तरह सहन करने में ही पातिव्रत धर्म है यह स्त्रिया समझती है। यह बात सही है कि पति दुराचारी भी हो तो भी उसकी सेवा करना पत्नी का काम है और पति की सेवा करके ही वह पति को जीत सकती है। लेकिन सेवा करने का यह मतलब नहीं है कि उसको उसके व्यसन में से छुडाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। पति को दुराचरण में परावृत्त करने की जिम्मेवारी पत्नी पर है ऐसा पत्नी समझे तभी वह धर्म समझती है।

सूत कताई क्यों नहीं करते ?

दूसरी बात मै यह कहना चाहता हू कि आप बहने कातती क्यों नहीं ? गांधीजी आखिर तक कातने का धर्म लोगों को समझाते रहे। अब हम देखते हैं कि उनके जाने के बाद तीन साल बीत चुके लेकिन मिल का कपडा सब लोगों के लिये काफी मात्रा में पैदा ही नहीं होता है। मिल वाले पहले जितना कपडा पैदा करते

ये उतना भी अब नहीं कर पाते हैं, इसलिये लोगों में कपड़े की तंगी है। ऐसी दशा में हम लोग अगर मिल के कपड़े के भरोसे रहेंगे तो हमारे लिये वह अच्छी बात नहीं है। इसलिये मैं आप लोगो से निश्चयपूर्वक कहना चाहता हू कि आप लोग घर में बैठे बैठे अगर सूत कातेंगी तो उससे देश की और गाँव की बहुत सेवा होगी।

मेडचल (जि॰ हैद्राबाद)
३-४-५१

अट्ठाइसवाँ दिन—

: ३२ :

प्राकृतिक चिकित्सा

मामूली बीमारी में दवा की जरूरत नहीं

हम लोग वर्धा से हैद्राबाद पैदल यात्रा में जा रहे थे, और आपके गाँव का मुकाम हमने नहीं सोचा था। लेकिन यहां पर एक भाई प्राकृतिक चिकित्सा का काम कर रहे हैं। उनका आग्रह रहा कि उनके स्थान में हम एक दिन बितावें। उनके काम का अभी आरंभ हुआ है ऐसा तो नहीं कह सकते। लेकिन जो थोड़ा समय बचता है उस में प्राकृतिक चिकित्सा का काम वे कर लेते है। मैंने उनकी बात मान ली। क्योंकि सर्वोदय की जो जीवन-योजना है उस में कुदरती इलाज के लिये एक विशेष स्थान है। और इस मुसाफिरी में भी हम लोगों को उसका अनुभव आया है। चार दिनों से मुझे बुखार आता था, और अकसर ऐसे मामूली बुखार में बिना दवाई के केवल आहार के फरक से जो हो सकता है वह करने का हमेशा मेरा प्रयत्न रहता है। हमारे गुरू ने हमें सिखाया है कि परमेश्वर का नाम लेना ही सब से बड़ी दवा है, जिसको अनेक महापुरुषों ने आजमाया है। तो हम भी उस पर श्रद्धा रखते हैं। हमने मुसाफिरी जारी रखी। चलना जैसे रोज होता था

वैसा होता रहा। कुछ आहार मे फरक कर लिया। बाकी सारा कार्यक्रम जैसा का तैसा जारी रहा। चार दिन बुखार सतत आया। मैं तीन दिन की कल्पना करता था, लेकिन एक दिन वह और आगे बढ़ा। चार दिन के बाद वह गया। इस तरह भगवान कसौटी करता है और अनुभव देता है, कि साधारण बीमारी में कोई दवा वगैरह की जरूरत रहती नहीं। जीवन में थोड़ा परिवर्तन कर लिया आहार में फरक किया, कुछ विश्रांति पचनेंद्रिय आदि को दे दी तो काम निभ जाता है।

गुलामी का अंश

मामूली बीमारियो मे इस तरह काम हो जाता है। जो विशेष बीमारी होती है उस पर कोई खास इलाज अभी किसी को सूझा नहीं है। तो उसके लिये केवल परमेश्वर के नाम का ही आधार रहता है। इस तरह से दवाइयों के लिये बहुत कम अवकाश है। लेकिन आज कल हम देखते हैं कि जिधर जाओ उधर डॉक्टर भी बढ़े है और रोग भी बढ़े हैं। और दोनों एक दूसरे के शत्रु नहीं दीखते है बल्कि मित्र ही दीखते है। क्योंकि दोनों बढ़ते चले जा रहे है। एक बढ़ता और दूसरा घटता तो हम कह सकते थे कि वे एक दूसेर के शत्रु है। लेकिन जहां डॉक्टर मजे में बढ़ते जाते हैं और रोग भी मजे मे बढ़ते जाते है वहां यही अनुमान होता है कि दोनों मित्र हैं और दोनों हाथ में हाथ मिलाये चलते हैं। यह हिंदुस्तान के लिये बड़ा खतरा है कि हिंदुस्तान की जनता को परदेशी औषधियों का आधार लेना पड़े। भगवान ने अन्न हमारे

भूमि में पैदा किया तो हमारे रोगों का इलाज भी यहीं से होना चाहिये। लेकिन हर शहर में आप देखेंगे कि कोई छोटा सा भी रोग हुआ तो फौरन दवाई देते है और वह दवा परदेशी होती है। मानों यहां ऐसी कोई वनस्पति भगवान ने नहीं रखी, या यहां की कुदरत में ऐसी कोई शक्ति नहीं रखी, कि जिससे वह छोटा रोग भी दूर हो। लेकिन एक गुलामी जहां आती है वह अपने साथ दूसरी कई गुलामियों को लाती है। तो राजकीय गुलामी, अंग्रेजों की सत्ता, हम लोगों पर चली, वह तो चली गई। लेकिन उस के साथ-साथ दूसरी कई गुलामियां वह लाई थी वह अभी गई नहीं।

हिंदुस्तान की विशेषता

वास्तव में हमारे देश में वैद्यशास्त्र का काफी अच्छा विकास हुआ था। हमारे एक मित्रहमेशा कहते हैं कि हिंदुस्तान की भूमि में विद्यायें तो बहुत प्रकट हुई, लेकिन दो विद्यायें अद्वितीय हैं। एक वेदांतविद्या और दूसरी वैद्यविद्या। मैं इस चीज को वैसा कबूल नहीं करता हूं। यह मैं कबूल करता हूं कि यहां की वेदांत विद्या की बराबरी करनेवाली विद्या दुनिया भर में कहीं नहीं हुई। लेकिन यहां की वैद्यविद्या अद्वितीय है ऐसा तो मैं नहीं कह सकता। दूसरे देशों में भी काफी अच्छी वैद्यविद्या चली है। यूनान में चली है, अरबस्तान में चली है। आजकल पाश्चात्य देशों ने दवाइयों में और शरीर के संशोधन में बहुत तरक्की की है यह मानना पड़ेगा। तो हमारे देश में जो वैद्यशास्त्र निकला वह कोई अद्वितीय था या परिपूर्ण था ऐसा तो मैं दावा नहीं कर सकता।

लेकिन फिर भी हमारे देश के लिये जो दवाइयाँ चाहिये वे यहीं की वनस्पतियों से मिलनी चाहिये। और यहां का वैद्यशास्त्र यहीं की वनस्पतियो के बारे मे सोचता है इतनी विशेष बात हमारे लिये है। अर्थात् वैद्यशास्त्र के लिये यह कोई आश्चर्यकारक बात तो थी नहीं। क्योंकि जो हमारा वैद्यशास्त्र यहा पैदा हुआ वह यहा की वनस्पतियों के बारे मे न सोचे तो और कौनसी वनस्पतियों के बारे मे सोचेगा? इसलिये यहा की वनस्पतियों का सशोधन उन्होंने किया। और वही हमारे काम का है। लेकिन वह कच्चा है, पूरा नहीं है। हमारी बहुत सारी पुरानी वनस्पतिया ऐसी हैं जिन्हें हम पहचानते नहीं हैं। जिन नाम भी हम नहीं जानते। तो वह सारा सशोधन हमे करना है।

रोग-निवारण का मसाला हर गाव में मौजूद है

इस सशोधन में हमें जितना समय लगेगा उतना हम दे। लेकिन साथ साथ हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि परमेश्वर की लीला और उसकी योजना ऐसी है कि वह हर किसी को पूरी तरह मे स्वावलबी बना देता है। ज्ञान के साधन हरेक को दिये हैं, अन्न-पाचन की शक्ति हरेक को दी है, शरीर परिपूर्ण हरेक को दिया है, हवा पानी हरेक के लिये मौजूद है। तो ज्वर का इलाज किस तरह करें यह तरीका भी हरेक को दिया हुआ ही होना चाहिये और वनस्पतियों का बहुत आधार भी लेने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। मिट्टी का उपचार हो सकता है, पानी का उपचार हो सकता है, उत्तम हवा का उपचार हो सकता है, प्रकाश का उपचार हो सकता है। इस तरह वेदों में सूर्यदेवता की उपासना

अनेक प्रकार से बताई गई है। और कहा है कि रोगों के इलाज में पानी का कितना उपयोग है, सूर्यकिरणों का कितना उपयोग है। यह सब वेदों में भरा पड़ा है। और हम अगर जरा भी सोचें तो ध्यान में आ जायगा कि हमारा सारा शरीर इस ब्रह्मांड का बना है। शरीर में जो भी चीज भरी है वह सारी ब्रह्मांड में भी मौजूद है। बाहर पानी है तो शरीर में भी रक्त आदि भरा है। बाहर सूर्यनारायण है तो शरीर में ऑख है, और प्रकाश है, बाहर वायु है तो शरीर में सांस है। इस तरह जो चीज बाहर है वह शरीर में भी मौजूद है। यहां तक कि बाहर जो सोने की और लोहे की खानें हैं वह भी हमारे शरीर में मौजूद है। यानें हमारे रक्त आदि में जो धातु पड़े हैं उनमें लोहा भी है, तांबा भी है और सुवर्ण भी है। यह सारी चीजें जो ब्रह्मांड में हैं वे पिंड में भी पड़ी है। शरीर ही जब ब्रह्मांड का बना हुआ है तो पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश इन चीजों का खूबी के साथ निर्भयतापूर्वक प्रेम से और उपयोग करें तो बहुत सारे रोगों का हल हो सकता है।

गांव में दवाखाना मत लाइये

इस तरह की प्राकृतिक चिकित्सा की विद्या गांव गांव में पढ़ाई जानी चाहिये। अगर गाँवों के बारे में हम यह सोचें कि हर गांव में दवाखाना बने तो एक तो बनाना अशक्य है और दूसरे अगर बना भी लिया और बाहर की सारी वनस्पतियां वहां आने लगीं, तो गांव लुटने का एक नया रास्ता खुल जायगा। दूसरे रास्ते पहले ही बहुत बन चुके हैं, उन में यह और एक इजाफा अगर

हुआ तो गांव के रोग कम नहीं होंगे बल्कि बढ़ेंगे ही। क्योंकि लोगों का आहार ही क्षीण हो जायगा। तो यह गाव का इलाज नहीं हो सकता कि बाहर की वनस्पतिया यहा आये और बाहर का डॉक्टर यहा काम करे। हो यही सकता है कि गांव मे जो वनस्पतिया पैदा होती है उनका उपयोग सिखाये। और बिना वनस्पति के भी कहीं एकाध फाका कर लिया, या कहीं कुछ पानी का उपचार किया, कहीं एनीमा ले लिया। इस तरह अपना रोग किस तरह दूर हो सकता है यह तरीका लोगों को सिखाया जाय। अगर यह सिखाया जायगा तो आप देखेंगे कि कम से कम खर्च मे लोगो की अच्छी से अच्छी सेहत बन जायगी। क्योंकि कुदरत में ऐसी शक्ति है कि वह शरीर को सुधारने के साथ साथ कोई दूसरा बिगाड उसमें पैदा नहीं करती। औषधियो से यह होता है कि एक रोग दूर हुआ ऐसा आभास जहा होता है वहा फौरन दूसरा रोग हो जाता है। इस तरह रोगों का सिलसिला लगा रहता है। और जहा एक दफा घर मे बोतल का प्रवेश हुआ वहा वह बोतल उस घर से निकलती ही नहीं। वह, उस मनुष्य को खतम करती है। लेकिन स्वय बची रहती है। यह हालत दवाइयो के कारण होती है।

शहरों में रोग क्यों बढे ?

तो देहातो का इन दवाइयों पर निर्भर रहना खतरनाक है। और शहरों के लिये भी वही चीज है। आखिर शहरों में रोग क्यों बढे? इसीलिये बढते है कि शहर के लोग ठीक व्यायाम नहीं करते, अपने घरो में बैठे रहते हैं तो अच्छी हवा उनको नहीं

मिलती। खूब कपड़े पहनते हैं तो सूर्य की किरणों से वंचित रहते हैं इस तरह परमेश्वर की दी हुई देनों से लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं। घर भी ऐसे बने कि कुदरत से दूर रहना पड़ता है। काम भी ऐसा कि कुदरत के साथ कोई ताल्लुक नहीं। फिर रात को जागेंगे, सिनेमा देखेंगे, खराब किताबें पढ़ेंगे, इस तरह अपने शरीर को और मन को बिगाड़ लेते हैं तो रोग बढ़ते हैं, और उनके उपचार के लिये फिर दवाइयां लेते हैं। डॉक्टर के पास जाते हैं, ऑपरेशन करवाना पड़ता है, कई तरह के इंजेक्शन चाहिये, निषिद्ध वस्तु का सेवन चाहिये, जो चीजें साधारणतया कोई खाता नहीं है वे खानी चाहिये, दूर दूर से महंगी चीजें खरीदनी चाहिये। यह सारा उसके पीछे आता है। और वह शहरवाला सब तरफ से क्षीण हो जाता है। तो शहरों के लिये भी प्राकृतिक चिकित्सा ही उत्तम आधार है।

कुदरती उपचार सीख लो

अब प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में अगर मैं यहां विचार करूं तो वह बहुत समय का काम है। विचार बहुत हैं और अनुभव भी कुछ लिया है। एक बात सिर्फ कहना चाहूंगा। यहां जो भाई काम कर रहे हैं उनको आप मौका दीजिये। वे अपना धंधा करते हैं और बचे समय में यह काम करते हैं। लेकिन आप अगर उनको पूरा काम देंगे तो वे अपना धंधा भी छोड़ देंगे और इसी काम में लग जायेंगे। उनका उपयोग करो और उस विद्या को खुद सीखो। ताकि उन पर भी आधार रखने का मौका न

आये । और आप में से हरेक मनुष्य कुदरती उपचार में प्रवीण बन जाय । उसका ज्ञान हासिल करने के लिये बहुत ज्यादा समय की जरूरत नहीं है । हम क्या खाते हैं ? किस चीज से क्या परिणाम होता है ? इस तरह का आत्मपरीक्षण करना अगर मनुष्य सीख जाय और थोड़ा सयम सीख ले तो यह विद्या हासिल हो सकती है । तो आप इस भाइ से वह विद्या हासिल करे यह आप को मैं सूचित करना चाहता हू ।

कुदाली फावड़ा चरखा कुदरती उपचार के औजार

अब एक दूसरी बात है । जहा प्राकृतिक उपचार का स्थान होता है वहा हॉट वॉटर बॅग रखते हैं, एनीमा रखते हैं, और भी कई तरह के ऐसे औजार रखते है । अब ये छोटे छोटे औजार बड़े काम के होते है और वे मनुष्य को जो राहत मौके पर देते है, वैसी राहत वनस्पतियो से भी कभी कभी नही मिलती । जरा एनीमा लेते हैं तो जो पेट दुखता था उसमे बहुत फरक पड़ा, और दूसरे बहुत से उपचार किये गये लेकिन पेट पर कोई असर नहीं हुआ यह घटना तो हमने कई बार देखी है और उसका अनुभव किया है । तो ये छोटे ओजार काम के है । लेकिन मेरा मानना है कि इनके साथ साथ कुदरती उपचार की सस्था के पास एक खेत भी होना चाहिये । और मरीजो को उनकी सेहत को देख कर कुछ काम भी खेत मे देना चाहिये । कुदाली फावड़ा चरखा आदि जो औजार है ये भी कुदरती उपचार के औजार हैं । ऐसा मेरा दावा है ।

कुदाली फावड़ा चरखा सार्वभौम औजार

कोई कहेगा कि यह तो एक पागल मनुष्य आया है। जहां भी कोई बात निकलती है तो कुदाली फावड़ा चरखा लाता है। उसको पूछते है कि भाई हिंदुस्तान की पैदावार कैसे बढ़ेगी, हिंदुस्तान लक्ष्मीवान कैसे बनेगा तो कहता है कि कुदाली लो, फावड़ा लो, चरखा लो। उसको पूछते है कि तालीम किस तरह दी जाय तो कहता है कि तालीम का जरिया कुदाली, फावड़ा और चरखा है। अब आज तो यह बोलने लगा कि कुदरती उपचार के औजार कुदाली फावड़ा और चरखा हैं। तो हर चीज के बारे में यह ऐसा ही कहता है तो यह पागल है ऐसा लोग कह सकते है। लेकिन मै लोगों से कहूगा कि मेरा पागलपन इतने में खतम नहीं हुआ है। मै और आगे बढा हुआ हूं। मैं यह भी कहता हूं और कई मर्तबा कह भी दिया है कि हम को ये जो लड़ाइयां लड़नी हैं उन के औजार भी कुदाली फावडा और चरखा है। सामाजिक क्रांति हमे करनी है, राजकीय क्रांति भी करनी हमें बाकी है। कोई यह न समझे कि हिंदुस्तान में आज जो राज्यतन्त्र चल रहा है वह आदर्श है। सर्वोदय की पद्धति मे जो राज्यतंत्र आयेगा उसमें और आज के तंत्र में बहुत फरक होगा। तो हमें राज्यतंत्र भी बदलना है। उसके लिये जो लड़ाइयां लड़नी हैं उन लड़ाइयों के औजार भी मेरे मन में तो कुदाली, फावड़ा, चरखा और चक्की ये सारे है। और मेरा अपना विश्वास हो गया है कि मनुष्य बीमार पड़े ऐसी भगवान की हरगिज इच्छा हो ही नहीं सकती। उसने मनुष्य को

हर चीज दी है उसके साथ भूख दी है। इसका अर्थ यह हुआ कि भूख के लिये परिश्रम करना परमेश्वर की आज्ञा है। लेकिन मनुष्य परिश्रम नहीं करना चाहता, और खाना चाहता है। और भूख से ज्यादा भी खाना चाहता है। इधर परिश्रम न करे और उधर भूख से ज्यादा खाय, यह जब चलता है तो परमेश्वर को क्रोध आता है और अपने क्रोध से वह हमें बीमारियां देता है। अगर हम ठीक कुदरती तौर पर जीवन बितायें और शरीर परिश्रम से ही रोटी कमाने का निश्चय करें तो आप देखेंगे कि बहुत सारी बीमारियां खतम हो जायेंगी।

शरीर परिश्रमी भी बीमार क्यों पड़ते हैं?

आप यह पूछ सकते हैं कि अपने देश में कई लोग शरीर परिश्रम से ही अपना गुजारा करते हैं फिर उन्हें क्यों बीमारियां हैं? इसका कारण यह है कि उन पर परिश्रम का ज्यादा बोझ पड़ता है और उतने प्रमाण में उन को खानेको नहीं मिलता। दूसरे जो लोग परिश्रम नहीं करते वे उनका खाना खा लेते हैं। इस तरह वे लूटे जाते हैं इस कारण उनको बीमारियां होती हैं। ये काम नहीं करते है इसलिये इनको बीमारियां होती हैं, और इनको खाना नहीं मिलता है इसलिये इनको बीमारियां होती हैं। इस तरह दोनों बीमार ही पड़ते हैं। लेकिन दोनों अगर शरीर परिश्रम में लग जायें और माफक श्रम करें, नियमितता से जीवन बितायें और आहार की मात्रा देख कर अन्न सेवन करें, स्वाद के वश न हों तो ईश्वरीय योजना में मनुष्य को बीमार पड़ने का कोई कारण नहीं है इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

४।४।५१ बोलारम (जि. हैदराबाद)

उनतीसवाँ दिन

: २९ :

शिक्षा प्रणाली कैसी हो

पैदल यात्रा का लाभ

दो साल पहले हैद्राबाद के राज्य में कुछ दिन घूमने का अवसर मिला था। और तब सिकंदराबाद भी आना हुआ था। उस वक्त की मुसाफिरी एक दूसरे उद्देश्य से हुई थी। और कुछ जिलों में घूम चुके थे। इस मर्तबा हम सर्वोदय की यात्रा के लिए निकल पड़े। सर्वोदय संमेलन शिवरामपल्ली में था इसलिए रास्ता भी वर्धा से हैद्राबाद राज्य में होकर ही जाता था। इस से चार पांच जिलों का परिचय हुआ। पैदल यात्रा में जिस तरह कुदरत का और मनुष्य का समीप और स्वच्छ दर्शन होता है वैसा और दूसरे किसी तरीके से नहीं होता। और इसी अनुभव के लिये हमने पैदल निकलने का सोचा। कुल मिलाकर जो अनुभव मिला वह बहुत ही लाभदायी रहा। और हम तो मानते हैं कि हमारे देश का दर्शन जो उसमें देखने को मिला है वह यद्यपि कल्पना के बाहर नहीं था तथापि हम अगर पैदल नहीं निकले होते तो वह दर्शन नहीं होता। यात्रा में छोटे छोटे गाँवों से भी जाना पड़ा, बड़े बड़े गाँव भी बीच में आये।

छोटे गाँवा की खूबी

छोटे छोटे गाँव जहा आये वहां उन गाँवों की अपनी अपनी खूबिया दीख पडीं। यद्यपि गाँव में कुछ चीजें समान होती हैं फिर भी हरेक गाँव एक तरह से जिंदा होता है, मानो उसमें एक स्वतंत्र आत्मा होती है। हर गाँव की अपनी खुसूसियत होती है। जैसे हम एक ही सूर्योदय हर रोज देखते हैं फिर भी उसे देखने से कभी किसी का जी ऊबा नहीं। एक दिन सूर्योदय के मौके पर जो दृश्य दिखाई देता है वह दूसरे दिन कभी दिखाई नहीं देता। हर रोज नया नया ही दृश्य दीख पडता है। वैसी ही कुछ हालत देहातो की है। हर देहात मे कुछ कुछ विशेषतायें होती हैं। वे सब हमे देखने को मिलीं। लेकिन जहा बडे बडे शहर आते हैं वहा अगर एक शहर देख लिया तो दूसरा शहर देखने की जरूरत नहीं रही ऐसा लगता है। परदेशी वस्तुओ से भरी हुई वही दूकाने हर जगह नजर आती है, वही मोटरो की दौडधूप और चित्त की चचलता हर जगह दीख पडती है, सिनेमा खेल आदि वही हर जगह होते है। हर जगह वही आनद की खोज और हर जगह वही आनद का अभाव। किसी भी शहर में आप जाइये उसका यही रूप दीख पडता है और शहर में जाने पर फौरन वही विचार फिर से मन मे आते है। और मै अकसर जहा किसी शहर मे प्रवेश करता हू वहा मुझे वैसा ही लगता है जैसा ज्ञानदेव ने कहा था। एक जगल का जानवर था जिसे कोई पकडकर राज महल में ले गया। उसने राज महल

का सारा दृश्य देखा कि जिधर देखो उधर कई चीजें भरी पड़ी हैं और कई मनुष्य दौड़ धूप कर रहे हैं। तो वह बिचारा जंगली जानवर एक कोने में जा बैठा और उस राज्य में उसको सारा सुनसान लगने लगा। वैसे ही जब कभी मैं शहर में पहुंचता हूं तो मुझे लगता है। फिर भी शहर की जनता से भी संपर्क रखने की इच्छा रहती है, शहरों में से काफी काम हो सकता है, शक्ति भी शहरों में भरी पड़ी है उसका हमें उपयोग करना है। इसलिये शहर में आने की इच्छा होती है। लेकिन आने पर वही सवाल मन में उठते हैं।

अहम सवाल

उन सब सवालों में सब से महत्व का सवाल जो मेरे मन में आता है वह यही कि शहर की तालीम का क्या करें। आज यहां आने पर हमारे मित्र का एक लड़का हम से मिलने आया। वह कॉलेज में पढ़ रहा है। हम जानते हैं कॉलेजों का हाल। फिर भी उससे पूछ लिया। उसने कहा कि पिता का आग्रह है और पढ़ने की उम्र है तो पढ़ता तो हूं, परीक्षा भी पास करता हूं, गिनती होशियार लड़कों में है, लेकिन पढ़ने में कोई दिलचस्पी नहीं है। जरा भी रस नहीं आता। ऐसा लगता है कि व्यर्थ ही पढ़ रहा हूं। बेकार सा शिक्षण मिल रहा है ऐसा आभास होता है। और अब तो बड़ी छुट्टी मिल गई है। याने २२ मार्च को परीक्षा खतम हो गई तब से छुट्टी शुरू हुई। जून के आखिर तक छुट्टी है। याने लगातार सवा तीन महीने की छुट्टी है। इन छुट्टियों में

क्या करना यह सवाल निकला ? जब यह सब मैं सुनता हूं, और हर जगह यही सुनता हूं, तो लगता है कि हम शिक्षण के बारे में अभी भी कुछ सोचते नहीं हैं। देश में जो उठता है वह यही कहता है कि इस समय देश में काम करने की, अधिक अन्न उपजाने की जरूरत है। सब तरह से हमारी कर्म की मात्रा में वृद्धि की जरूरत है। किसान धूप के दिनों में ही काम में लगा रहता है। वर्षा के पहले जमीन की जो कुछ तैयारी करनी होती है वह इन दिनों ही करनी होती है। तब यहां कॉलेज के शिक्षकों को और विद्यार्थियों को तीन तीन महीने लगातार छुट्टी दी जाती है। इससे मन को लगता है कि क्या ये हाईस्कूल-कॉलेज आदि जो चलते हैं वे आसमान में चलते हैं या जमीन पर चलते हैं ? और अगर जमीन पर चलते हैं तो किस जमीन पर चल रहे हैं ? हिंदुस्तान से कोई ताल्लुक रखते हैं या नहीं ? यह सवाल हमेशा उठता है। और जो अच्छे लड़के होते हैं उनके मन में यही चीज खटकती रहती है कि हम जो सीख रहे हैं उसका आखिर हमारे देश के साथ कोई संबंध है या नहीं ? आज देशकी जो अवश्यकताएँ हैं वे हमारे नेता हमको बताते तो रहते हैं और हम सुना भी करते हैं। लेकिन यहां वही अपना गणित, वही अंग्रेजी जिसका कोई उपयोग देश के जीवन में अभी हम नहीं देख रहे हैं। तो क्या हमारा समय बरबाद नहीं हो रहा है ? इस तरह हमारे अच्छे अच्छे लड़कों को जब वे कॉलेज में सीखा करते हैं तब बहुत मानसिक तकलीफ हुआ करती है। और ठीक

भी है। क्योंकि उनकी उम्र ऐसी है जब कि उनके मन में अनेक आकांक्षायें उठती हैं। अनेक कल्पनायें मनमें वे करते हैं, भविष्य के अनेक चित्र उनके मन के सामने उठ खड़े होते हैं। मैं फलाने के जैसा बनूंगा, जीवन में फलाना काम करूंगा, इतिहास की कई मिसालें उनके सामने होती हैं। उन मिसालों में से एकाध मिसाल मेरी भी होगी ऐसी वे उम्मीद करते हैं। इस तरह मन में वे कई तरह के मोदक चखा करते हैं। उनका वह मानसिक विहार, उनकी वह तत्त्वदृष्टि, चाहे उसमें से कुछ भी फलित न होता हो, मैं बहुत पवित्र मानता हूं।

मानव की विशेषता

इस तरह की मनोमय सृष्टि, ऐसी दिव्य कल्पना, आप चाहें इसे व्यर्थ कल्पना भी कह सकते हैं, जिसके जीवन में यह नहीं उठी उसमें और जानवर में कोई फरक नहीं है। मनुष्य का सिर भगवान ने आसमान में पैदा किया उसके पांव ही पृथ्वी पर होते हैं। कोई मनुष्य अगर दो हाथों और दो पाँवों पर चलना शुरू कर दे तो हमको वह जानवर की मूर्ति दिखेगी। हम कहेंगे कि मानवता इसमें से मिट गई। मानव की विशेषता यह है कि पांव उसके चाहे सृष्टि पर रहें उसका सिर आसमान में होना चाहिये। उसकी कल्पनाशक्ति जमीन के साथ नहीं होनी चाहिये। बल्कि वह निरंतर कुछ न कुछ विशाल कल्पनायें करता रहता है, दिल की उड़ान, ऊंचे विचार, और उस ध्येय के लिये जितनी भी कोशिश हो सके मैं करूंगा ऐसा मनुष्य विचार करता है। इस तरह अगर हरेक मनुष्य नहीं

करता है तो वह उसका कमनसीब है। जो विद्यार्थी कॉलेज आदि में पढ़ा करते हैं उनके मन में ऐसे विचार उठा करते है। उनमें से दस पांच विद्यार्थी ऐसे होते भी है कि जिनकी कल्पना सत्यसृष्टि में प्रकट होती है, आविर्भूत होती है।

विद्यार्थियों की सहजस्फूर्ति

जीवन का हमेशा ऐसा ही स्वरूप होता है। कोई भी चीज सबसे पहले मन में होती है। मनोमय संकल्प होता है। सकल्प से फिर आगे वाणी को प्रेरणा मिलती है। जो विचार मन में आता है वह मनुष्य बोलने लगता है, दूसरे से कहने लगता है। लोग पूछेगे कि अरे भाई, तू मन में विचार करता है और वाणी से भी बोलता है लेकिन तू काम क्या करता है? तो वह जवाब देगा कि भाई, इसके बाद ही काम होनेवाला है। पहले मन में संकल्प, उसके बाद वाक्स्फूर्ति, उसके बाद हाथ-पाव को प्रेरणा। यह सारी प्रेरणा की विधि है। इसी तरह से दुनिया में कार्य होता है। तो विद्यार्थियो के जीवन में भी कई संकल्प उठते हैं। वाणी भी उनकी चलती है। वे आपस में चर्चा किया करते हैं। बड़े बड़े नेताओं पर भी वे टीका करते हैं। वे जानते हैं कि हम कौन हैं और नेता कहां है। नेताओं की बुद्धि थोड़े ही हम में है? फिर भी वे निरपेक्ष विचार करते है। और जैसा मन में आता है वैसा बोल भी देते हैं। तो यह उनकी काव्यशक्ति है, यह उनकी सहजस्फूर्ति है, यह उनकी निरंकुश वृत्ति है। वह उनकी

सहज प्रतिभा है, यह उन्हें परमेश्वर की प्रेरणा होती है ऐसा ही मैं कहूंगा। यह उनकी तरुणता की स्फूर्ति है। उस स्फूर्ति में वे कुछ दिन बिताते हैं और उसके बाद कुछ कृति का आरंभ करते हैं। कृति का सारा नकशा इसी तरह होता है। विद्यार्थियों का और दूसरों का भी नकशा यही है। तो ये सारे विद्यार्थी अपने मन में सोचा करते हैं कि हम जो सीख रहे हैं उसका परिस्थिति से कोई संबंध नहीं है।

शिक्षण से अपेक्षा

खैर शिक्षण में तो दो चीजें देखनी होती हैं। एक तो यह कि जो भी शिक्षण दिया जायगा वह आज जनता के खर्च से दिया जाता है तो उसका प्रत्यक्ष व्यवहार में कुछ न कुछ उपयोग होना चाहिये। जो तालीम ले रहे हैं वे तालीम लेने के बाद ऐसे काबिल बनने चाहिये कि वे दुनिया की सेवा करने में आगे बढ़ेंगे। और जितना उन्होंने पाया था उससे दस गुना वापिस दिया ऐसा कह सकेंगे, यह हालत होनी चाहिये। जैसे कोई बीज खेत में एक सेर बोया जाता है तो उसमें से पच्चीस सेर उपजता है। वैसे ही विद्यार्थियों के चित्त में जो विचार बीज बोया गया है वह दस गुना बीस गुना बढ़ कर पैदा हो ऐसी उम्मीद की जाती है। शिक्षण में जो सिखाया जाता है उसका व्यवहार पर अनेक गुना परिणाम होना चाहिये। जितना खर्च किया होगा उससे बहुत अधिक फलित उसमें से निकलना चाहिये। यह एक आशा रखी जायगी।

शिक्षण से दूसरी आशा यह रखी जायगी कि जिनको शिक्षण दिया जाता है उनको उनकी उम्र के लिये, उनके निजी विकास के लिये जो भी जरूरी खुराक है वह उससे मिलनी चाहिये। वह तो हम वर्तमान शिक्षण मे देखते ही नहीं है। वहा तो सिर्फ स्मरणशक्ति का प्रयोग होता है, कुछ थोडा तर्क का उपयोग होता है। इसके सिवाय बुद्धि की दूसरा कोई शक्तिया है और उनका भी विकास करना होता है, उनके विकास के कई तरीके होते है, उसका भी एक शास्त्र बना हुआ है, उस शास्त्र का शिक्षण के साथ सबध है। इन सब चीजो का आज की शिक्षा पद्धति में कोई सबध नहीं आता। वास्तव मे मन की जितनी शक्तिया है वे ऋषियो ने हमको समझायी है। और अनुभव से देखेंगे तो हमको भी मालूम होगा कि जितनी शक्तिया इस दुनिया में हैं वे सारी मन मे होती हैं। "अनत हि मन अनता विश्वेदेवा" विश्वदेव अनत हैं। उसकी एक एक मनोवृत्ति और मानसिक शक्ति का विश्लेषण करते है तो उसके कई गुणों क हमको आभास आता है। आत्मा सच्चिदानद है और उसके सान्निध्य से मन में अनत गुणो की छाया प्रतिबिंबित होती है। अनत गुण मन मे प्रकाशित होते है। हमने कई महापुरुष ऐसे देखे है कि उनके गुणो की अगर गिनती करें तो कोई पार नहीं आता। सैकडों गुणो का नाम लेना पडता है और कहना पडता है कि इस महापुरुष में इतने गुण थे।

शिक्षण की आत्मा

इस तरह के गुणो के विकास के लिये बहुत अवकाश है। और मन मे ऐसी अनेक शक्तिया मौजूद है। लेकिन उन शक्तियो के विकास का कोई कार्यक्रम हमारे शिक्षण में है ही नहीं। हम लोगो को अनुभवी पुरुषो ने सिखाया कि मुख्य शिक्षण तो यही लेना है कि हम को अपने आप को अपने शरीर से भिन्न, अपने मन और बुद्धि से भी भिन्न पहचानना चाहिये। यह अपनी निज की पहचान सब गुणो का राजा है। यह पहचान जहा हुई जहा अपना अस्तित्व, सब इंद्रियो और बुद्धि, मन आदि से भिन्न अपने को महसूस हुआ वहा हमने ऐसा महान अनुभव हासिल किया कि जिसके द्वारा बाकी सारे गुणों का विकास हम कर सकते है। ना उसका तो हमारे शिक्षण मे कोई पता ही नहीं है। शरीर से अपने को भिन्न पहचानना, मानसिक विकारो से अपने को भिन्न पहचानना, मन मे अगर कोई कल्पना आई तो उसको एकदम सो प्रकट न करना, उसका वहा विकास होने देना, उसकी वहा परीक्षा करना, कुछ धीरज रखना, उसका विश्लेषण करना, उसमे अगर ऐसा कोई दीखा कि जो काम का नहीं है तो उस अश को निकाल देना, और इस तरह अपनी मनोवृत्ति का विश्लेषण करके जो अच्छा अश उसमे से मिलेगा वही दुनिया के सामने रखना, यह सारा मानसिक विश्लेषण का और चित्त के विकास का एक महान् कार्य है। यह कार्य अगर शिक्षण में नहीं होता है तो शिक्षण का

कोई अर्थ ही नहीं है। शिक्षण मे मुख्य वस्तु यह देखनी चाहिये कि जो वहा शिक्षण ले रहा है उसके गुणों का विकास किस तरह हो रहा है और वह अपने निज को अपनी परिस्थिति से और दहादिक साधनों से भिन्न पहचानता है या नही, उसका काबू उन सब पर है या नहीं । प्राचीन काल से उपनिषदों मे हम देखते है कि ऐसा माना जाता था कि गुरु के पास जा कर अगर विद्यार्थी विद्या हासिल कर लेता है लेकिन व्रत में संपन्न नहीं है तो विद्यास्नातक भले ही कहलाये लेकिन वह पूर्ण स्नातक नहीं हो सकता। उसको विद्यास्नातक होने के साथ साथ व्रतस्नातक भी होना चाहिये। अर्थात् कुछ व्रतों के पालन मे उसको कामयाब होना चाहिये। उसे अपने निज पर काबू पाना चाहिये। जिस घोड़े पर हम सवार हैं उस घोड़े को किस तरह चलाना, उस घोड़े के काबू मे न जाना बल्कि उसको अपने काबू मे रखना, और उस घोडे मे अच्छी तरह काम किस तरह लेना यह सारी जो कला है, आत्मदमन की कला, आत्मनियमन की, आत्म के उपयोग की, वह कला सीखना यही शिक्षण का एक महत्त्व का उद्देश्य होना चााहिये। इसी को व्रतस्नातक कहते हैं।

व्रतस्नातक की वीर वृत्ति

ऐसे कई व्रत हैं जिनको हमें ठीक तरह समझ लेना चाहिये, जिनका पालन करने की शक्ति हमें हासिल कर लेनी चाहिये और उस कसौटी पर अपने को कस लेना चाहिये। इस तरह विद्यार्थी

जब कसा हुआ तैयार होता है तब वह आगामी सेवा के लिये कारगर साबित होता है, उत्तम नागरिक बनता है। वह जहां दुनिया में प्रवेश करता है वहां वीरवृत्ति से, आत्म विश्वास से प्रवेश करता है। आज विद्यार्थी जब कॉलेज के बाहर पड़ता है तो उसकी आंख के सामने अंधेरा होता है। किसी तरह कहीं प्रवेश पा लेता है। लेकिन वहां उसको जाना है वहीं वह जाता है और अपने मन की इच्छा के मुताबिक ही जाता है ऐसी बात नहीं होती। जहां वह फेंका है वहां वह जाता है। इस तरह सारा नसीब का खेल होता है। लेकिन जो विद्यार्थी उत्तम प्रकार से व्रतसंपन्न हो गया और जिसने अपनी आत्मा का दमन कि उस पर विजय प्राप्त कीया और जिसका विकास अच्छा हुआ जिसने व्यवहारोपयोगी विद्या संपादन की ऐसा जो विद्यार्थी होगा वह जब दुनिया में प्रवेश करेगा तब सिर झुका करके नहीं बल्कि सब के सामने छाती करके पूर्ण आत्म-विश्वास से चलेगा। और " नमयतीव गतिः धरियीन " उसकी गति से यह धरती दब जायगी। ऐसे वीरावेश में वह दुनिया में प्रवेश करेगा।

विनय संपन्नता ज्ञान का परिणाम

इसका अर्थ यह नहीं है कि वह उद्धत बनेगा। उसमें नम्रता भी रहेगी। क्योंकि जो मनुष्य ज्ञान हासिल कर चुका वह यह महसूस करता है कि ज्ञान कितना अनंत है और उसमें से मुझे कितना छोटा-सा हिस्सा मिला है। इसलिये सच्चा ज्ञानी और सच्ची विद्या पाया हुआ मनुष्य जितना विनयसंपन्न होगा उतना विनयसंपन्न वह

नहीं होगा जिसने विद्या नहीं पाई है। क्योंकि विद्या का दर्शन उसको नहीं हुआ है। जिसने विद्या के सागर का दर्शन किया उसके. ध्यान मे आता है कि ज्ञान का न कोई पार है न अंत है और मुझे जो ज्ञान हासिल हुआ है वह एक अंशमात्र है। इसलिये सारी जिंदगी भर मुझे ज्ञान की खोज जारी रखनी चाहिये। मैने जो विद्या पाई वह तो केवल आरम्भमात्र है, सरस्वती के स्थानमें वह थोड़ासा प्रवेशमात्र है। इसलिये मुझे जिंदगी के आखिर तक अपनी विद्या बढाते ही जाना चाहिये। फिर भी दुनिया की विद्या इतनी अपार बची रहेगी कि मै केवल एक अंश ही हासिल कर सकूगा। इस चीज का उसको पूरा भान होगा इसलिये वह हमेशा नम्र रहेगा। इसीलिये हम लोगो ने विद्वान मनुष्य के लिये विनीत शब्द बनाया और "प्रजाना विनयाधानात्" प्रजा को विनयसंपन्न बनाना चाहिये ऐसा कहा गया है। याने शिक्षण के लिये विनय शब्द का प्रयोग हुआ। यो विनयसंपन्न तो वह होगा ही। अगर वैसा वह नहीं है तो वह विद्या प्राप्त ही नहीं है। इसलिये नम्रता का होना अत्यंत. आवश्यक है।

धृति की आवश्यकता

लेकिन नम्रता के साथ साथ दृढ़निश्चय, आत्मविश्वास, धैर्य, निर्भयता इत्यादि सब उसमें होगा। याने धृति उसमें होगी। बुद्धि के साथ धृति भी होनी चाहिये वह उसमें होगी और जहा वह संसार मे. प्रवेश करेगा वहां जैसे कोई विजयी वीर प्रवेश करता है उस वृत्ति से.

प्रवेश करेगा। वेदों में एक मंत्र है । वेदाध्ययन की समाप्ति पर वह बोला जाता है । "मह्यं नमंताम प्रदिशश्चसः" ये चारों दिशाएं मेरे सामने झुकेंगी, ऐसा वह मंत्र है। इस तरह की विद्या अगर मनुष्य प्राप्त करता है तो उस विद्या से वह सारी दुनिया की सेवा करता है। उसका जीवन भारभूत नहीं होता। ऐसी विद्या प्राप्त करते समय भी उसके मन में पूरा समाधान रहता है। विद्या की खूबी ही यह है। जैसे अन्न खाने में आज अन्न खाया और दो दिन के बाद तृप्ति हुई ऐसा नहीं होता। जब खाया तभी उसका मजा मालूम हो गया। तृप्ति का और तुष्टि का अनुभव उसी क्षण हुआ। वैसे ही ज्ञान का होता है। जहां सच्चा ज्ञान मिल रहा है वहां "चेहरा भी चमक दिखलाता है।" विद्यार्थी को अपार आनंद होता है। और उससे उसकी ज्ञान की तृष्णा बढ़ती जाती है। ज्ञानप्राप्ति में मेरा समय बेकार जा रहा है ऐसा उसको आभास ही नहीं होता। लेकिन अभी इस तरह का ज्ञान हासिल नहीं होता है इसलिए समय सारा बेकार जाता है। इसलिये ज्ञान के नाम पर जो मिलता है उसमें कोई रस की अनुभूति नहीं होती। दिलचस्पी नहीं बढ़ती। और उत्तरोत्तर ज्ञानतृष्णा नहीं बढ़ती। इसलिये कब यह कॉलेज खतम होगा और कब मैं उसमें से छूट जाऊंगा ऐसा लगता है। वास्तव में जिसने ज्ञान को दर असल चख लिया वह तो निरंतर ज्ञान की साधना करता ही रहेगा। उपनिषदों ने हमें यह समझाया है कि गृहस्थो तुम जब गृहस्थ बनोगे तो ब्रह्मचर्याश्रम में जब थे उससे आगे बढ़ रहे हो।

तुम्हारा एक कदम आगे है। तुम्हारी उन्नति हो रही है। तो जो भी सेवा का काम वहां होगा वह तो करोगे ही लेकिन साथ साथ सारी दुनिया को धार्मिक बनाओगे। और "शुचौ देशे स्वाध्याय अधीयानः" अपने घर में पवित्र स्थान बना करके वहां निरंतर अध्ययन करोगे। इस तरह अध्ययन की अपेक्षा ब्रह्मचर्य के बाद याने विद्याध्ययन की समाप्ति जिसे कहते हैं उसके बाद अपेक्षित है। सारी जिंदगी में अध्ययन होना चाहिये ऐसा हमें ऋषियों ने समझाया है।

स्वाध्याय प्रवचने च

जिसको एक बार अध्ययन का स्वाद मिला है वह उस चीज को कभी छोड ही नहीं सकता। ऋषि कहता है कि हरेक काम करो लेकिन साथ साथ "स्वाध्याय प्रवचने च", "ऋतं स्वाध्याय प्रवचने च," "सत्यं च स्वाध्याय प्रवचने च" सत्य बोलो तो उसके साथ स्वाध्याय प्रवचन करो। "तपश्च स्वाध्याय प्रवचने च" तप करो तो उसके साथ स्वाध्याय प्रवचन करो, और जनसेवा करोगे तो उसके साथ स्वाध्याय प्रवचन करो। और अग्नि की सेवा करोगे तो उसेक साथ स्वाध्याय प्रवचन करो। जितने भी काम करो उनके साथ गृहस्थाश्रम में भी स्वाध्याय प्रवचन चलना ही चाहिये, ऐसी अपेक्षा होती है। और वह ठीक भी है। उसमें कोई ऐसी चीज नहीं है जो पूरी नहीं ~~की जा सकती। क्योंकि जितने वह रस चखा~~ विद्याभ्यास के जमाने में, वह रस उत्तरोत्तर वृद्धिंगत होता है।

फिर जहां वह नागरिक बनता है वहां कई तरह के अभ्यास भी वह करता है ।

अध्ययन की हमारी परंपरा

लेकिन आज हम देखते हैं कि अध्ययन का तो हमारे देश में अभाव-सा हो गया है। यद्यपि यह देश प्राचीन है और यहां अध्ययन पुराने जमाने से निरंतर चला आ रहा है, अध्ययन की एक अखंड परंपरा परसों तक यहां चल रही थी, और जिस जमाने में बाकी दुनिया के सारे लोग घोर अंधकार में पड़े थे और विद्या से परिचित नहीं थे, उस जमाने में यहां विद्या थी। और यहा के लोग बड़ी फजर उठते थे। "अनुब्रुवाणः अध्येति न स्वप्ने" बड़ी फजर में सोते नहीं रहते थे, और अध्ययन करते थे। इस तरह से अध्ययन की परंपरा अतिप्राचीन काल से यहां चली आई है। फिर भी अब हम देख रहे हैं कि किसी न किसी विषय का अच्छा अध्ययन किया हुआ मनुष्य मुश्किल से यहां मिलता है।

हमारी समस्याओं का हल शिक्षा प्रणाली में

हमने स्वराज्य हासिल कर लिया है। स्वराज्य में कई तरह की जिम्मेवारियां हम पर आ पड़ी हैं। उन सारी जिम्मेवारियों को तभी अच्छी तरह निभा सकते हैं जब कि हरेक विद्या में, हरेक तरह की शाखा में प्रवीण लोग हममें हों, और निरंतर कुछ न कुछ अध्ययन करते रहें। तभी हमारे देश का काम भी आगे बढ़नेवाला है। लेकिन अध्ययन करनेवाले लोग मैं बहुत कम देखता हूं, उसका सारा

कारण इस शिक्षा पद्धति में है। क्योंकि वहां जब मनुष्य दाखिल होता है तो दस पांच साल सीखने के बाद उसका सारा रस शुष्क हो जाता है। उसकी प्राणशक्ति क्षीण होती है। और मानसिक शक्ति भी बढ़ती नहीं है। इंद्रियों की शक्ति क्षीण होती है। आप देखते हैं कि स्कूल में जाने के कारण आंख की शक्ति क्षीण हो गई शरीर शक्ति क्षीण हो गई, मानसिक शक्ति भी जीर्ण हो गई, बुद्धि की कई शक्तियों का विकास ही नहीं हुआ और सब से बड़ी बात यह कि प्राणहीनता आ गई है। आत्मा का भान नहीं, देह से हम भिन्न हैं इसका पता नहीं, अपने साधनों पर काबू नहीं तो क्या शिक्षण मिलता है?

हमारा प्राचीन वैभव

मैं जब यह वर्णन करता हूं तो मुझे खुशी नहीं हो रही है। मुझे बहुत दुख होता है कि हमारे इस देश में इतनी सारी विद्या बढ़ी हुई थी वहां आज क्या है। रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि "प्रथम सामरव तव तपोवने, प्रथम प्रचारित तव वन गहने, ज्ञान धर्म कत काव्य काहिनी, अयी भुवन मनमोहिनी"। ऐ भुवन के मन को मोहन करनेवाली माता, यहां सूर्योदय पहले हुआ था और यहां सामगायन पहले हुआ था, और यहां की विद्या की किरणें सारी दुनिया में फैली हुई थीं। ऐसा स्मरण जहां हम अपनी मातृभूमि के लिये करते हैं वहां जो कुछ चल रहा है उसका वर्णन करने में मुझे सुख नहीं होता है बल्कि अत्यंत दुख होता है।

स्वराज्य के बाद शिक्षा पद्धति फौरन बदलनी चाहिये

स्वराज्य के बाद पुरानी शिक्षण पद्धति वैसी ही कैसे जारी है यह बात मेरी समझ मे नहीं आती। स्वराज्य आने के बाद जो चीजें पहले चलतीं थीं उनमें से बहुत सी बाद भी चलती रहेंगी यह मै जानता हू। लेकिन शिक्षण भी चलता रहेगा यह मेरी कल्पना में भी नहीं था। मै यही मानता था कि जहा स्वराज्य आयेगा वहा शिक्षण फौरन बदल जायगा। शिक्षण अगर स्वराज्य आने के बाद भी नहीं बदलता है तो उस स्वराज्य का कोई मतलब ही नहीं होता है। इसका मतलब यह हुआ कि जिस शिक्षा प्रणाली को हम बरसो तक कोसते रहे और जिसने हमारा नुकसान किया ऐसा सब लोग बोलते है, और जो शिक्षा पद्धति हमें गुलामी में रखने के उद्देश्य से न भी हो लेकिन जिसका परिणाम यही निकला कि हम अच्छे गुलाम बने, इस तरह से तैयार की गई उस शिक्षा पद्धति को हम जारी रख सकते हैं, उसको सहन कर सकते है, इसका मतलब यही होता है कि हम इस विषय मे सोचते नहीं है। हमारे सामने दूसरी कई समस्याये है। उन समस्याओं ने हमारा सारा दिमाग व्यस्त कर दिया है। और उन समस्याओ के हल मे हम मशगूल है। हमको कुछ सूझता ही नहीं हैं। लेकिन मैं कहता हूं कि जो हमारी कठिन समस्याएं है वे भी तभी हल होगी जब हमारी शिक्षा में हम फरक करेंगे।

तो आप नागरिकों से मैं कहता हू कि आप सब को एक आवाज से कहना चाहिये कि यह शिक्षा हमें नहीं चाहिये, इसमें जरूर परिवर्तन होना चाहिये। यही बात मैं आप लोगो से कहना चाहता था।

सिकदराबाद
५ ४ ५ १

तीसरा दिन

: ३४ :

हैद्राबाद हिंदुस्तान की समस्याओं का प्रतिनिधि

आज पैदल यात्रा करते हुये करीब एक महीना हो रहा है। अभी मैं आप के गांव आ पहुंचा हूं और कल परमेश्वर की कृपा से शिव-रामपल्ली जाना होगा। आप लोग जानते हैं कि वहां सर्वोदय-संमेलन हो रहा है। उसके लिये हम पैदल निकल पड़े। आप लोगों में से भी बहुत सारे वहां पहुंच जायेंगे और जो कुछ वहां पर प्रार्थना आदि में सुनने का अवसर मिलेगा उसमें शरीक होंगे ऐसी मैं उम्मीद करता हूं।

आज सुबह हम पांच बजे सिकंदराबाद से निकले और यहां पैदल आये तो बीच में लोगों ने काफी प्रेम हम पर बरसाया। हम नहीं जानते कि उस प्रेम के लायक हम कब बनेंगे। उसके लिये अभी तो हम इतना ही कर सकते हैं कि आप लोगों का शुक्रिया मानें।

हरिजनों के छात्रालय अलग न हों

लेकिन उस में एक घटना हुई जिसका मुझे कुछ रंज रहा। वह मैं आप लोगों के सामने रख देना चाहता हूं। और वहीं से मुझे जो कुछ कहना है उसका आरंभ भी हो जाता है। हुआ यह कि,

बीच में हम को रोक लिया गया और हम एक हरिजन छात्रालय में ले जाए गये। वहां पर कोई बीस पच्चीस हरिजन छात्र खड़े थे उनकी मुलाकात हुई। हम ने पूछा कि क्या यहां हरिजनों के अलावा और भी कोई दूसरे लड़के रहते हैं? तो जवाब मिला कि नहीं सिर्फ हरिजन ही यहां रहते हैं। वह सुन कर मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने वहां भी बताया और वही बातें यहां रखना चाहता हूं कि इस तरह हरिजनों के अलग छात्रालय चलाना, यह कोई अस्पृश्यता निकालने का तरीका नहीं हो सकता, बल्कि वह तो अस्पृश्यता टिकाने का तरीका हो सकता है। जब पहले ये छात्रालय शुरू हुये तब इनकी जरूरत भी रही होगी उस हालत में, उसकी बहस में मैं नहीं पड़ता। लेकिन आज जो स्थिति है उस स्थिति में मेरा मानना है कि हरिजनों के अलग से छात्रालय नहीं चलने चाहिये। बल्कि सब छात्रालयों में उनको जगह देनी चाहिये। उनकी तालीम के लिये जो भी सहूलियतें दी जा सकती हैं वे जरूर दी जानी चाहिये। लेकिन किसी तरह से उनको अलग जाति के प्राणी समझ करके रखना उचित नहीं है। इन दिनों अगर यह तरीका हम अख्तियार करेंगे तो उससे हमारा मकसद नहीं हासिल होगा बल्कि उलटी दिशा में हम जायेंगे ऐसा मुझे लगता है। मैंने तो सुना कि यह हालत इस एक ही छात्रालय की नहीं है बल्कि सारे राज्य में ऐसा ही कुछ चला है और इस तरह अलग अलग छात्रालय रखने से हरिजनों की सेवा होती है, ऐसा कुछ ख्याल है। यह मैं जरूर समझ सकता हूं कि जिन्होंने यह शुरू किया होगा उन्होंने हरिजन छात्रों

की सेवा के ही खयाल से ऐसा किया है, और छूत अछूतभाव मिटाने की उनकी मंशा भी है यह मैं मानता हूं। लेकिन बावजूद उनकी मंशा के और उनके सद्‌भाव के यह तरीका ऐसा नहीं है कि जिसमें हमारा सारा समाज एक रस बन जायगा।

केवल इन्सान बनें

हमको जो काम करना है वह यही करना है कि हिंदुस्तान का सारा समाज एक रस बन जाय। इतने बड़े समाज में भिन्न भिन्न विभाग हो ही सकते हैं, इस में कोई बात नहीं है। कई धंधे रहते हैं। उनके करनेवालों के मानसिक संस्कार अलग अलग होते हैं। यह सारी विविधता समाज में रहेगी। लेकिन विविधता के रहते हुए भी अंदर से एकता महसूस होनी चाहिये जिससे सारा समाज एक रस प्रतीत हो। आज कल तो यहां तक हालत है कि राज्यों के चुनावों में जहां कोई जाति और धर्म का सवाल होना नहीं चाहिये वहां भी चुनाव में जब लोग खड़े किये जाते हैं तब उनकी जाति और धर्म देखे जाते हैं। और जाति और धर्म का खयाल करके चुनाव के लिये आदमियों को खड़ा करना पड़ता है। यह सारी दुर्दशा है। इसमें से हमें मुक्त होना है यह ध्यान में रहना चाहिये। और यह तभी बन सकता है जब हम हरेक हिंदुस्तानी को सिर्फ हिंदुस्तानी के नाते से देखेंगे। इतना ही नहीं बल्कि वह एक इन्सान है इस खयाल से देखेंगे तभी यहां का समाज एक रस होगा और हिंदुस्तान

के जरिये दुनिया में जो बड़ा काम होनेवाला है उसकी पात्रता हमें हासिल होगी।

परमेश्वर की मंशा

जहां मैंने हिंदुस्तान के हाथ से होनेवाले बड़े काम का जिक्र किया वहा आप लोग सुनना चाहेंगे कि वह बड़ा काम कौनसा है। मैं कहता हूं कि हिंदुस्तान के लिये परमेश्वर ने एक बहुत ही भारी काम सौंप रखा है। अगर ऐसा उसका विचार नहीं होता तो हम जैसे टूटे फूटे लोगों को अहिंसा के तरीके से आगे बढ़ाना और उनको एक बडी भारी हुकूमत के पंजे से छुड़ाना और उनके हाथ में हिंदुस्तान की सत्ता देना यह सारा नाटक परमेश्वरने किस लिये किया? यह उसने इसलिये किया है कि उसकी मंशा है कि हिंदुस्तान के जरिये एक विचार जिस की सारी दुनिया को आज भूख है, फैले।

सर्वोदय से स्फूर्ति

आप लोगों को इतना तो मालूम है कि यहां हम लोगों ने गांधीजी का एक शब्द मृत्यु के पीछे ले लिया है। उनका वह शब्द है सर्वोदय। अब वह शब्द हिंदुस्तान भर में चल पड़ा है। हिंदुस्तान के बाहर के लोग भी उस समाज में दाखिल होना चाहते हैं। और यहा तक कहते हैं कि हमें कोई ऐसा चिह्न बताओ कि उसके रखने से हम सर्वोदय के सेवक के तौर पर जाहिर होंगे। हम अहिंसा के प्रेमी हैं इसका इजहार होगा। इस तरह हिंदुस्तान

के बाहर के लोग पूछते हैं। याने सारी दुनिया में एक छोटीसी जमात भी क्यों न हो ऐसी तैयार हो रही है जो कि अपने को एक ही कौम एक ही हुकूमत एक ही जमात मानती है और जो अहिंसा में ही दुनियां का भला और छुटकारा देखती है। यह जमात आज जरूर छोटी है। लेकिन आगे वह बढ़नेवाली है। इसलिये बढ़नेवाली है कि दिन ब दिन विज्ञान की प्रगति होनेवाली है।

विज्ञान चाहते हो या अहिंसा

जब कोई मुझे पूछते हैं कि क्या दुनियां में अहिंसा फैलेगी? अहिंसा के लिये दुनिया में मौका है? तो मैं कहता हूं कि अहिंसा के लिये ही दुनिया में मौका है। और इसका सबूत ही यह है कि दुनिया पुराने जमाने की हालत में रहना नहीं चाहती, बल्कि विज्ञान की प्रगति करना चाहती है। जहां विज्ञान की प्रगति होती है वहां सारी दुनिया, सारा समाज, एक बन जाता है। और ऐसी एक शक्ति हाथ में आती है कि जिसका जोड़ हम अहिंसा के साथ अगर न करें तो मनुष्य की हस्ती ही खतरे में आ जाती है। तो अब मनुष्य के सामने हिंसा को पसंद करना या अहिंसा को पसंद करना यह सवाल नहीं है। बल्कि आप विज्ञान को पसंद करते हैं या नहीं सवाल यह है। अगर आप विज्ञान को पसंद करते हैं तो आपको हिंसा छोड़नी ही होगी। और अगर आप हिंसा को पसंद करते हैं तो आपको विज्ञान को छोड़ना

होगा। दोनों एक साथ नहीं चलेंगे। अगर ये दोनो बढ़ते हैं तो दोनों मिल कर मानव जाति का खात्मा करेंगे। इसलिये अगर हिंसा को चाहते हैं तो विज्ञान की प्रगति रोको, फिर हिंसा कुछ न कुछ चलेगी। और अगर विज्ञान की प्रगति को रोकना नहीं चाहते हो और बढ़ाना चाहते हो तो हिंसा को छोड़ो। याने हिंसा या अहिंसा यह सवाल नहीं है बल्कि विज्ञान चाहते हो या नहीं यह सवाल है।

विज्ञान अनिवार्य है

मैं तो विज्ञान को चाहता हूं, उसमे विश्वास रखता हूं। विज्ञान से ही मानव का जीवन प्रेममय, परस्पर सहकार मय हो सकता है, ज्ञानमय बन सकता है, उसके विचार का लेव्हल भी ऊंचा हो सकता है। यह सारा विज्ञान से होता है। इसलिये विज्ञान की प्रगति को मैं रोकना नहीं चाहता बल्कि उसको बढ़ाना चाहता हूं। इसीलिये जानता हूं कि उसकी तरक्की के साथ हिंसा चलनेवाली नहीं है। तो हिंसा को छोड़ना ही होगा। ऐसा संकल्प विज्ञान को बढ़ाने के लिये अवश्य है। अगर ऐसा संकल्प मैं नहीं करता हूं तो विज्ञान का ही शत्रु बन जाता हूं। आज दुनियां सायन्स को छोडना नहीं चाहती इससे जो लाभ हैं वह जाहिर हैं।

विज्ञानवालों की राय

इसलिये सारे समाज में अभी एक ऐसा विचार फैला है, हिंदुस्तान में और हिंदुस्तान के बाहर, कि अगर मानवों के मसलों

को हल करने का कोई अहिंसक तरीका सूझे तो जरूर उसको खोजना चाहिये और हांसिल कर लेना चाहिये। तो विज्ञान के लोगों को लगता है कि यह तरीका शायद गांधीजी ने जो प्रयोग हिंदुस्तान में किया उसमें से दुनियां को भी मिले। तो दुनियां इस आशा से हिंदुस्तान की तरफ देखती है।

हैद्राबाद हिंदुस्तान की प्रतिमा

और आज जब कि मैं हैद्राबाद में आया हूं तो मुझे यह भी कहने की इच्छा होती है कि यह आपका छोटासा हैद्राबाद सारे हिंदुस्तान का एक नमूना है। क्योंकि हिंदुस्तान में जितनी विविधतायें हैं वे सारी यहां मौजूद हैं। यहीं हिंदू और मुसलमान काफी तादाद में हैं, अनेक धर्मवाले भी यहां इकट्ठे हो गये हैं। यहां विविध भाषायें विकसित हो रही हैं। इसलिये यह छोटा सा राज्य और यह छोटा सा शहर हिंदुस्तान की एक प्रतिमा या हिंदुस्तान का एक छोटा सा रूप है। तो जो सवाल हम यहां हल करेंगे उससे सारे हिंदुस्तान का सवाल हल करने की कुंजी मिल जायगी और सारी दुनिया के सवालों को भी हल करने की कुंजी मिलेगी। तो हैद्राबाद वालों की जिम्मेवारी समझाने के लिये मैंने प्रास्ताविक तौर पर ये कुछ शब्द कहे हैं। आप लोगों को मैं जागृत कर देना चाहता हूं। आप यह मत समझिये कि हम एक छोटे शहर के रहने वाले हैं। बल्कि आप यह ध्यान में रखिये कि आप ऐसे शहर के नागरिक हैं कि जो सारे हिंदुस्तान का प्रतिनिधित्व करता है। यहां अगर आप एक अच्छाई या भलाई का

नमूना बता सकें जिससे कि यहा की समस्यायें हल हुई तो आप समझ लीजिये कि वह सारे हिंदुस्तान की एक बडी भारी खिदमत जैसी होगी। यह एक उत्तम मौका आप लोगो को मिला है। यहाँ आप की हुकूमत कायम हुई है।

पुराने अनुभव का लाभ

कुछ लोगो ने कहा कि यहा के कार्यकर्ताओं में अनुभव की कमी है। तो मैंने कहा कि भाई मैं तो उलटा मानता हू। याने हिंदुस्तान मे कॉंग्रेस ने साठ साल तक अनुभव लिया वह तो यहा के लोगों को मुफ्त में मिला है। और उसके साथ साथ जो उन्होंने अपना अनुभव हासिल किया होगा वह और। इस तरह से यहा के लोगों को ज्यादा अनुभव है ऐसा समझना चाहिये। जो लडका एक विद्वान पिता के घर मे पैदा होता है उसको पिता की विद्या तो पहले मे ही प्राप्त होती है और उसके साथ साथ वह अपनी विद्या भी बढ़ाता है तो वह पिता से भी बढकर विद्वान होता है। यही हालत हैद्राबाद की है। हैद्राबाद वाले हिंदुस्तान को राह दिखा सकते हैं।

हैद्राबाद की विशेषताऍं

हैद्राबाद राज्य में मैं अभी पैदल चलता हुआ आया तो रास्ते में ऐसे कई गॉंव मिले कि जिनको छोडने की इच्छा नहीं होती थी। तो यहां की मानवता किसी भी दूसरी जगह की मानवता से कम नहीं थी और यहां प्रेमभाव भरा हुआ मैंने पाया।

अब वह एक ऐसा वातावरण था, वह एक ऐसी हवा थी कि जहां अगर सेवकगण रह जायं तो एक स्वावलंबी स्वराज्य जैसी वस्तु हम दिखा सकते हैं। आपका यह मुल्क पिछड़ा हुआ है ऐसा कहते हैं। अच्छी सड़कें यहां नहीं हैं ऐसा कहते हैं, बात तो ठीक है। लेकिन यह जो पिछड़ी हुई बात है उसी का अगर हम लाभ उठायें तो आगे बढ़ सकते हैं। क्योंकि जहां ये सड़कें वगैरह आती हैं वहां दूसरी सहूलियतें तो हो जाती हैं पर उसके साथ साथ दुनियां की कई बुराइयां भी वहां आ पहुंचती है। तो वह बुराइयां अभी तक कई गाँवों में नहीं पहुंची हैं। ऐसे गाँवों में अगर हमारे कार्यकर्ता रह जायं और उस उस गाँव के लिये सोचने लगें तो एक एक गांव में एक एक रामराज्य स्थापित कर सकते हैं। यह स्थिति कई हिस्से में मैंने देखी।

फिर मैंने सोचा यहां अनेक जमातें इकट्ठी होती हैं और अनेक भाषाएं इकट्ठी होती हैं। तो ये लोग जरा अगर कोशिश करेंगे तो सारे हिंदुस्तान के अगुआ बन सकते हैं। और ऐसी कोशिश यहां क्यों नहीं होगी? अगर यह ठीक तरह से अनुभव होगा और ध्यान में आ जाय कि हम इस तरह अगर करते हैं तथा सारे हिंदुस्तान को एक उत्तम मार्ग बताते हैं और यहां बैठे बैठे हिंदुस्तान की सेवा करते हैं, तो यहां के छोटे छोटे कार्यकर्ता अपने को छोटे नहीं मानेंगे बल्कि महसूस करेंगे कि हम तो परमेश्वर का कार्य करनेवाले उसके भक्तगण हैं। फिर वे अपने सारे भेद भूल

जायेंगे। और जनता की सेवा में लग जायेंगे। तो उससे उनके चित्त का समाधान होगा, हैद्राबाद राज्य को लाभ होगा और उसके साथ साथ सारे देश को लाभ होगा।

सब भाषाओं के लिये एक लिपि बनाइये

देखिये यहां पर कितनी भाषायें हैं। मराठी भाषा है, कन्नड है, तेलुगु है, उर्दू है, हिंदी है, ये पांच भाषायें यहां चलती हैं। अगर आप एक दूसरे की भाषा सीखने की जरा कोशिश करें और उसके लिये लिपि एक बना दें तो आप देखेंगे कि हिंदुस्तान का मसला आप हल कर सकते हैं। नागरी लिपि में उर्दू लिखी जाय। हिंदी और मराठी नागरी में लिखी ही जाती है। कन्नड और तेलुगु भी नागरी में लिखी जाय। यह अगर आप आरंभ करें तो हिंदुस्तान का एक बड़ा भारी मसला हल हो जाता है। हिंदुस्तान में जो दूसरी जबानें हैं वे एक दूसरी से बहुत अलग नहीं हैं। लेकिन उनकी लिपियां अलग हैं। और ये दीवाल की तरह खडी होती हैं और भाषाओं का अध्ययन करने की हिम्मत नहीं होती है। मैं तो हिंदुस्तान की बहुत सारी लिपियां सीख चुका और भाषाएं भी सीख चुका। तो अपने अनुभव से मैं कहता हूं कि एक एक भाषा सीखने में मुझे बहुत तकलीफ हुई है। आंख को तकलीफ हुई है। तो अगर आप नागरी लिपि में ये सारी जबानें लिखते हैं और कुछ किताबें भी तैयार करते हैं और आप की स्टेट अगर इस का जिम्मा उठाती है या कोई परोपकारी मंडली ऐसी पुस्तकें

के प्रकाशन का जिम्मा उठाती है, तो समझ लीजिये कि एक लिपि का एक बड़ा भारी विचार आप हिंदुस्तान को देते हैं।

इससे यह होगा कि उर्दू अगर नागरी में लिखी जाने लगी तो हिंदी पर उर्दू का बहुत असर होगा और हिंदी ठीक रास्ते पर रहेगी। मेरे कहने का यह मतलब नहीं है कि कन्नड या उर्दू या तेलुगु लिपि न चले, इन लिपियों में भी खूबियां हैं। इसलिये ये भी चलें। लेकिन इनके साथ साथ अगर ये सारी भाषाओं नागरी में लिखी जाती हैं तो अच्छी हिंदुस्तानी कैसी हो सकती है इसका नमूना आपने पेश कर ही दिया। सारे हिंदुस्तान को एक कौमी जबान चाहिये यह सब लोग मानते हैं। लेकिन उस कौमी जबान का रूप क्या होना चाहिये इस विषय में काफी बहस हुआ करती है। यह सारी बहस खतम हो जायगी और यहां आप ऐसी खूबसूरत हिंदुस्तानी सारे राष्ट्र के लिये देंगे कि जिसको बाकी के सारे लोग सहज ही उठा लेंगे। यहां उर्दू तो पहले से ही चलती है और उसकी काफी प्रगति भी हुई है। वही उर्दू अगर थोड़ी आसान करके नागरी लिपि में लिखी जाय तो राष्ट्रभाषा के लिये बड़ा भारी कारण आप देंगे और हिंदुस्तान का मसला हल कर सकेंगे।

ऐसा आप करेंगे तो यहां की जमातें एक दूसरे की भाषा प्रेमभाव से जल्दी सीख लेंगी। यह तो सहज मैंने आप के सामने विचार रख दिया। इस पर से आप के ध्यान में आ जायगा कि

हिंदुस्तान के मसले आप किस तरह आसानी से हल कर सकते है।

खादी के लिये अच्छा क्षेत्र

आप देखेंगे कि इस हैद्राबाद राज्य में खादी के लिये जितनी सहूलियतें हैं, जनता में उसके लिये जो शक्यताऐं है, उतनी हिंदुस्तान के दूसरे हिस्से मे नहीं है। तो अगर आप रचनात्मक काम करनेवाले इस काम मे लग जाय और हरेक को कातना धुनना सिखा दे तो जो परपरा यहा मौजूद है उसका पूरा लाभ मिलेगा और आप देखेंगे कि यहां खादी पनपेगी, यहा ग्रामोद्योग पनपेंगे।

अस्पृश्यता यहा कम है

आप यह भी देखेंगे कि यहा की जनता मे छूत-अछूत का भाव इतना नहीं है जितना हिंदुस्तान की दूसरी जगहों मे है। उसके कई कारण है। मुख्य कारण तो यही है कि यहा की अनेक जमातें और कौमे किसी भी कारण से कहिये लेकिन एक दूसरे से मिलती जुलती रही है। नतीजा उसका यह हुआ कि जो कठोरता व्यवहार में दूसरी जगह दीख पडती है जमातो के बीच, वह कट्टर-पन और कठोरता यहा इतनी नहीं है। तो यहा छूत अछूत का सवाल भी आप बहुत शीघ्रता से मिटा सकते है। मैने आप के देहातों में कई जगह पूछा कि हरिजनों के बारे में क्या स्थिति है तो लोग यही कहते हैं कि वो हरिजन हमारे ही है। उनके लिये अलग स्कूल चाहिये ऐसा कहीं भी नहीं सुना। यह हालत

हिंदुस्तान के दूसरे भागों में नहीं है। तो वह सारा लाभ आप को मिल सकता है।

सर्वोदय की ज्योति प्रकटाने का अच्छा मौका

मेरा कहना यह है कि आप लोग अपना दिल बड़ा बनाइये। आप समझिये कि आप को एक बड़ा भारी मौका मिला है। जब तक यह हैद्राबाद स्टेट आज के जैसा कायम है तब तक आप को यह एक मौका मिला है। हां मैं यह नहीं सुझाना चाहता कि यहां के भाषा वार विभाग उन उन भाषावाले प्रांत में न मिलें। यह सब मैं कहना नहीं चाहता। वह तो जैसा आप चाहेंगे वैसा कर सकते हैं। लेकिन जब तक यह स्टेट एक है तब तक एक बड़ी भारी चीज करने का आप को मौका मिला है इसका लाभ उठाइये। और यहां की सारी कौमें मिल कर सारी एक जमात है सब भाई भाई हैं यह आप सिद्ध करके बताइये यह आप लोगों से मेरी अर्ज है। तो कहा जायगा कि शिवरामपल्ली में जो सर्वोदय संमेलन हुआ वह सार्थक हुआ और सर्वोदय की ज्योति सारी दुनियां के सामने हैद्राबाद ने प्रकट की।

(द० हैद्राबाद)

६-४-५१

इकतीसवाँ दिन—

: ३५ :

ग्राम संजीवनी

[आज शाम को छः बजे सर्वोदय समेलन की ओर से जो प्रदर्शनी रखी गई उसका उद्घाटन पू विनोबाजी के द्वारा हुआ। उद्घाटन का भाषण और प्रार्थना प्रवचन एक साथ ही हुए।]

मेरी तेलगु का उपयोग

मेरे अत्यत प्रिय भाइयो और बहनो,

पैदल यात्रा का यह मेरा आखिर का दिन है। हैद्राबाद से यहाँ तक का एक छोटासा पाच मील का प्रवास आज हुआ। रास्ते में परमेश्वर की कृपा से सब तरह से कुशल रहा और बहुत ही लुभावने अनुभव आये। देहात के लोगों में उत्साह देखा। शहरों में भी उत्साह कम नहीं था। लेकिन देहात में एक विशेष ही भावना देखी जिससे हमारा वहा पहुचना कितना जरूरी था और है इसका प्रत्यक्ष अनुभव आया। रोज हम वैसे ज्यादा तो नहीं चलते थे, लेकिन कोशिश यह होती थी कि छोटे छोटे गांव में मुकाम करें। कई छोटे गाव देखने में आये। जहा बन सका वहां गांव के घरों में भी घूम आया। और यद्यपि मैं तेलगु तो जानता

हूं तथापि तेलुगु मे बात तो नहीं कर सकता। फिर भी जितना कुछ ज्ञान था उसका प्रेमभाव बढाने में बहुत उपयोग हुआ। मैंने इन भाषाओं का अभ्यास प्रेमभाव के विकास की दृष्टि से शुरू किया था। प्रार्थना में मैं स्थितप्रज्ञ के लक्षण तेलगु में बोलता था। मैंने देखा कि वे लक्षण उनके हृदय तक सीधे पहुंच जाते थे; और उनको महसूस होता था कि, अपना ही एक भाई बोल रहा है। बहुत प्रेम से लोगों ने हमारा स्वागत किया।

गांवों में कताई का काम

गांवों की जो हालत हम ने देखी वह जैसी हम कल्पना करते थे वैसी ही थी; इतना ही नहीं बल्कि उससे भी बदतर थी। इतनी कल्पना हम घर बैठे नहीं कर सकते थे। सिवाय खेती के, जो एक ही धंधा उनके हाथ में रहा है, और कोई धंधा कई देहातों में नहीं देखा। कुछ देहात ऐसे जरूर थे कि जहां दूसरे दो-चार धंधे चलते थे। लेकिन कुछ ऐसे भी देहात देखे जहां वे भी छोटे छोटे धंधे मौजूद नहीं हैं। कुछ स्त्रियां कातती थीं, कुछ पुरुष भी कातनेवाले देखे। और अपने सूत का कपड़ा पहननेवाले भी कुछ देखे। इस पर से यह जाहिर है कि यह एक धंधा ऐसा था, और है, जो हर हालत में देहात में चल सकता है। लेकिन अभी इस मुल्क में आमद रफ्त के साधन बहुत नहीं हैं और सड़कें बन रही हैं। लेकिन जैसे जैसे ये साधन बढ़ेंगे, बाहर का माल गांवों में जोरों से आयेगा। आज भी काफी तादाद में आता है, और यह थोड़ा

-सा बचा हुआ काम है वह भी नष्ट हो सकता है । यह सारा दृश्य हमने देखा ।

हरेक के नाम पर एक देहात चाहिये

कई देहात ऐसे मिले कि अगर हमे यहां शिवरामपल्ली में आने की आवश्यकता न होती तो वहीं चंद रोज रह जाने की इच्छा थी। क्योंकि एक जगह देखना, वहां की कमियां महसूस करना, उनका हल हम कर सकते हैं ऐसा विश्वास करना और फिर भी उस स्थान को छोड करके आगे बढना, यह अच्छा नहीं लगता था। फिर भी वह करना पड़ा। जहां जहां हो सका वहां लोगों मे स्थानिक ही काम करनेवाले निकले ऐसी कोशिश भी की। अनुभव का सार यही है कि हम जो अकसर शहरों में काम करते है और शहरों से सबंध रखते हैं वे अपना शहर का संबंध कायम रख कर भी अगर निवासस्थान अपना देहात करें और हममें से हरेक के नाम पर अगर एक देहात रहा तो बहुत भारी काम होगा।

गावों की पुकार

बहुत बार सोचता हूं तो लगता है कि यह क्यों नहीं हो सकता कि जो भी काम हम करते हैं, फिर चाहे कोई कॉंग्रेस कमेटी का ऑफिस ही चलाता हो, तो वह किसी देहात में क्यों न खोले? जहां पोस्ट ऑफिस आदि की कुछ सुविधा हो ऐसे देहात में वह बैठ सकता है। और अगर हममें से कोई शहर के नजदीक ही रहना चाहते हैं तो वे शहर के नजदीक का गांव लेकर बैठ सकते

है। वहा निवास करने से ही कुछ न कुछ सबध आयेगा। और देहात मे जाना चाहिये यह जो पुकार उठाई थी उसको कुछ अश मे हम पूरी कर सकते है। देहात के लोग बहुत आशा रखते हैं कि गाधीजी के पीछे उनके सेवकगण कुछ न कुछ काम करेंगे, उनकी सेवा मे लग जायेंगे। दूसरे बहुत सारे लोग कुछ सेवा करते भी हैं, फिर भी वह नाम मात्र की होती है, स्फूर्तिदायी नहीं होती, और निष्काम तो होती ही नहीं है। इस वक्त आवश्यकता है निष्काम सेवा की। याने ऐसी सेवा की, कि जिसके पीछे कोई दूसरा उद्देश्य न हो सिवाय इसके कि जिनकी हम सेवा करते है उनकी सेवा करके उनको हिमत देना, मदद पहुचाना। आज कल जो सेवा की जाती है वह अपने मनोवाछित कार्य के खयाल से ही की जाती है, और वह भी बहुत कम। देहात के पीछे देहात देखे गये जहा बहुत लोग पहुचे भी नहीं है। वहा अगर कोई सभा हुई तो इलेक्शन की हुई, और कोई सभा नहीं हुई। जहा ज्ञान का प्रचार केवल शून्य है, जहा किसी तरह की रोशनी नहीं पहुची है, जहा स्कूल भी नहीं है, जहा बच्चो के विकास का कोई विचार नहीं है ऐसे अनेक गाव देखे। हमको वे सारे गाव के लोग बुला रहे है और कह रहे हैं कि भाइयो, स्वराज्य मिल गया है। जिनके नाम से और जिनके काम के लिये आपने स्वराज्य हासिल किया उनकी सेवा के लिये फुरसत पाइये और आइये। ऐसी पुकार हो रही है।

खादी पर श्रद्धा बढी

ग्वास करके इस हैद्राबाद स्टेट मे जो देखा उसने खादी के प्रति मेरी श्रद्धा और भी दृढ बनाई । और बहुत लोगों का यह जो ख्याल होता था कि यद्यपि खादी की आवश्यकता आज भी कम तो नहीं है फिर भी कोई दूसरे पहलुओं पर जोर देना आज शायद अधिक जरूरी हो गया है और खादी का काम सभव है आगे न भी चले, यह ख्याल मैंने गलत पाया। वहा लोगो को पूछा, जो साथ आये थे उनसे भी पूछा, कि क्या इन देहातों को सिवाय खद्दर के कोई एसा जरिया है जिससे उनको कोई राहत पहुचा सकते हैं, इमदाद दे सकते हैं, ढाढस बधा सकते है ? मैंने तो कोई जरिया नहीं पाया। जाहिर बात है कि जो चीज हर मनुष्य इस्तेमाल करता है और चौबीस घटे इस्तेमाल करता है, और चाहे फाका भी कर ले लेकिन बिना कपडे के नहीं चला सकता क्योंकि वह सभ्यता की निशानी समझी गयी है ऐसी जो चीज और जिसका कच्चा माल गावों में पडा है वह धधा गाव का रिझर्व धधा होना चाहिये। वह वहां से छीना गया है और दूसरे भी कई धधे जिनके लिये कच्चा माल गांवों में पडा है, उनके हाथ से छीन लिये गये है और छीने जा रहे हैं। उस हालत में सिवा ग्रामोद्योगों के और उसमें भी सिवा खादी के और कौन सा उद्योग हम उनको दे सकते हैं, कौन सा ऐसा जरिया है जिससे उनको राहत पहुचा सकते हैं। इस पर बहुत सोचा। लेकिन गावों को मदद करने का इससे विशेष

उत्तम साधन नहीं देखा। हां, सफाई का काम है। मनुष्य का मेला व्यर्थ जा रहा है उसका उपयोग करने की योजना बना सकते हैं, और भी कुछ काम कर सकते है। लेकिन उन सब कामों को करते हुए भी उनको खादी के काम से जितनी राहत हम पहुंचा सकते हैं उतनी और किसी काम से नहीं पहुंचा सकते। यह बात बिलकुल स्वयंसिद्ध सी मुझे लगी और मैं मानता हूं कि हम में से जो भी गांवों में पहुंचेगा उसको वैसी ही लगेगी।

खादी के बगैर चारा नहीं

लेकिन केवल इस दर्शन से काम होने वाला नहीं है। अपने मन में यह संकल्प कर लीजिये कि यह जो खादी का मंत्र है वह हम हिंदुस्तान के हरेक किसान के पास पहुंचायेंगे और इस विषय में हार नहीं खायेंगे। ऐसी शंका नहीं करेंगे कि दूसरे बहुत सारे काम पड़े हैं तो इसका ही आग्रह क्यों। अगर ऐसी शंका होती है तो इन गावों का दर्शन करें और दुबारा सोच करके अपना निर्णय करें। मै मानता हूं कि इसके सिवाय कोई साधन मिलनेवाला नहीं है। मैंने सोशलिस्टों से भी बात की है जब कभी वे मुझे मिले, दूसरे जवानों से भी बात की। और पूछ लिया कि जमीन की तकसीम, जो कि जरूर करनी चाहिये, कर लो तिस पर भी क्या आप समझते हैं कि इन किसानों की हालत उतने से सुधर जायगी और उतने से उनको सालभर का काम मिल जायगा और उसमें से उनकी जीवन की जरूरियातें पूरी हो सकेंगी? क्या

आप यह समझते हैं कि खद्दर आदि के बगैर कोई यांत्रिक योजना दस पांच साल में ऐसी हो सकेगी जिससे लाखों करोड़ों को काम दिया जा सकेगा ? तो उसका उत्तर उनको नहीं में देना पड़ता है। उनको मानना पड़ता है कि और कोई मदद हम नहीं देखते हैं, लेकिन वे कहते हैं कि इसका अर्थ यह होता है कि सरकार को हम अपने हाथ में लें और अपना समाजवाद का और दूसरा प्रोग्राम चलायें। तो हिंदुस्तान की अभी की हालत को देखते हुए जो प्रत्यक्ष काम हम कर सकते हैं उसे करने से वे इन्कार करते हैं और दस पंद्रह साल के बाद कुछ बात होगी उसकी आशा में अपना जीवन निष्क्रिय बनानें जैसी बात हो जाती है।

दूसरी योजना भी बनायें

इसलिये आप सब लोगों से मेरी प्रार्थना है कि गांधीजी ने जो खद्दर का मंत्र हमें दिया है वह अभी की परिस्थिति में कमजोर नहीं हुआ है बल्कि बलवान हुआ है। पहले जब कि मिलें १७ गज कपडा पैदा करती थीं वह तब आज १२ गज पैदा करेंगी। और जाहिर कर रही हैं कि इस साल आधा गज और पैदावार कम होगी क्योंकि काफी हड़तालें हो चुकी हैं। तो मिलों पर आधार रखने के लिये कोई सबब नहीं है। और गांधीजी के जाने के बाद कोई ऐसी दूसरी परिस्थिति पैदा नहीं हुई है जिससे खादी को अलग करके भी हम अपनी समस्या हल कर सकें। अगर किसी के मन में कोई योजना है, और बिना खद्दर के हमारा काम

निभ जायगा ऐसा किसी को लगा है तो मै उसके साथ चर्चा करना चाहूगा और कोई दलीले उसके पास है, कोई सबूत है तो मैं जानना चाहूगा। लेकिन ऐसा अगर सबूत मिलता नहीं है तो हम सब लोग खादी के काम मे अपनी निष्ठा ताजी करें, दृढ करें और खादी का शास्त्र जितना परिपूर्ण बना सकते है उतना बनाने में अपना सहयोग दे। इतना कह कर मै जाहिर करता हू कि यह प्रदर्शन अब खुल गया है।

शिवरामपल्ली (है०)
७।४।५१

पैदल-यात्रा का इतिवृत्त

विनोबाजीने ८ तारीख को सुबह प्रार्थना करके ठीक ४॥। बजे परधाम आश्रम से बिदा ली और हैद्राबाद के सर्वोदय समेलन मे शामिल होने के लिये पैदल-यात्रा शुरू की ।

परधाम आश्रम से विनोबाजी, महादेवीताई, मदालसाबाई, और दामोदरदास मूदडा तथा गोपुरी से भाऊ पानसे, दत्तोबा और पाडुरग गाडीवाला, इस तरह कुल सात लोगो की टुकडी रवाना हुई । बैलगाडी में टुकडी का सारा सामान रख लिया । यह गाडी हैद्राबाद तक साथ रही । आगे चल कर व्यवस्था आदि करने के लिये दो सायकले भी साथ थीं ।

वर्धा के श्री लक्ष्मीनारायण मदिर में विनोबाजी ठीक ६ बजे पहुचे । नारायण भगवान का दर्शन करना और वर्धा निवासियों तथा वर्धा की सस्थावालों से बिदा लेना यह छोटा सा कार्यक्रम रखा गया था । विनोबाजी मूर्ति के सामने खडे हो गये और ऊचे स्वर से श्री शकराचार्य का "अच्युत केशव रामनारायण" यह विष्णुस्तोत्र गाने लगे । अत में गद्‌गद् हो कर भगवान को नमन किया और आशीर्वाद के लिये मनोमय प्रार्थना की । यह दृश्य देखकर कइयों को वह दिन याद आया जब श्री जमनालालजी ने यह मदिर हरिजन आदि सब के दर्शन के लिये खोल दिया था । विनोबाजी उस दिन

भगवान विष्णु के चरणोंपर दृष्टि लगाये भावावस्था मे लीन हो गये और उनकी आखों से प्रेमाश्रु की अजस्र धार बहने लगी। निर्गुण-सगुण एक हो गये। आधा घटा ठहर कर विनोबाजी ने अपनी यात्रा शुरू की।

तारीख ८ से २३ तक की उनकी यात्रा का वृत्त नीचे दिया गया है।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गाँव	जिला	कितने मील चले
(१)	८ मार्च	वायगाँव	वर्धा	१३
(२)	९	रालेगाँव	यवतमाल	१७
(३)	१०	सखी-कृष्णपुर	,,	१४
(४)	११	रुझा	,,	१०
(५)	१२	पाढरकवडा	,,	१२
(६)	१३	पाटण बोरी	,,	११
(७)	१४	आदिलाबाद	निजामस्टेट, आदिलाबाद	१६
*(८)	१५	कौसल्यापुर	आदिलाबाद	१३
*(९)	१६	माडवी	,,	११
*(१०)	१७	तलमडगु	,,	१५
(११)	१८	गुडीहतनूर	,,	११
(१२)	१९	इच्छोडा	,,	८
(१३)	२०	निरडगोंडी	,,	११

(१४)	२१	गोपाल पेठ	आदिलाबाद	१२
(१५)	२२	निर्मल	,,	५
(१६)	२३	सुवर्णपुर	,,	८

[1]चिन्हांकित गाँव हैद्राबाद के रास्ते पर नहीं थे। लेकिन मांडवी के कस्तूरबा ग्राम सेविका केंद्रवालों के आग्रह के कारण करीब ४२ मील का प्रवास अधिक हो गया।

विशेष बातें

वायगाँव के पहले मुकाम पर ही विनोबाजी ने गाँववालों से बात छेड़ी कि मजदूरों को हर रोज की मजदूरी में पैसे के अलावा कुछ अनाज निश्चित प्रमाण मे देना चाहिये। सालदारों को ऐसा दिया जाता है। कुछ चर्चा के बाद गाँववालों ने विनोबाजी की बात मान ली। विनोबाजी ने दस छटाक ज्वार का प्रमाण स्त्री-पुरुष सब मजदूरों को एकसा ही रखने का सुझाव रखा। ऊपर से जो पैसे देंगे उसमें कमी बेशी कर सकते हैं लेकिन ज्वार हमेशा के लिये दस छटाक देनी चाहिये। गाँववालों ने ज्वार देने का प्रस्ताव किया और शाम की प्रार्थना के बाद लोगों को वह सुनाया भी गया।

रालेगाँव पहुचने के पहले पोटी गाँव में हम लोगों ने वर्धा नदी पार की, और साथ ही वर्धा जिला। नदी में पानी बहुत ही कम था। रालेगाँव से हम यवतमाल जिले में दाखिल हो गये।

रालेगाँव में विनोबाजी ने यही बात दोहराई। वहां तीन

लोगों ने दस्तखत कर के वचन दिया कि वे मजदूरी मे दस छटाक ज्वार देंगे ।

सखी-कृष्णपुर जगल मे बसे हुये गाँव है । सखी और कृष्णपुर अड़ोस-पडोस मे है । विनोबाजी का मुकाम सखी गाँव मे रखा गया था । इस जगह पर पहुँचते समय जंगल में रास्ता भूलने के कारण कुछ घूम कर हम लोग पहुंचे । चार साढे चार मील तक बीच मे कोई आदमी भी नहीं मिलता था । पथरीला और ऊंचा नीचा रास्ता था । लेकिन जब गाँव मे पहुचे तो श्रमपरिहार हो गया । बीस-पचीस घास के झोंपडे थे । लेकिन आम्र-वृक्षों की घनी छाया के नीचे तबू में हमारा पडाव रहा इसलिये चित्त प्रसन्न हो गया । गांव के लोगो ने बडे प्रेम से खिलाया-पिलाया ।

ग्राम की प्रार्थना मे बहने अधिक से अधिक आयें इस दृष्टि मे मदालसाबाई हर घर मे गई और बहनो को प्रार्थना सभा मे ले आई । आसपास के गावो से भी काफी लोग गाड़ियाँ ले कर पहुंच गये थे । इतना छोटा और जंगल के बस्ती का गाव होते हुए भी यहा की सभा अच्छी हुई । बहनें कुछ देर से पहुची । इसलिये उनके लिये विनोबाजी ने ५-१० मिनिट खास दिये ।

मेटी खेड़ा के श्री आनंदराव सरोदे नाम के भाई सभा मे आये थे । परंधाम के कांचनमुक्ति के प्रयोग के बारे मे उन्होंने सवाल पूछा । बाद में विनोबाजी से उनका निकट परिचय भी हुआ । विनोबाजी ने इनका नाम सर्वोदय ही रख दिया । ये भाई आगे रुंझा में भी मिले ।

'दैनिक प्रार्थना' की दो पैसेवाली किताबें लोग बहुत खरीदते हैं। विनोबाजी का साहित्य भी साथ रखा गया है। हर मुकाम पर प्रार्थना के पहले और बाद में साहित्य की बिक्री होती है।

वर्धा से वायगांव पक्का रास्ता था। वायगांव से आगे रुझा के पास मोहदा गाव तक कच्चे रास्ते से ही मुसाफिरी हुई। मोहदा से आगे पाढरकवडे तक पक्की सडक थी। पांढरकवडे से फिर कच्चा रास्ता लिया। यवतमाल जिला पैनगगा के किनारे पर समाप्त हो जाता है। पाटणबोरी से तीन मील की दूरी पर पैनगगा मिली। इस नदी मे भी पानी बहुत कम था। नदी पार करने पर निजाम स्टेट शुरू हो गई। कामई नाम के गाव से फिर पक्की सडक मिली जो आदिलाबाद और उसके बाद हैद्राबाद तक है।

पाढरकवडा गॉव न देहात और न शहर ऐसा अधूरा सा ही है। यहा की प्रार्थना मे बच्चों ने असस्कारिता का ही परिचय दिया। अशाति खूब रही। आपस में मारना-धकेलना भी चलता रहा। विनोबाजी का करीब आधा घटा बच्चों को समझाने में ही गया। इससे प्रार्थना सभा के लिये जो वातावरण चाहिये था वह नहीं रहा। विनोबाजी ५-१० मिनिट ही बोले। शहरों के बच्चों में मामूली सभ्यता भी दिखाई नहीं देती इसके लिये शालाओं के सचालकों को भी उन्होने दोष दिया। सस्कारिता की दृष्टि से देहात और शहर का भेद साफ नजर आता था।

पाढरकवड़ा में गंगाबिसनजी, राधाकृष्णजी, अनसूया, शांताबाई रानीवाला और ईश्वरभाई रांका आ मिले थे। यवतमाल के डॉक्टर मोरे भी आये। दिल्ली से हिंदुस्तान टाइम्स के संवाददाता श्री कल्हण भी आ पहुंचे। वे दस दिन साथ रह कर निर्मल से वापिस गये। गंगाबिसनजी, राधाकृष्णजी और अनसूया आदिलाबाद तक साथ रहे। शांताबाई रानीवाला मांडवी तक साथ रहीं और वहां से डॉ० मोरे के साथ वापिस वर्धा आ गईं। ईश्वरभाई हैद्राबाद तक साथ रहे।

विनोबाजी तीन बातों पर खास ध्यान देते हैं : सुबह पांच बजे कूच करना, रात को नौ बजे सो जाना और दोपहर में ११ बजे भोजन करना। ये तीन बातें नियमित रहें तो बाकी का कार्यक्रम अपने आप नियमित बनता है ऐसा वे कहते रहते हैं। सुबह ५ बजे कूच करने का तो बिल्कुल नियमित चलता रहा है। रात को नौ बजे सोने की बात ५-७ रोज के बाद होने लगी। रात को गाड़ी में सारा सामान भर कर तैयार रखना पड़ता था। सुबह सिर्फ बिस्तरे बांध कर गाड़ी में रखना शेष रहता था। दोपहर का खाना ११ और १२ के बीच अकसर हो जाता था।

अब यात्रा का सारा कार्यक्रम घड़ी के मुआफिक व्यवस्थित बन गया। सुबह पांच से दस तक मुसाफिरी का समय रखा था जिसमें नास्ते आदि के लिये एक डेढ़ घंटा रखा था। लेकिन अब मुकाम पर पहुंच कर ही नास्ता करने का रखा जिससे एक रफ्तार में ही धूप के पहले आठ साढ़े आठ बजे के अन्दर मंजिल

तय हो जाती है। शाम की प्रार्थना सभा का निश्चित समय नहीं है। छः बजे प्रार्थना हो ऐसी विनोबाजी की इच्छा रही। कुछ रोज वैसा चला भी। लेकिन आदिलाबाद के बाद देखा गया कि आस-पास के देहात से काफी भाई-बहनें सभा और दर्शन के लिये आ जाती हैं। उनको अपने गाँव जल्दी वापिस जाने की सुविधा हो इस दृष्टि से विनोबाजी चार बजे या कभी कभी तीन बजे भी सभा कर लेते है।

आदिलाबाद जिले मे और खास करके निर्मल तहसील में गगारेड्डी नाम के कार्यकर्ता ने देहातों में घूम कर काफी प्रचार किया दिखाई दिया। हर गाँव के प्रवेशद्वार पर बहनें आरतियाँ लेकर हाजिर रहती थीं और देहाती बाजे भी रहते थे। निर्मल तहसील के देहातो मे चरखे काफी चलते हैं। निरडगोंडी में पहली बार पचीस-तीस चरखे सिर पर ले कर बहने सूत कातने के लिये विनोबाजी के डेरे पर पहुँच गईं।

गोपालपेठ में तो हद हो गई। सारा गाँव पानी छिड़क कर साफ किया गया था। रंगोली भी आंगन में खींची गई थी। सड़क की दोनों बाजू आम के पत्तों की पताकाएं लगी थीं। आरतियाँ और बाजे तो थे ही। विनोबाजी की ठहरने की जगह बहुत ही कलामय और मार्मिक थी। इमली के पेड़ के नीचे बड़ और मोह के वृक्षों की डालियों का भव्य मंडप तैयार किया था। कहीं कील या रस्सी का नाम नहीं था। पाखाना, नहाने की जगह, रसोई घर

और विश्राम घर सभी पल्लवों के बने थे। ग्यारह बजे पास के चिचोली गाँव से पचास बहनें सिर पर चरखे ले कर गाने बजाने के साथ आ पहुँचीं। गोपालपेठ के पचास-साठ चरखे थे ही। कुल सौ से ऊपर चरखे जमा हो गये। और सारी बहनें कातने लगीं। इतने चरखे थे लेकिन एक चरखे की भी कर्णकटु आवाज नहीं आती थी। टूटन का तो नाम ही नहीं था। चरखे खडे थे और लकडी की धुरा के थे, सिर्फ तकुआ लोहे का था। चमरख मकई के भुट्टो के पत्तो का और तकुवे की घिरीं अरहर के सूखे पेड की। प्रार्थना सभा के बाद सारी बहनो ने अपना कता सूत विनोबाजी को अर्पण किया। करीब साठ गुडिया थीं। वह सूत वहीं चिचोली गाव में बुनने के लिए दे दिया। हैद्राबाद समेलन मे कपडा तैयार होकर आ जायगा।

ता० २३ को गोदावरी के तट पर पहुच गये। गोदावरी के किनारे सुवर्णपुर—जिसे आज सोन कहते हैं—गाव क्षेत्र माना जाता है। सुवर्ण नदी व गोदावरी का यहा सगम है।

इस के बाद 'गोदावर्या दक्षिणे तीरे'' हो कर निजामाबाद जिले में प्रवेश किया।

सोन (सुवर्णपुर) में विनोबाजी ने एक घटे की पाठशाला चलाने की बात कही थी। उसके अनुसार दो ब्राह्मण पडितों ने जिम्मा लियाँ। अब पता चला है कि ८ लडकिया और १३ लडके सुबह एक घटा और शामको एक घटा बडे उत्साह से पढने के लिये

आते हैं। और वे पंडित बारी बारी से उनको पढ़ाते हैं। ईशोपनिषद् के मराठी श्लोक "दैनिक प्रार्थना" पुस्तिका में से बच्चे कंठ कर लेते हैं।

सोन के आगे निम्न प्रकार प्रवास हुआ।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गाँव	जिला	कितने मील चले
(१७)	२४	बाल्कोंडा	निजामाबाद	११
(१८)	२५	आरमूर	"	१०
(१९)	२६	निजामाबाद	"	१७
(२०)	२७	डिचपल्ली	"	१०
२१)	२८	कलवरल	"	११
(२२)	२९	कामारेड्डी	"	११

निजामाबाद और आरमूर में सायंप्रार्थना के बाद स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा का अच्छा कार्यक्रम हुआ।

बाल्कोंडा में मेटपल्ली के चरखा संघ के आठ-दस कार्यकर्ता पैदल आ कर विनोबाजी से मिले। आरमूर तक वे विनोबाजी के साथ रहे। और वहां से २२ मील फिर पैदल चल कर वापिस गये।

हैदराबाद स्टेट के चंद बड़े शहरों में निजामाबाद एक बड़ा शहर है। यहां तेलुगु में प्रवचनों का अनुवाद नहीं करना पड़ा

और श्रोतागण भी मध्यम श्रेणी के थे। इसलिए विनोबाजी का यह प्रवचन काफी विस्तार से हुआ।

कामारेड्डी से हैद्राबाद केवल ७२ मील है।

इस तरफ के देहातों में खास बात यह देखी गई कि सभा में करीब आधी संख्या स्त्रियों की होती है। और सब भाषण बड़ी शांति से सुनती हैं।

विनोबाजी का साहित्य हिंदी-मराठी में अच्छी मात्रा में बिकता गया। इस बिक्री की खास बात यह है कि केवल किसी विक्रेता या प्रचारक के पास पुस्तकें नहीं जातीं बल्कि हरेक पढ़नेवाले के पास वे पहुँच जाती हैं।

पाठकों से सीधा संपर्क स्थापित होता है इस दृष्टि से यह बिक्री विशेष महत्त्व रखती है। हर गांव में कितनी और कौनसी किताबें दी गईं इसकी तालिका रखी गई है।

कामारेड्डी पहुंचने के एक रोज पहले कलवरल में रात को काफी बारिश और आंधी आयी। विनोबाजी का बिस्तरा कुछ भीग गया। कामारेड्डी पहुंचने तक खास असर दिखाई नहीं दिया। लेकिन बाद में सर्दी और हलका बुखार हो गया।

कामारेड्डी से अगला मुकाम १७ मील का था। लेकिन विनोबाजी की तबीयत देखते हुए दस मील पर मुकाम करने का

सब लोगों ने उनसे काफी आग्रह किया। विनोबाजी अपने निश्चित कार्यक्रम पर अटल रहे और बोले "जो अपना वचन पालन करता है उसको भगवान बल देता है।" आखिर उस रोज १७ मील की सफर पूरी करके ही रहे।

रामायम पेठ पहुंचने पर साथियोंने आगे के कार्यक्रम में कुछ हेर फेर किये। बारह मील के बदले आठ आठ मील के फासले पर मुकाम कर लिये। बदला हुआ कार्यक्रम निम्न प्रकार रहा।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गाँव	जिला	कितने मील चले
(२४)	३१	वडियारम	मेदक	९
(२५)	१	तुपरान	,,	८
(२६)	२	कोचारम	,,	८
(२७)	३	मेडचल	हैद्राबाद	८
(२८)	४	बोलारम	,,	७
(२९)	५	सिकंदराबाद	हैद्राबाद	७
(३०)	६	हैद्राबाद	,,	५
(३१)	७	शिवरामपल्ली	,,	५

कामारेड्डी से रामायम पेठ के रास्ते पर बिकनूर नाम के गाँव में नाश्ते के लिये ठहरे। उस गाव में नारायण रेड्डी नाम के अच्छे कार्यकर्ता हैं। वे कलवराल से विनोबाजी के साथ रहे। उनके

घर पर विनोबाजी ३० तारीख को ठहरें ऐसी उनकी इच्छा थी। लेकिन नियत कार्यक्रम में फरक करना विनोबाजी को पसंद नहीं है। गांव वालों को चंद शब्द कह कर विनोबाजी रामायम पेठ के लिये चल पड़े।

बडियारम में क्रिस्ती लोगों द्वारा चलाई हुई एक पाठशाला में विनोबाजी का मुकाम था। यहा की जगह अच्छी है। तेलगु में वहां के पाद्री ने गद्य प्रार्थना कही। अपने भाषण में सब धर्मों के रहस्य के विषय पर विनोबाजी बोले। आज बुखार के कारण प्रार्थना साथियों ने चलाई।

तूपरान कुछ बड़ा गांव है। वहा दोपहर में कार्यकर्ताओं की एक सभा हुई। गाव में भजन मडली है और हर शुक्रवार को वे भजन करते हैं। यह सुनकर विनोबाजी को खुशी हुई। गाव की समिति रहे तो भजन के साथ उस समिति का काम अच्छा चलेगा यह बात गांव वालों को विनोबाजी ने समझायी।

तूपरान से कोचारम नाम के एक छोटे गांव में मुकाम रहा। हरेक घर आम की पत्तियों से सजाया गया था। घर के सामने पानी छिड़का हुआ था और रंगोली भी थी। गांव काफी साफ था। गोपालपेठ की याद हो रही थी। गांव की रचना भी अच्छी है। घरों की कतारें हैं, सड़कें हैं और ड्रेनेज भी है। हरिजन मोहल्ले में सभा रखी गयी थी। आज भी विनोबाजी को बुखार अधिक था। सभा स्थान कुछ दूर था फिर भी वे चलते हुए

वहां आये और खुद ही प्रार्थना चलाई और रोज की तरह भाषण भी दिया।

कोचाग्म में सुबह हैद्राबाद से जमियत उल उलेमा के अध्यक्ष तथा सेक्रेटरी विनोबाजी से मिलने आये थे। हैद्राबाद राज्य की आज की हालत और खास करके उस्मानाबाद जिले की हालत के बारेमें उन्होंने विनोबाजी को कुछ बातें बताई।

३ तारीख को मेडचल का मुकाम था। यहां पर हैद्राबाद राज्य के पुराने कर्मचारी मंजूर यार जग विनोबाजी से मिलने आये थे। उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। फिर भी वे आये और बहुत ही सरलता से और सच्चे दिल से हिंदू मुसलमान के प्रश्न पर अपने विचार उन्होंने प्रकट किये।

यहां भी दोपहर में कुछ कार्यकर्ता आये थे। उनके साथ एक एक घटा वार्तालाप हुआ।

हैद्राबाद से शहर कॉंग्रेस कमिटी के मंत्री, ग्यान कुमारी हेडा और अन्य कार्यकर्ता मेडचल आये थे। पवनार के बाबूरावजी देशमुख अपने कुटुंब के साथ हैद्राबाद से यहां आये। वे शिवरामपल्ली तक विनोबाजी के साथ पैदल चलेंगे।

आज से विनोबाजी की तबीयत में आराम हुआ। बुखार चला गया दीखता है।

४ ता० को बोलारम पहुंचे। यहां पर बिहार के श्री. पारस-नाथ नाम के व्यक्ति प्राकृतिक चिकित्सालय चला रहे हैं। उनके आग्रह के कारण ही यहां का मुकाम हुआ।

यहां की कार्यकर्ताओं की सभा बहुत ही अच्छी रही। ऐसी सभाओं में विनोबाजी अनेक विषयों पर अपने विचार कुछ खुलकर लोगों के सामने रखते हैं, जिससे दिलचस्प वार्तालाप होता है।

यहां से हैद्राबाद की हद ही लग गई। फासला यद्यपि १०-११ मील का है फिर भी शहर का वातावरण यहीं से शुरू हो जाता है।

सिकंदराबाद पहुंचने के पहले तिरमलगिरी में कुछ लोगोंने स्वागत किया। यहां से थोड़ी दूर पर खानापूर नाम का उजड़ा हुआ गाव बताने के लिये जमियत के कुछ कार्यकर्ता आये थे। वहा से सब मुसलमान भागकर दूसरी जगह चले गये हैं। मकानों की टूट फूट काफी दिखाई दी।

सिकंदराबाद से ता. ६ को सुबह विनोबाजी हैद्राबाद के लिये रवाना हुए। सिकंदराबाद से हमने अपनी बैलगाड़ी और बहुत सारा सामान सीधे शिवरामपल्ली भेज दिया। हैद्राबाद के हायकोर्ट के सामने एक बगीचे में विनोबाजी का मुकाम रहा। पडोस में मूसा नदी बहती है और बगल में सरकारी अस्पताल की खासी इमारत खड़ी है।

हैद्राबाद शहर में दो तीन जगह लोगों ने स्वागत किया। हरिजन छात्रालय में चार पांच मिनट विनोबा जी ठहरे। बाकी का स्वागत चलते चलते ही हो रहा था।

हैद्राबाद में दोपहर को ४ से ५ बजे तक कार्यकर्ताओं की सभा रखी थी। सोशलिस्ट आदि कई पक्षों के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। अनेक विषयों पर प्रश्नोत्तरी हुई जो काफी दिलचस्प और बोधप्रद रही।

प्रार्थना सभा के बाद प्रेस प्रतिनिधियों से करीब आधा घटा बातचीत रखी गई थी। स्वामी रामानद तीर्थ विनोबाजी से मिलने आये थे।

ता० ७ को सुबह सवा छ बजे विनोबाजी शिवरामपल्ली पहुच गये। इस तरह ठीक एक महीने में वर्धा से शिवरामपल्ली तक की मजिल विनोबाजी ने पूरी की। इस पैदल यात्रा में चार पाच रोज विनोबाजी को बुखार आया। बाकी सारी मुसाफिरी बहुत ही आराम से और स्वस्थता से हुई। विनोबाजी साथियों से कहते थे कि 'खासा बादशाही प्रवास चल रहा है।'

इस पैदल यात्रा में जो कुछ सृष्टि दर्शन और लोक-दर्शन हुआ उसके बारे में विनोबाजी के प्रवचनों में बीच बीच में जिक्र आया ही है।

शिवरामपल्ली में ११ तारीख तक विनोबाजी ठहरेंगे। उसके बाद का कार्यक्रम अभी तय नहीं हुआ है। लेकिन वर्धा ७ जून

तक पहुंचना है और पैदल चलते हुए ही जाना है इतनी बात त
है। कुछ रोज आराम करके आगे का प्रवास शुरू किया ज
ऐसा मित्रों का आग्रह है। लेकिन विनोबाजी हैद्राबाद राज
के उन जिलों में से हो कर जाना चाहते हैं जहां कम्युनिर
का जोर अधिक है। वह रास्ता कुछ दूर का है। इसलिये जल
निकलने की विनोबाजी की इच्छा है। १२ तारीख तक निकलने क
तिथि तथा यात्रा का रास्ता आदि बातों का निर्णय हो जायगा।

—दत्तोबा दास्ताने